दक्षिणेश्वर गाथा
महाकाव्य
Let the world wet by
the colour of my heart
By Manmohan

Dakshineshwar
Gatha

दक्षिणेश्वरगाथा

महाकाव्य

प्रकृति रहती अकेले सर्वदा,
अतः रहती अकेले प्रकृतिपरा ।
यही ज्ञान हृदयंगम करके,
संन्यासी रहते अकेले सदा ।।

कवि : मनमोहन

संरक्षिका :

श्रीमती रेखा

मीडिया प्रभारी :

श्री रोहित सिंह
श्रीमती वर्षा सिंह

बुक डिज़ाइनिंग :

कु. नेहा
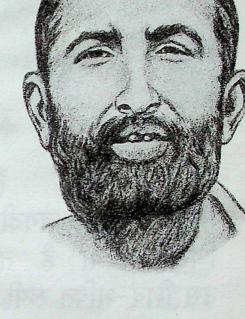
जनसम्पर्क प्रभारी :

श्री मधुकर
श्री मधुसूदन
श्री माधव

श्री राममूर्ति　　　　श्रीमती जोगमाया

सादर करता हूँ प्रणाम,
मातु, पिता, जगदीश्वर को ।
जिसने दिया है तन-मन को,
उस शिव-शक्ति रुपी ईश्वर को ।।

Dakshineshwar Gatha

अनुक्रमणिका

श्रद्धांजलि

सोमवार 25 अप्रैल 2005 ई०
दिन पवित्र है महाप्रयाण का ।
महापुरुषजी के प्रिय शिष्य,
स्वामी श्री रंगनाथजी का ।।

अर्पित भाव-भीनी श्रद्धांजलि,
भेंट करता रंगनाथजी को ।
समर्पित जग का नेह सारा,
भक्ति भाव से अर्पित उनको ।।

गाथा प्रकाशन से पूर्व,
लिया है उन्होंने महाप्रयाण ।
मार्ग-दर्शन चाहिए उनका,
गाथा में बसें उनके प्राण ।।

आसीस सुमन

तृणादपि सुनिचेन तरोरपि सहिष्णुना
अमानिना मानदेय कीर्तनीय सदा हरि ॥

श्री मनमोहन जी का जीवन उक्त
श्लोक को पूर्णतया अनुगमन करता
है। दक्षिणेश्वर गाथा का सम्पूर्ण पाठ
जीवन को सार्थक बनायेगा।

स्वामी अ. मृतानन्द पुरी

(स्वामी अमृतानन्द पुरी)
(संन्यासी एवं डाक्टर)
राजघाट फोर्ट, काशी (उ.प्र)

दासों के दासः मनमोहन

जन्मतिथिः 16/10/1957
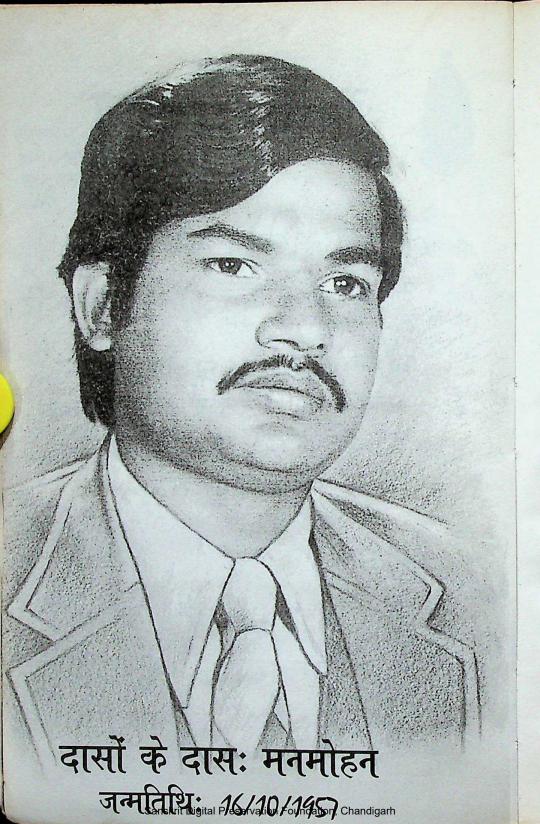
परिचय–पुष्प

कवितास्वरूप हैं माँ भगवती,
श्रीरामकृष्ण हैं उनके कवि ।
लिख रहे हैं दासों के दास,
पढ़ सुन भवपार हो रहे सभी।।

दासों के दास हैं मनमोहन,
सुत हैं वो राममूर्ति जी के।
जोगमाया हैं जननी उनकी,
मूल निवासी हैं काशी के।।

विश्वनाथ रहते हृदय में,
गंगा बहती है मन में ।
रहते वो लखनऊ नगर में,
पर मन अब भी है काशी में।।

काशी की मिट्टी से सना है,
बिहार का है इसमें पानी।
बंगाल का हृदय अपना,
इस चोले की यही कहानी।।

मातृभूमि का प्रेम बसा है,
मेरी काया की रग–रग में ।
गुरुकृपा से ढला है मन,
देशभक्ति बसी है तन–मन में।।

मधु

आदि कथा है दक्षिणेश्वर की,
गाथा है ये कालेश्वर की ।
कलियुग में अवतरित हुई है,
अर्चना है ये परमेश्वर की ।।

यही भाव मेरे मन में इस गाथा के प्रति है । मैं जानता हूँ कि इस गाथा को लिखने की योग्यता मुझमें नहीं है फिर भी श्रीरामकृष्णजी ने मेरे हृदय में बैठकर इस गाथा को मेरे माध्यम से लिखवाकर मुझे कृतार्थ किया है । इस गाथा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये साधारण बोलचाल की भाषा में है। एक अनपढ़ व्यक्ति भी इसे सुनकर इसके अर्थ को भली–भाँति समझ सकता है। यह गाथा ज्ञान और भक्ति, दोनों में सहायक है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि सहज ही इस गाथा के पठन–पाठन से प्राप्त हो सकते हैं। ये गाथा आत्मानुभूति से युक्त एवं आत्मज्ञान प्रदान करने में सक्षम है।

ये गाथा स्वयं अपने आप में कल्पतरु है। साकार अथवा निराकार, दोनों ही ईश्वर के स्वरूप हैं। निर्गुण एवं सगुण, दोनों प्रकार की उपासना में गाथा सक्षम और सहायक है। जाति–पाँति, देश–काल और धर्म से ऊपर उठकर ये गाथा मानवीय मूल्यों को महत्व देती है। देशप्रेम, माता–पिता का सम्मान, गुरुजनों के प्रति श्रद्धा और आदर की भावना, हर जीव के हित के प्रति जागरूकता, निःस्वार्थ सेवाभाव, सबके प्रति उदारता,निर्धन व्यक्तियों के प्रति करुणा, त्याग की भावना, सामान्य नागरिक शिष्टाचार का पालन, सत्य, अहिंसा आदि ज्ञान–भक्ति के ही अंग हैं और ईश्वर दर्शन में सहायक हैं।

गुरुदेव स्वामी विवेकानन्दजी ने कहा था कि ऐसा समय भी आयेगा जब समझ सकोगे कि एक चिलम–तम्बाकू सजाकर लोगों की सेवा करना भी कोटि–कोटि ध्यान की अपेक्षा बड़ा है। अपने हृदय को विशाल बनाओ, अपनी आँखों को खोलो और देखो अपने आसपास, तुम बहुत कुछ कर सकते हो, कहीं आने–जाने की आवश्यकता नहीं है। बुद्धि की सीमा है पर हृदय की कोई सीमा नहीं है। हृदय में सच्चिदानन्द का वास है। आत्मज्ञान हृदय में होता है। हृदय और बुद्धि को मिला दो, दोनों को ईश्वरी मार्ग पर लगा दो, फिर देखो, वर्तमान धर्म को पहचानो, वर्तमान केन्द्र {दक्षिणेश्वर} को पहचानो, इस गाथा को पहचानो, श्रीरामकृष्ण और श्रीविवेकानन्दजी को पहचानो, युगधर्म को

पहचानो।

ब्रह्म और उसकी शक्ति अभेद है जैसे अग्नि और उसकी दाहिका शक्ति, दूध और उसकी सफेदी, इन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। एक के बारे में सोचने से दूसरे के बारे में भी सोचना पड़ता है।

श्रीरामकृष्ण जिस काली की उपासना करते थे, वास्तव में वो एक ही आधार में ब्रह्म और उसकी शक्ति, दोनों ही हैं इसीलिये उन्हें भवतारिणी नाम से पुकारा जाता है। माँ भवतारिणी साकार और निराकार, दोनों ही हैं, वो सगुण भी हैं और निर्गुण भी, वो शिव और शक्ति दोनों ही हैं। वही काली रूप में इस गाथा की नायिका हैं तो महादेव के रूप में इस गाथा के नायक हैं। वास्तव में सब कुछ शिव और शक्ति का ही खेल है।

ब्रह्म की शक्ति की उपासना प्रायः हम माता {नारी} के रूप में करते हैं इसीलिए स्वामी विवेकानन्दजी ने नारी जाति को सम्मान और आदर का पात्र माना है और भारतीय नारी में क्या–क्या गुण होते हैं, इसको विस्तार से बताया है। इस गाथा को भारतीय नारी पर अभिमान है, गाथा उनका आदर और सम्मान करती है। जिस घर में, देश में, धर्म में, नारी का आदर और सम्मान नहीं होगा, वह धर्म,देश और घर स्वतः अधोगति को प्राप्त हो जायेगा। नारी का आदर और सम्मान धर्म है। नारी का अनादर और अपमान अधर्म है। यही गाथा का संदेश है।

कुछ जातियों में लोग शादी–ब्याह में कन्या के पक्ष वालों से दहेज में रुपया सामान आदि अधिकार से वसूल करते हैं और अपने को सुसंस्कृत और सभ्य समझते हैं। दहेज निश्चित रूप से नारी जाति का अपमान और धर्म के विरुद्ध है। गाथा दहेज का कड़ा विरोध करती है और दहेज लेने का निषेध करती है। यही गाथा का संदेश है। हमारा देश एक गरीब और निर्धन देश है क्योंकि यहाँ की अधिकांश प्रजा के पास धन की अत्यधिक कमी है। केवल कुछ लोगों के पास धन प्रचुर मात्रा में है। अतः हर व्यक्ति का यह धर्म है कि वह शादी–ब्याह अथवा अन्य संस्कारों हेतु आवश्यकता से अधिक धन खर्च करके दूसरों की जरूरतों और भावनाओं को ठेस न पहुँचाए। यही गाथा का संदेश है।

कोई भी महान कार्य, आंदोलन अथवा रचना का आविर्भाव शान्त मस्तिष्क के गर्भ से ही होता है और शान्ति त्याग से प्राप्त होती है। जहाँ शान्ति है, वहीं धर्म है। जिन्हें तुमसे कुछ नहीं चाहिए, उन्हीं से तुम्हें बहुत कुछ मिलेगा। जो लोग निजी स्वार्थ में ही सदैव लिप्त रहते हैं, उनका मन कभी शान्त नहीं हो सकता, उनसे कभी भी कोई महान कार्य नहीं हो सकता। ऐसे

लोग बहुत अधिक सम्पन्न होने पर भी असंतोष के दलदल में फँसे रहते हैं और भ्रष्टाचार में लिप्त होकर अपना, समाज का और अपने देश का बहुत अधिक नुक्सान करते हैं। जहाँ स्वार्थ है, वहीं अशान्ति है, वहीं अधर्म है, उनसे कभी कोई आशा नहीं है। तुलना और ईर्ष्या अशान्ति का मूल हैं। गर शान्ति चाहते हो तो इनसे दूर रहो।

मनुष्य का मन स्वाभाविक रूप से स्त्री और धन में फँसा रहता है। यदि भक्ति चाहते हो तो मन को स्त्री और धन के दलदल से निकालना होगा। ब्रह्मचर्य धारण करने पर ही सच्ची भक्ति का भान होता है।

श्री विवेकानन्दजी ने कहा था कि भक्ति तुम्हारे भीतर ही है,केवल उसके ऊपर काम–कांचन का एक आवरण पड़ा हुआ है, उसके दूर होते ही भक्ति स्वयमेव प्रकाशित हो उठेगी।

ज्ञान, भक्ति, योग और कर्म, इन चारों मार्गों से मुक्ति–लाभ होता है। जो जिस मार्ग के उपयुक्त हो, उसे उसी मार्ग से जाना होगा, किन्तु वर्तमान काल में कर्मयोग के ऊपर कुछ अधिक जोर देना होगा।

कर्म के दो अर्थ हैं– एक, जीव सेवा और दूसरा प्रचार। सच्चे प्रचार कार्य में अवश्य ही सिद्ध पुरुष के सिवाय, दूसरों को अधिकार नहीं है किन्तु सेवा कार्य में सभी को अधिकार है, अधिकार ही नहीं, सेवा करने के लिए सभी बाध्य भी हैं जब तक कि वे स्वयं की सेवा ले रहे हैं।

गुरु के आशीर्वाद से शिष्य बिना पढ़े भी पंडित हो जाता है। सवाल उठता है, गुरु किसको कहा जाए ?

श्री विवेकानन्दजी ने कहा था कि जो तुम्हारे अन्तर की पुंजीकृत संस्कार राशि को देख सकें और ये बतला सकें कि उसने भूतकाल में तुमको किस रूप में नियमित किया तथा भविष्यकाल में तुम्हें वह कहाँ ले जायेगी, अर्थात जो तुम्हारे भूत, भविष्य को बतला सकें, वे ही तुम्हारे गुरु हैं।

मैं स्वयं को परम भाग्यशाली समझता हूँ क्योंकि मुझे गुरु के लिए भटकना नहीं पड़ा। मैंने मन ही मन में श्रीस्वामी विवेकानन्दजी को अपना गुरु मान लिया और उनकी कृपा से मेरा जीवन सराबोर हो गया। उनके प्रति मेरे हृदय में निम्नांकित भाव हैं –

हे रामकृष्ण के अग्रदूत,
हो मेरे मन के राम तुम्हीं।
शिला–सा मैं पड़ा राह में,
फूँक दो इनमें प्राण तुम्हीं।।

तुम हो विवेक के आनन्द,
कुछ मेरा भी कल्याण करो।
हे कृपासिन्धु युगनायक तुम,
कुछ मेरा भी उत्थान करो।।

रिक्त है ये हृदय प्रेम से,
तुम इसमें प्रेम संचार करो।
अपने चरणों के रज से तुम,
इस माथे का श्रृंगार करो।।

श्रीरामकृष्णजी कहा करते थे, जिस प्रकार मदारी आठों गाँठों को एक झटके में खोल देता है, परन्तु अन्य लोगों के लिए एक–एक करके भी गाँठों को खोलना कठिन है, उसी प्रकार सच्चिदानन्द गुरु भी कृपा करके शिष्य की सभी गाँठों को एक झटके में खोल सकता है परन्तु ऐसे उदाहरण कम मिलते हैं।

जन–जन की प्यास बुझाने को,
परहित का पाठ पढ़ाने को।
बहती है सरिता धरती पर,
धरती को स्वर्ग बनाने को।।

ऐसी सरिता का जल दूषित करना कहाँ तक उचित है। नदियाँ उस ब्रह्म की शक्ति यानी महामाया का स्वरूप हैं। हम उन्हें माँ का दर्जा देते हैं। एक तरफ हम उनकी पूजा–अर्चना करते हैं, दूसरी तरफ उसमें कूड़ा–कचरा बहाते हैं। गाथा का हृदय नदियों के दूषित जल को देखकर चीत्कार करता है और प्रत्येक व्यक्ति से और इस प्रदेश और देश की सरकार से आशा करता है कि तत्क्षण सभी नाले व नालियाँ इन सभी नदियों से काट कर अलग कर दिये जायें। जो भी विकल्प हो, जो भी खर्च हो, परन्तु यह कार्य युद्धस्तर पर होना चाहिए। परिणाम चाहिए गाथा को, बहाना, दिखावा अथवा कारण नहीं। किसी भी बहाने, किसी भी कारण को यह गाथा माफ नहीं करेगी। नदियों को स्वच्छ रखना धर्म है, उन्हें प्रदूषित करना अधर्म।

महिमा दक्षिणेश्वर गाथा की,
मृतात्मा मुक्त हो जाती है।
पुनर्जन्म होता है उसका,
रामकृष्ण की शरण पाती है।।

गाथा जीवित लोगों के साथ ही साथ भटकने वाली मृतात्माओं को भी अभय प्रदान करती है। यदि श्रद्धापूर्वक सस्वर इस गाथा का पाठ किया जाये तो अभीष्ट मृतात्मा निश्चित रूप से पुनर्जन्म प्राप्त कर लेगी।

प्रकृति का एक नियम है 'जो बोओगे वही काटोगे'। यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा रहे तो सबके स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करो, शान्ति चाहते हो तो सबकी शान्ति के लिए प्रार्थना करो, अपना भलां चाहते हो तो सबके भले के लिए प्रार्थना करो। इससे तुम्हारे हृदय का छोटापन अथवा ओछापन समाप्त हो जायेगा। तुम दूसरे के सुख से भी सुखी हो जाओगे, अपना स्वार्थ गौण हो जायेगा। 'हर जीव में ईश्वर रहता है' का भाव जागृत होने लगेगा। ये लक्षण आत्मज्ञान प्राप्त होने के हैं। अगर हो सके तो दो–चार मुट्ठी अन्न प्रतिदिन चिड़ियों को खिलाओ। कोशिश करो दो–चार–छः निर्धन व असहाय बच्चों अथवा लोगों को जो कुछ तुमसे बन पड़े, उन्हें खिलाओ और अपने मन में सोचो कि तुम दरिद्रों के रूप में उनमें बसे दरिद्रनारायण की सेवा कर रहे हो, तुम तो अकर्ता हो, कर्ता तो सबमें बसे नारायण हैं, वही खाने वाले हैं, वही खिलाने वाले हैं। ये आत्मज्ञान के लक्षण हैं और आत्मज्ञान प्राप्त होने में सहायक हैं। यही वर्तमान धर्म है, यही युग धर्म है और यही गाथा का धर्म है।

आमंत्रित करता हूँ जग को,
आहुति देने हवन कुंड में।
लिखी है दक्षिणेश्वर गाथा,
प्रसार हेतु सारे भुवन में।।

सुना है जब समुद्र पर श्रीराम सेतु का निर्माण हो रहा था तो एक गिलहरी अपनी क्षमता के अनुसार उसमें बालू डाल कर राम काज में सहायक बन संतुष्ट हो गयी थी। मेरा भी कार्य और प्रयास कुछ ऐसा ही है और इस महान शुभ ईश्वरी कार्य हेतु मैं आप सबका भी आवाहन करता हूँ।

लखनऊ : आशीर्वाद सहित आप सभी का

दिनांक : 16. 07. 2005

(मनमोहन)

आभार–कलिका

जीवन की गहरी राहों में,
चिन्तन की ऊँची चाहों में ।
साथ मिला जिनका जग में,
चमकती धूप और छाँव में ।।

प्रिये आभारी हूँ तुम्हारा,
क्या कहूँ इस मुख से अपने ।
सात जनम का साथ है अपना,
बस, ये अन्तिम जनम हो अपने ।।

धन्यवाद है उन सभी का,
जिन–जिन का सहयोग मिला ।
बन्धु, बान्धव, मित्र समेत,
जिन–जिन का कुछ योग मिला।।

यूँ तो मित्र हैं अपने सभी,
पर नाम दो ही हैं जुबान पर ।
विजयदीप सिंह–अजय कुमार,
साथ रहे हैं हर मुकाम पर ।।

संभव नहीं है नाम सभी का,
लिख जाए कागद के टुकड़े पर ।
अंकित हैं जो नाम ह्रदय पर,
दिख जाए कागद के मुखड़े पर ।।

आभार व्यक्त करता हूँ मैं,
गाथा के सहयोगियों का ।
आसीश माँगता ठाकुर से,
उनके समुचित अवदानों का ।।

श्रीमती ऋतु (1.07.1978ई० –9.08.2004 ई०) पत्नी **श्री श्रीष**
राजाजी पुरम्, लखनऊ

मुस्कुराती किरण–सी छवि,
दिल को तड़पाती है अभी ।
छलक रहे हैं क्यों नयन,
अब जब तुम नहीं हो कहीं ।।

अनुनय करके श्रीरामकृष्ण,
ऋतु को अपनी शरण में लें।
पाप–पुण्य से मुक्त कर उसको,
अपने शिष्य मंडली में लें ।।

2. श्रीमती जूही, श्री योगेन्द्रनाथ चौधरी, श्रीमती दीपा, डॉ० सुमित, श्रीमती बिब्बो, श्री संदीप एवं कुमारी पिंकी,
508, के. एल. कीडगंज, इलाहाबाद
3. श्रीमती शीला एवं सतीश चन्द्र वर्मा, अमित एवं रोहित
सिविल लाइंस, इलाहाबाद
4. श्रीमती अनुपमा एवं श्री अनूप श्रीवास्तव, रैश्री, गोरखपुर (उ०प्र०)
5. श्रीमती मालती देवी, श्री पारसनाथ लाल श्रीवास्तव, नवीन चन्द्र, गिरीश चन्द्र, दिनेश चन्द्र, श्री रमेश चन्द्र, राजू, अंशू, डॉली, मोहित एवं गोलू आदि
नई आबादी, शाहगंज, जिला जौनपुर
6. श्री विवेक व श्रीमती मीरा, 67, ममफोर्डगंज, इलाहाबाद
7. **श्री कृष्णमोहन** व **श्रीमती मीरा, श्री ब्रजमोहन** व **श्रीमती मंजू, श्री रविमोहन** व **श्रीमती उर्मिला** कु० जया, युक्ति, चाँदनी, एकता, छोटू व भोले, 109/129, मॉडल हाउस, लखनऊ

8. धीरज कुमार, प्रिंस (शशांक), गौरव कुमार, श्री अजय कुमार, श्री गोपाल कुमार, श्री संजय श्रीवास्तव एवं आनन्द कुमार
ए–13 / 14, प्रह्लाद घाट, काशी
9. श्री अजय कुमार, 116, बेलदारी लेन, लखनऊ
10. श्री कृष्ण कुमार, 512 / 206, निशात गंज, लखनऊ
11. श्री मानसिंह, नि० ग्राम व पो० सिंधरवा, मलिहाबाद, लखनऊ
12. श्री विनोद कुमार, अजय कुमार, अनिल कुमार, विनय कुमार, डॉ० अनीता श्रीवास्तव एवं कु० खुशबू, 320 ए, मधवापुर, इलाहाबाद
13. श्री जे० बी० श्रीवास्तव, श्रीमती माधुरी, श्रीमती गरिमा, कु० अनुराधा व मास्टर हर्षित, अलीगंज, लखनऊ
14. मित्रगण– मुन्ना ठाकुर, नरेन्द्र शर्मा, सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव, रमेश डिंगरा (लखनऊ) एवं सुरेन्द्र नाथ मिश्रा उर्फ बाक्सर, तुलारामबाग, इलाहाबाद
15. श्री प्रमोद श्रीवास्तव, नाटी इमली, वाराणसी

अन्य सहयोगी

श्री मुकेश मित्तल (पी.सी.एस.), ममफोर्डगंज, इलाहाबाद श्री राजेन्द्र पाण्डेय (राजेन्द्र नगर), श्री बैजनाथ कक्कड़ (कैन्ट रोड), श्री सुनील माथुर व श्री विजयवीर सहाय (मॉडल हाउस), श्री कपिल सिन्हा, (सेक्टर–4, विकास नगर), श्री सुरेन्द्रनाथ श्रीवास्तव (डालीबाग), लखनऊ

जो अब नहीं है ।

1. स्व० राधा चरण श्रीवास्तव (एस० टी० ओ०) व स्व० कृष्णा चरण श्रीवास्तव, हुसैनगंज, लखनऊ
2. स्व० हरीश चन्द्र लाल श्रीवास्तव उर्फ लाल साहब, सी, राजाजीपुरम्, लखनऊ

श्रीगुरु विग्रह स्मरण

नील सरोरुह चाप समाना,
मन–उर रंजन नयन कमाना।
प्रियदर्शी मंजुल अभिरामा,
भव–भंगिम गुरुनयन सुजाना।।

उन्नत भाल अरु वक्ष विशाला,
ता पर केश है घुँघराला ।
कद–काठी ऊँची अभिरामा,
आजानुबाहु दयानिधाना ।।

गुरुमूरत अंजन अभिरामा,
सावन–भावन नयनाभिरामा।
सोचत भर आवत उरधामा,
बरसत–फरकत आठोंयामा ।।

महादेव सो लागत रामा,
मूरत–सूरत कुल अभिरामा।
मुदो–खुलो सो नयन विशाला,
राम–राम गुरु जपतो माला।।

सदाचारी शरणागतरक्षक,
सप्तर्षि अवतार सदानन्द ।
परम पूजनीय ऋषि सनातन ,
पुरुष पुरातन विवेकानन्द ।।

श्रीसरस्वती वन्दना
श्रीगणेश वन्दना

मंगलम् पुष्पवृन्द

युग-नायक
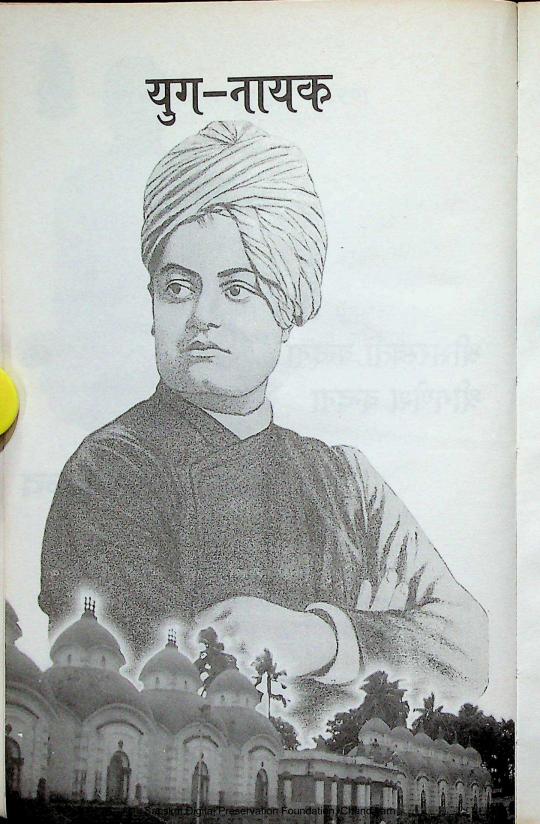
श्रीसरस्वती–वन्दना

मातु शारदे दया प्रसार,
अन्तर जीव मन को कीजिये ।
सर्वव्यापी मन–आँचल है,
मातु भक्ति रस रंग दीजिये ।।

मातु शारदे दृष्टि कृपा,
छाया–काया पर कीजिये ।
मायारूपी काया रग–रग,
मातु प्रेमरस भर दीजिये ।।

मातु शारदे रंग अनन्त,
मातु भेंट कृपाफल कीजिये ।
कविता प्रवाहरूपी सरिता,
मातु सरिता रंग दीजिये ।।

मातु शारदे प्रेम विश्वास,
उर आनन्द समाहित रहिए ।
आजीवन अकाल मृत्युभय,
उर काम वासना त्याजिये ।।

खोल द्वार उर अंतःपुर के,
प्रवेश मातु उर कीजिये ।
जीवन मुक्ति ज्ञान प्रदीप,
आत्मप्रकाशित कर दीजिये ।।

श्रीगणेश–वन्दना

वर दीजिए विनायक मुझको,
सदा ही सहायक होने की ।
लिखी है दक्षिणेश्वरगाथा,
उसके निर्विघ्न होने की ।।

हर लीजिए प्रभु विघ्नसारे,
राह तक रहे जो गाथा के ।
कृपा कीजिए गणपतिबप्पा,
बन सखा–सहायकगाथा के ।।

शिवजी के दो मानस सुत हैं,
कार्तिकेय और श्रीगणेश ।
उमा की आँखों के तारे हैं,
षडानन और गजबदन गणेश।।

तीनों लोकों में हैं पूजित,
कार्तिकेय और श्रीगणेश ।
विघ्नविनाशक मंगलकारक,
अशुभनिकंदन, गणपतिनरेश ।।

करता प्रणाम बारम्बार,
विघ्न, बाधा, अशुभनिकंदन को।
विघ्नरहित हो जाए गाथा,
यही वर दें विनायक मुझको।।

आसीस-याचना

प्रथम पुष्प

Dakshineshwar Gatha
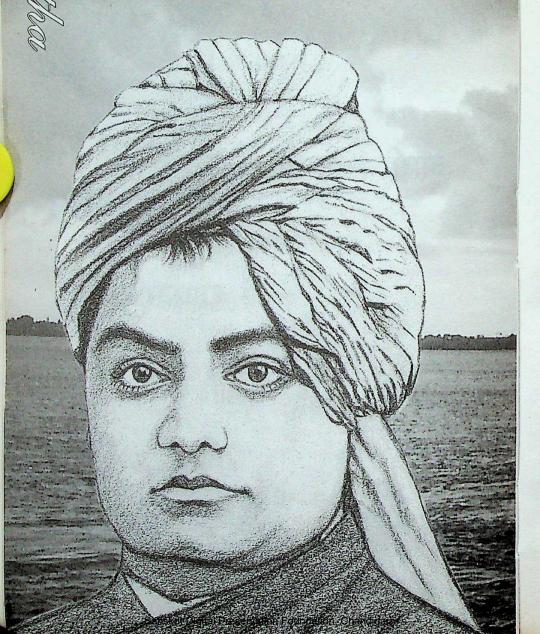
आसीस-याचना (प्रथम पुष्प)

सर्वप्रथम करता वन्दना,
प्रिय प्रियतम गुरुदेव की ।
जिनकी कृपा से रचित है,
दिव्यगाथा दक्षिणेश्वर की।।

समर्पित करता हूँ आपको,
दिव्यगाथा दक्षिणेश्वर की ।
स्वीकार कीजिये गुरुदेव,
विनती पर अपने सेवक की ।।

याचना करता आसीस की,
याचना पूर्ण कर दीजिये ।
अमर हो दक्षिणेश्वर गाथा,
गुरुदेव तथास्तु कह दीजिये।।

बैठ हृदय में प्रेरित करते,
श्रीरामकृष्ण सब जीवों के ।
जिसने जैसे कर्म किये हैं,
तदनुसार उनके उन कर्मों के।।

महिमा अनन्त है ठाकुर की,
कहाँ तक कोई जान पाये ।
गीत कविता छन्द आदि में,
उनके गुणों को बाँध पाये।।

धर्म ,अर्थ काम , मोक्ष आदि,
जो चाहे फल माँग लीजिये ।
कल्पतरु हैं चरण ठाकुर के,
जो चाहे वर माँग लीजिये ।।

पितामह ठाकुर के चरणों में,
साष्टांग करता हूँ प्रणाम ।
दें आशीर्वाद वो गाथा को,
सारगर्भित हो पाये सम्मान।।

आसीस चाहिए गाथा पर,
श्रीगुरुमाता की कृपा का।
वीणावादिनी हैं सारदे,
सारदा की असीम कृपा का।।

पितामह के भी गुरुदेवों का,
आसीस चाहिए इस गाथा पर।
फल आए पहले फिर खिले फूल,
बेलरूपी इस पुनीत गाथा पर।।

गुरुवर के भी गुरु–भाइयों का,
आसीस चाहिए गाथा पर ।
दिग–दिगान्तर में यशस्वी हो,
कभी आँच न आये गाथा पर ।।

मानस रचयिता तुलसी को,
कोटि–कोटि करता प्रणाम ।
हृदय विजेता हुलसीसुत को,
प्रेम–भक्ति से है सम्मान ।।

चाहता आशीर्वाद उनसे,
दूज के चन्दा होने का ।
दिन दूनी तो रात चौगनी,
इस गाथा के यश होने का ।।

सौभाग्य प्राप्त है चक्षुओं को,
नारायण स्वामी के दर्शन का ।
श्रीरामभक्त हनुमान की भाँति,
श्रीरामभक्त वीर नारायण का ।।

दें आसीस वो गाथा को,
श्रीराम की अनुकम्पा का ।
लक्ष्मण ,भरत ,शत्रुघन समेत ,
जानकी माँ की कृपा का ।।

संत कबीर की संतता,
अंधविश्वास की अंतता ।
हिन्दू–मुस्लिम की एकता,
मगहर–समाधि की विशेषता ।।

संत कबीर को इस गाथा का,
प्रणाम है सहस्त्रों बार ।
हिन्दू–मुस्लिम का हो आपस में,
भाई–भाई जैसा व्यवहार ।।

भेष बदलकर इस दुनिया में,
आए हैं एक अद्‌भुत फकीर ।
हिन्दुओं के हैं वो देवता,
मुसलमानों के भी हैं वो पीर ।।

शिरडीं में ही वो रहे सदा,
सब भक्तों का कल्याण किया ।
हिन्दुओं और मुसलमानों का,
उन्होंने एक साथ उद्धार किया ।

जला दिये थे पानी से,
दीपक शिरडीं के साँईं ने ।
बदल दिया था अविश्वास को,
आत्मविश्वास से साँईं ने ।।

दूरी से ही दिख जाती है,
हरियाली उस नीम वृक्ष की ।
जलते हुए दीपक निकले थे,
खुदाई में जिस दिव्यस्थल की ।।

जल रही है वो पावन धूनी,
आज भी मस्जिद के कोने में ।
जिसे जलाकर गये थे साँई,
खुद जन कल्याण हेतु मस्जिद में।।

पैर पर पैर रख कर वो साँई,
बैठा करते थे जिस पत्थर पर ।
द्वारिका माई मस्जिद के भीतर,
रखा है आज भी वही पत्थर ।।

नत मस्तक उनके त्याग से,
हतप्रभ है ये जग आपसे ।
दें आशीर्वाद वो गाथा को,
फूले–फले ये अपने आप से ।।

बार–बार करता प्रणाम,
सूरसागर के उस सूर को ।
आशीर्वाद चाहिये उनका,
गागर में भरने सागर को ।।

दर्शन पाये हैं सप्तर्षि के,
दिव्य चक्षुओं ने ध्यान में।
बीत गये हैं वर्षों फिर भी,
लगता है अभी वर्तमान में ।।

शुभ्र प्रकाश फैल रहा था,
बहुत घना था जंगल वहाँ ।
बहती दिखती थी सुरसरिता,
कुछ ऋषि विचर रहे थे जहाँ ।।

मन आश्चर्य में डूब गया,
देख सम्मुख उन ऋषियों को ।
प्रश्नवाचक अन्तर्मन हुआ,
पा सम्मुख अद्‌भुत ऋषियों को ।।

अन्तरात्मा में गूँज उठी,
अन्तर–हृदय की अन्तरवाणी ।
अन्तर–अन्तर में संतुष्ट हुआ,
सुन सप्तर्षि ये दिव्यवाणी ।।

आसीस चाहिये गाथा को,
सप्तर्षि की महती कृपा का ।
आत्मानुभूति तक जा पहुँचे,
आत्मज्ञान इस गाथा का ।।

चलते फिरते जो महादेव,
त्रैलंग स्वामी को प्रणाम ।
दें आशीर्वाद वो गाथा को,
पावनी हो सुरसरिता समान ।।

गा रहे है गीत नरेन्द्र,
रामप्रसाद रचित भक्ति का ।
सुन कर भाव–विभोर हो रहे,
गीत श्रीरामकृष्ण शक्ति का ।।

रे मन, कहते राम प्रसाद,
चल काली कल्पतरु के नीचे ।
चारों फल मिल जायेंगे आप,
तुझको उस महातरु के नीचे ।।

प्रसाद चाहिये गाथा को,
श्रीरामप्रसाद से भक्ति का ।
संगीतमय हो जाए गाथा,
पा प्रसाद उनकी कृपा का ।।

ज्ञान नगरी है ये काशी,
यहाँ कितनों को ज्ञान मिला ।
तुलसी, कबीर आदि न जाने,
कितनों को ही सम्मान मिला ।।

शंकर भी अपवाद नहीं हैं,
उनको भी यहीं ज्ञान मिला ।
महाशक्ति क्या होती है,
उस महाशक्ति का ज्ञान मिला ।।

दशाश्वमेध के घाट से,
देखा एक अद्‌भुत व्यापार ।
था विश्वनाथ मंदिर के ऊपर,
माँ महाकाली का विस्तार ।।

विश्वनाथ की इस नगरी में,
तुलसी की भी है एक लंका ।
संकटमोचन रहते यहाँ,
इसमें नहीं है कोई शंका ।।

हरि और हर का अद्‌भुत मेल,
संगम है गंगा–वरुणा का ।
अद्‌भुत ऋषियों का वास यहाँ,
संग है कलियुग–सतयुग का ।।

स्वामी अमृतानन्द का,
अमृत देखा है आँखों से ।
कैसा हो आचरण साधु का
दिखता है उनके भावों से ।।

जीवों की सेवा में अर्पण,
तन मन धन रहता है उनका ।
मरीजों की सेवा से जुड़ा,
डाक्टरी है पेशा उनका ।।

काशी के ऊँचे गंगा तट पर,
राजघाट के उस फोर्ट में ।
जंगल जैसे उपवन के बीच,
रहते हैं वो अद्‌भुत घर में ।।

उनकी सौम्य आकृति से,
मंत्र–मुग्ध हैं सब नर–नारी ।
उनकी सेवा–सुश्रूषा भाव से,
लाभान्वित हैं काशीवासी ।।

करता प्रणाम जग उनको,
आशा रखकर आसीस की ।
दें आशीर्वाद वो गाथा को,
जीवों की सेवा–सुश्रूषा की ।।

दुर्भाग्य से इन नैनों को,
दर्शन नहीं हो सके प्राप्त ।
अब तो छोड़ दिया है तन भी,
मदर टेरेसा ने खुद आप ।।

दीन दुखियों की सेवा से,
स्थान बनाया है जग में ।
जन्म हुआ विदेश में उनका,
पर कर्मभूमि है भारत में ।।

दरिद्र–नारायण की सेवा से,
सर्वोच्च धर्म निभाया उन्होंने ।
नर ही नारायण होता है का,
वैदिक–पथ अपनाया उन्होंने ।।

दंडवत् करता उनको प्रणाम,
आशीर्वाद हेतु इस गाथा पर ।
हर जीव में ईश्वर रहता है,
कुछ यही भाव जगाने गाथा पर।।

प्रेमरस चाहिए इस गाथा को,
रसखानजी से प्रेम–भक्ति का ।
राधा से कृष्ण के मिलन का,
कृष्ण से राधा के विरह का ।।

कमी नहीं है इस युग में भी,
परमहंस और ज्ञानियों की ।
कौन नहीं जानता है जग में,
कीर्ति देवरहा बाबा की ।।

महाकुंभ में ऋषि देवरहा,
गंगा स्नान को आते थे ।
देव सरिता पावन तट पर,
मचान में डेरा जमाते थे ।।

झूँसी के उसी गंगा तट पर,
दो बार कुंभ के मेले में ।
दर्शन पाये हैं नयनों ने,
महर्षि देवरहा बाबा के ।।

चाहता आशीर्वाद उनसे,
गंगा–जमुना के संगम की ।
हर वर्ष माघ के मेले में,
गाथा गाई जाए गंगा की ।।

कोटि–कोटि संत हुए हैं पैदा,
भारतमाता की भूमि पर ।
आशीर्वाद चाहिए संतों का,
इस परम पुनीत गाथा पर ।।

काशी के संत कीनाराम को,
काशीवासी का है प्रणाम ।
भगवान दत्रात्रेय के शिष्य से,
इस गाथा को चाहिए ईनाम ।।

विश्वनाथ की नगरी में भी,
जानी जाये ठाकुर गाथा ।
श्रद्धा ,प्रेम और भक्ति भाव से,
पूजी जाये ठाकुर गाथा ।।

महावतार बाबा के शिष्य,
लाहिड़ी महाशय को प्रणाम ।
युक्तेश्वर गिरि के गुरु को,
काशीवासी का है प्रणाम ।।

दें आशीर्वाद इस गाथा को,
सब महापुरुष महावतार ।
भक्तिमय हो जाये गाथा,
ज्ञान का हो इसमें आधार ।।

सिखों के सभी गुरुदेवों को,
रामकृष्ण महान बताते थे ।
गुरुनानक से गोविन्द सिंह तक,
सबको जनक अवतार बताते थे ।।

सनातन धर्म की रक्षा हेतु,
स्वधर्म निभाया उन्होंने ।
चाँदनी चौक तिराहे पर,
स्वबलि चढ़ाया था जिन्होंने ।।

सीस काटकर अपना जिसने,
खुद चढ़ा दिया था सरेआम ।
सिखों के उन्हीं गुरुदेव को,
इस गाथा का शत–शत सम्मान ।।

उनके धर्म और त्याग पर,
इस राष्ट्र का है स्वाभिमान ।
तेगबहादुर के त्याग पर,,
इस गाथा को है अभिमान ।।

माथा टेक रहा है ये जग,
उस महापुरुष की समाधि पर ।
भाव–प्रभाव में रह–बह कर,
सीसगंज गुरुद्वारा साहिब पर ।।

वरदान चाहिए गाथा को,
तेग बहादुर की दृढ़ता का ।
हिन्दू धर्म की रक्षा हेतु,
बलिदान की पराकाष्ठा का ।।

देखते ही किया प्रणाम,
उनको माँ काली कहकर ।
खड़ी हो गईं माँ उठकर,
एक हाथ कमर पर रखकर ।।

तीक्ष्ण नजरों से उन्होंने,
मुड़कर देखा इक कागद को ।
जल उठा वो अग्नि–लपटों में,
पर नहीं हुआ परिवर्तित वो ।।

गूँज उठी माँ धूमावती की,
तब ये गंभीर अभयवाणी ।
अग्नि भी नहीं जला सकती,
मेरे पुत्र को ओ वरदानी ।।

वरदान चाहिए गाथा को,
धूमावती से निर्भयता का ।
परिस्थिति चाहे जैसी भी हो,
सदा एक सा बने रहने का ।।

वाराणसी के कोतवाल,
कालभैरव जी को प्रणाम ।
रक्षा सहित आसीस चाहिए,
गाथा का हो विश्व में नाम ।।

जो अमरनाथ के अमरदेव,
उन गौरीशंकर को प्रणाम ।
विश्वेश्वर काशीनाथ को,
दासों के दास का है प्रणाम ।।

स्वीकार करें हे महादेव,
इस आदि कथा दक्षिणेश्वर को ।
आशीर्वादित करें आशुतोष,
कुछ मानस तुल्य इस गाथा को ।।

सारे जग में पूजी जाये,
आदि गाथा दक्षिणेश्वर की ।
घर–घर में ये गायी जाये,
भक्ति गाथा दक्षिणेश्वर की ।।

महाभारत के सूत्रधार,
मधुसूदन को है प्रणाम ।
अर्जुन सारथी केशव का,
करता ये सेवक सम्मान ।।

आसीस चाहिए गाथा को,
द्वापर के महानायक का ।
नवयुग में विजय दिलाने का,
विश्व में झंडा फहराने का ।।

मीरा के गुरु रविदास को,
करता प्रणाम बारम्बार ।
संतों के संत रविदास को,
करता प्रणाम शत–शत बार ।।

कौन नहीं जानता है जग में,
मीरा–राधा हैं एक समान ।
कौन नहीं मानता है जग में,
मुरलीधर कृष्ण को भगवान ।।

आसीस चाहिए गाथा को,
मीरा के गुरु संत रविदास का ।
गेय हो जाए ठाकुर गाथा,
वरदान चाहिए इस आशय का।।

दर्शन प्राप्त हैं नयनों को,
आसाराम बापूजी के ।
दिव्यवाणी सुनी है उनकी,
गदगद हृदय के कोने से ।।

करता प्रणाम बापू को,
आशा रखकर आसीस की ।
दें आसीस वो गाथा को,
भक्ति में सहायक होने की ।।

श्रीमातु कृपा के मापदंड,
मार्कण्डेय ऋषि को प्रणाम ।
सप्तशती रचयिता महामुनि को,
दासों के दास का है प्रणाम ।।

कृपा कीजिए हे महात्रृषि,
दिव्य दक्षिणेश्वर गाथा पर ।
आशीर्वाद चाहिए महामुनि,
आपका माता की गाथा पर ।।

फूले–फले माता की गाथा,
देश–विदेश और स्वदेश में ।
भक्तों के मन भाये गाथा,
ज्ञानियों के समाये हृदय में ।।

देखा था पायलट बाबा को,
जार में समाधि लगाये हुए ।
चौबीस घंटे बीत गये थे,
फिर भी थे ध्यान लगाये हुए ।।

दें आसीस वो गाथा को,
ध्यान की एकाग्रता का ।
प्रेम की पराकाष्ठा का,
ज्ञान–भक्ति की तीव्रता का ।।

धन्य हुए चक्षु पाकर दर्शन,
हरदोई रोड के बाबा का ।
सर्वस्व त्यागी थे बाबा,
लेते न थे कुछ भी किसी का ।।

घिरे रहते थे वो कुत्तों से,
जाड़ा, गर्मी और बरसात में ।
कुछ भी खा–पी लेते थे वो,
पड़े रहते थे सुनसान में ।।

तत्वज्ञानी थे वो परमहंस,
गीता–वर्णन के सदृश्य ।
कृष्णभक्त थे वो बाबा,
कृष्ण में ही हो गये अदृश्य ।।

चाहता पाना आशीर्वाद,
उन बाबा से इस गाथा पर ।
त्याग, तपस्या, तत्वज्ञान का,
रंग चढ़ जाये गाथा पर ।।

सफल कीजिए जन्म का कारण,
श्रीरामभक्त वीर हनुमान ।
अमर हो जाए ठाकुरगाथा,
दीजिए बस एक यही वरदान ।।

मद्रासी बाबा को देखा,
गोंडा के भरे बाजार में ।
दौड़ा रहे थे बच्चों को,
लेकर बैंगन वो हाथ में ।।

दस–बीस कुर्ते झूल रहे थे,
बाबा की कृश काया पर ।
मुख पर थी उनके मृदुल हँसी,
तत्वज्ञान उनकी छाया पर ।।

आसीस चाहिए गाथा को,
बाबा की अद्भुत मस्ती का ।
तत्वज्ञान की उस छाया का,
ईश्वर की अद्भुत माया का ।।

पार्वती महाराज थे शिष्य,
महापुरुष शिवानन्द जी के ।
पक्षपूर्ण आसीस दिया था,
हमको खूब सुखी रहने के ।।

फिर वही आशीर्वाद चाहिए,
हमको उनसे इस गाथा पर ।
श्रीरामकृष्ण के भक्तों पर,
इस गाथा के पाठकगणों पर ।।

काशी के अवधूत राम को,
बारम्बार करता प्रणाम ।
कीनाराम के प्रिय शिष्य को,
अन्तर–हृदय से है सम्मान ।।

काशी में दर्शन पाये हैं,
इन नयनों ने उनके अभिराम ।
दें आशीर्वाद वो गाथा को,
काशी में हो इसका सम्मान ।।

साधु–संत, अधम, असुर–निशाचर,
सबमें है ईश्वर एक समान ।
भाँति–भाँति के जीव जगत में,
सबकी स्तुति गाथा का गान ।।

अनुकूल हो जाएं गाथा के,
वन्दना करता मैं ग्रहों की ।
कभी न आए समय प्रतिकूल,
अर्चना करता नवग्रहों की ।।

शनि देवता को है प्रणाम,
इस आशा से इस गाथा का ।
पाठकगण अगनित गाथा के,
हर गण पर कृपा करने का ।।
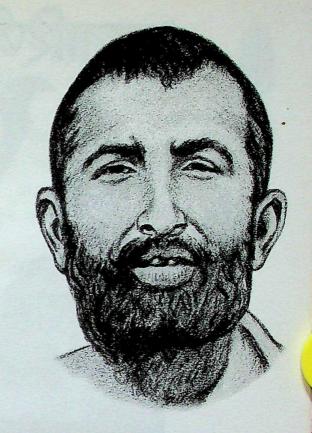
अरुणोदय

द्वितीय पुष्प

भवतारिणी
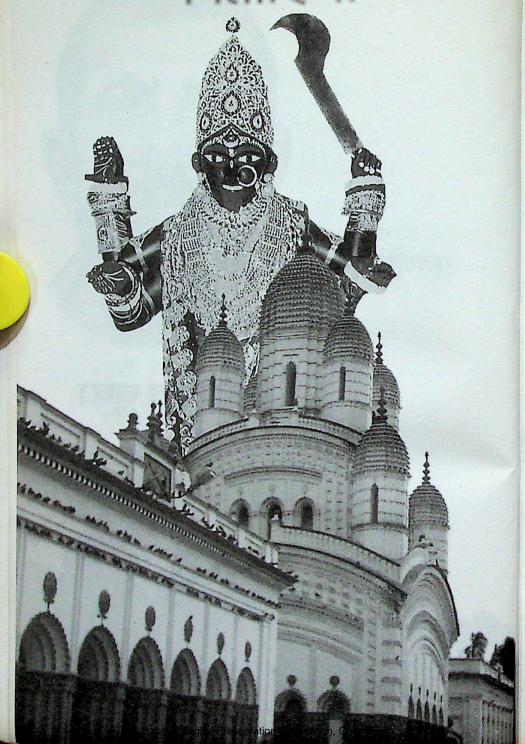
अरुणोदय (द्वितीय पुष्प)

गंगा की धारा समान ही,
ये दक्षिणेश्वर की गाथा है।
मन को पवित्र करने वाली,
ये शिव–काली गुण गाथा है ।।

काशी–विश्वनाथ दर्शन की,
रानी रासमणि ने मानी थी ।
इसीलिए गंगा–मार्ग से,
काशी जाने की ठानी थी ।।

ना जाने कब आँख लगी,
ना जाने कब स्वप्न हुआ ।
रानी रासमणी को माँ का,
स्वप्न में ये आदेश हुआ ।।

यहीं बनाओ आलय मेरा,
इससे जीवन सफल होगा ।
काशी न जाकर भी तुमको,
काशी जाने का फल होगा ।।

जाग गयी रानी रासमणी,
चारों दिशाओं में देखा ।
अँधेरे में आँखों को,
बार–बार मल कर देखा ।।

दक्षिणेश्वर का गंगातट,
सूना पड़ा निहार रहा ।
मां के आदेश पालन हेतु,
जैसे उन्हें पुकार रहा ।।

लौट आई रानी रासमणी,
उसी आदेश के फलस्वरूप ।
बनवाया फिर माँ का आलय,
उसी आदेश के अनुनयरूप ।।

गंगा के पूर्वीतट पर,
आलय है खप्परवाली का ।
तीनों लोकों में विख्यात,
महालय है छप्परवाली का ।।

शक्तिपीठों में सर्वश्रेष्ठ,
है ये दक्षिणेश्वर का भीठ ।
जिसे माँ ने स्वयं चुना है,
वही तो है ये माँ का पीठ ।।

कच्छपपीठ समान ही तो,
ये प्राचीन श्मशान है ।
दक्षिणेश्वर के नाम से,
जग में प्रसिद्ध ये मसान है ।।

तीरथराज से भी बढ़कर,
ये चामुण्डे का ग्राम है ।
श्रीरामकृष्ण रहे हैं यहाँ,
ये उनका विशिष्ट धाम है ।।

कृपामयी हैं माँ काली,
रासमणि को याद किया ।
धन्य है रानी रासमणि,
जिसने माँ का काज किया ।।

जय माँ अम्बे जय माँ काली,
शरणागत माँ शरण तिहारी ।
शंकर शिव गुरुदेव पुरारी,
शरणागत शिव शरण बिहारी ।।

उत्तर में इस आलय के,
सिंहद्वार है एक मिसाल ।
जिसके भीतर जाने से,
मिलता है आंगन विशाल ।।

अस्त–दिशा में इस आंगन के,
द्वादश शिवलिंग आलय है ।
ज्योतिर्लिंगों के समान ही,
ये द्वादश लिंग शिवालय है ।।

बहती गंगा अस्त दिशा में,
उत्तर से दक्षिण की ओर ।
बने हुये हैं शिव आलय भी,
उत्तर से दक्षिण की छोर ।।

नित्य चढ़ाते थे पुष्प ठाकुर,
उस द्वादश लिंग शिवालय में ।
छूटा कर्म जब पाया दर्शन,
ब्रह्माण्ड का उस महालय में ।।

उदय दिशा में इस आंगन के,
राधाकान्त का आलय है ।
जगमोहन – जगमोहिनी का,
जगप्रसिद्ध ये महालय है ।।

जय गोविन्द, जय गोविन्द,
यहाँ बैठकर जपने से ।
जय राधे माँ जय राधे,
यहाँ बैठकर रटने से ।।

राधा–बिहारी का दर्शन,
एकमेव सत हो सकता है ।
कुछ भी नहीं असंभव यहाँ,
यहाँ कुछ भी हो सकता है ।।

महालय के गुरुत्व में है,
चबूतरा ऊँचा और विशाल
उसके ऊपर तब निर्मित है,
चामुण्डा आलय बेमिसाल ।।

खड़ी हुयी हैं चामुण्डा,
करके मुख दक्षिण की ओर ।
लेटे हैं शिव भी नीचे,
करके मुख दक्षिण की छोर ।।

कलियुग में इन जीवों के,
कल्याणार्थ ही ये रूप रचा ।
दक्षिणेश्वर महाकाली ने,
भवतारिणी का स्वरूप रचा ।।

भवतारिणी नाम से काली,
यहाँ पर जानी जाती हैं ।
भवसागर पार लगाने हेतु ,
माँ यहाँ पर मानी जाती हैं ।।

अतिसुन्दर है रूप माँ का
देख मन शांत हो जाता है ।
भूल कर मन सारे जग को,
पारब्रह्म में खो जाता है ।।

महादेवी के रूप का वर्णन,
ऐसे–कैसे हो जायेगा ।
महादेव प्रयास करें तो,
शायद सम्भव हो पायेगा ।।

जय माँ अम्बे, जय माँ काली,
शरणागत माँ शरण तिहारी ।
शंकर शिव गुरुदेव पुरारी,
शरणागत शिव शरण बिहारी ।।

महालय के उस प्रांगण में,
वो कितना रोया करते थे ।
माँ–माँ कहकर श्रीरामकृष्ण,
भूमि पर मुंह रगड़ा करते थे ।।

महालय प्रांगण आज भी,
गीला है उनके अश्रुओं से ।
महालय की धरती अभी तक,
न सूखी उनके आँसुओं से ।।

रामकृष्ण के रोते–रोते,
वियोग की सीमा टूट गई।
उस दिन क्रन्दन करते–करते,
सहने की सीमा छूट गयी ।।

उठा लिया खड्ग काली का,
ठाकुर ने आत्मबलि हेतु ।
प्रकट हो गयीं चामुण्डे,
उसी क्षण उनकी रक्षा हेतु ।।

द्रवित हो गयीं चामुण्डा,
उनके महान उस रोदन से ।
प्रकट हो गयीं मातंगी,
ठाकुर के उस क्रन्दन से ।।

उठा लिया गोद में ठाकुर को,
चामुण्डा ममतामालिनी ने ।
रख दिया कर सीस पर उनके,
तभी से माँ मुण्डमालिनी ने ।।

पूर्ण हो गयीं कामनायें,
कालीनाम संकीर्तन से ।
बह चली प्रेमाश्रु की धारा,
श्रीरामकृष्ण की आँखों से ।।

सर्वप्रथम पाया था दर्शन,
रामकृष्ण ने इस आलय में ।
शिष्यगण को करवाया दर्शन
फिर ठाकुर ने इस महालय में ।।

आलय की महिमा का वर्णन,
कर पाना नहीं संभव है ।
चाहे तुम जितना भी कर लो,
पर पूरा करना असंभव है ।।

माँ के आलय के आगे,
बना हुआ है नटमंदिर ।
हवन, बली, पूजा घर हेतु,
खड़ा हुआ है ये मंदिर ।।

आंगन के दक्षिणी छोरों पर,
बने हुये हैं कुछ कमरे ।
महालय के प्रशासन हेतु,
खड़े हुये हैं ये अमले ।।

उत्तर–पश्चिम कोने में है,
शयनकक्ष श्रीरामकृष्ण का ।
विश्व विजेताओं ने चूमा,
द्वार–चौखट उसी कमरे का ।।

तीन दिशा में इस कमरे के,
बने हुये हैं बरामदे चार ।
गंगा दर्शन आने–जाने,
सीस नवाने आदि को विचार ।।

इस कमरे का हर एक कोना,
ठाकुर की याद दिलाता है ।
अवतरित हुये थे नारायण,
क्या यही कुछ समझाता है ।।

ठाकुर के कमरे से सटकर,
दक्षिण में थोड़ा सा हटकर ।
बने हुये हैं द्वादश शिवकर,
ज्योतिर्लिंग द्वादश मयकर ।।

ठाकुर के कमरे के अन्दर,
पड़े हैं दो तखत पुराने ।
बीत गयी हैं सदियाँ फिर भी,
उनकी याद हमे दिलाने ।।

उन तखतों पर देव कभी,
लेटा और बैठा करते थे ।
कभी भक्तों से तो कभी,
माँ से बातें किया करते थे ।।

ब्राह्मसमाज के संस्थापक,
यहाँ आया–जाया करते थे ।
ठाकुर के चरणों में केशव,
अपना सीस झुकाया करते थे ।।

आज भी सारी दुनिया से,
लोग आया–जाया करते हैं ।
ठाकुर की चौखट पर अपना,
निज सीस नवाया करते हैं ।।

ठाकुर की भक्ति का रस,
ऐसे क्या कोई जानेगा ।
जिस पर कृपा हो उनकी,
वही इस रस को मानेगा ।।

जाने कैसा अद्‌भुत है ये,
श्रीरामकृष्ण भक्ति का रस ।
जितना तुम डूबोंगे इसमें,
उतना ही तुम पाओंगे झस ।।

पारब्रह्म हैं ये ठाकुर,
परमेश्वर हैं ये ठाकुर ।
मुक्ति देने हेतु ही तो,
इस जग में आये थे ठाकुर ।।

जय माँ अम्बे, जय माँ काली,
शरणागत माँ शरण तिहारी ।
शंकर शिव गुरुदेव पुरारी,
शरणागत शिव शरण बिहारी ।।

ठाकुर के कमरे में बैठ,
नरेन्द्र भजन गाते थे ।
लेकर तानपुरा हाथों में,
उनको भजन सुनाते थे ।।

सुनकर भजन नरेन्द्र का,
ठाकुर लीन हो जाते थे ।
अक्सर ऐसा होता था वो,
समाधि में चले जाते थे ।।

गा रहे हैं गीत नरेन्द्र,
भवतारिणी माँ काली का ।
भाव–विभोर हो सुन रहे सब,
नाम संकीर्तन काली का ।।

कहते हैं नरेन्द्र भजन,
गन्धर्वकण्ठ से गाते थे ।
उनके भजनों को सुनने,
देवता भी उतर आते थे ।।

ठाकुर के कमरे में अक्सर,
शिष्यगण आया करते थे ।
ध्यान धारणा में अपना,
सब समय बिताया करते थे ।।

मुक्ति का आधार हैं दोनों,
श्रीरामकृष्ण – विवेकानन्द ।
एक सिक्के के दो पहलू हैं,
तत्, सत, चित् सच्चिदानन्द ।।

आदिशक्ति हैं आदिब्रह्म हैं,
श्रीरामकृष्ण – विवेकानन्द ।
काली के अवतार हैं ठाकुर,
शिव के अवतार विवेकानन्द ।।

गिरीशचन्द थे भक्त परम,
श्रीरामकृष्ण के चरणों के ।
अभय प्रदान किया था उनको,
ठाकुर ने प्रसन्न हो कर के ।।

ठाकुर के कमरे से उत्तर,
दो सौ कदम की दूरी पर ।
पंचवटी का पावन स्थल,
स्थित है गंगा के तट पर ।।

ठाकुर ने की थी तपस्या,
उस पंचवटी के साये में ।
अद्‌भुत–अद्‌भुत दर्शन पाये,
उस गंगा तट के काये में ।।

पा दर्शन जानकी माता का,
ठाकुर पहचान नहीं पाये ।
लोटे जब हनुमान पाँव पर,
तब ठाकुर उन्हें जान पाये ।।

रघुकुल–नायक हैं श्रीराम,
सबका है उनको सम्मान ।
नायिका हैं माँ जानकी
श्रीराम–जानकी को प्रणाम ।।

दशरथनन्दन हैं श्रीराम,
कौशल्यासुत हैं श्रीराम ।
मातु–पिता से भी बढ़कर,
सारे जग में हैं श्रीराम ।।

दीनबिहारी हैं श्रीराम,
नाथबिहारी हैं श्रीराम ।
सबकी रक्षा हेतु जग में,
जाने जाते हैं श्रीराम ।।

जानकीनाथ हैं श्रीराम,
परम आराध्य हैं श्रीराम ।
भक्तों के परमार्थ हेतु,
जपने योग्य हैं श्रीराम ।।

भक्तबिहारी हैं श्रीराम,
अवधबिहारी हैं श्रीराम ।
धर्म संस्थापना हेतु ही,
अवतरित हुए हैं श्रीराम ।।

महाशक्ति के द्वार पर,
खड़े होते हैं हनुमान ।
शक्तिपीठ हैं जहाँ–जहाँ,
वहाँ–वहाँ रहते हैं हनुमान ।।

दक्षिणेश्वर के प्रांगण में,
हनुमान के दर्शन होते हैं ।
उस प्रांगण की रक्षा हेतु,
वो लंगूर रूप में रहते हैं ।।

शक्ति सहायक हैं हनुमान,
भक्ति विनायक हैं हनुमान ।
एकादश रुद्र के रूप में,
अवतरित हुये हैं हनुमान ।।

दक्षिणेश्वर की रक्षा हेतु,
जो सदा तत्पर होते हैं ।
वही भैरों जी तो सदा,
उस पंचवटी में रहते हैं ।।

पंचवटी में भैरों जी का,
दर्शन ठाकुर ने पाया था ।
दक्षिणेश्वर रक्षा की बातें,
उन्होंने ने ही बतलाया था ।।

श्री तोतापुरी भी रहे हैं,
उस पंचवटी के साये में ।
खूब रमायी धूनी पुरी ने,
उस गंगातट के काये में ।।

जटाधारीजी भी रहे हैं,
उस पंचवटी के साये में ।
श्रीरामलला भी खेले हैं,
उस प्रांगण के छाये में ।।

ध्यान किया करते थे ठाकुर,
उस पंचवटी के छाये में ।
निर्विकल्प समाधि भी ली थी,
विकल्परहित कृश काये में ।।

लुप्त हो गया सकल साकार,
उसी परम सत निराकार में ।
एकोहम् द्वितीयोनास्ति,
ढल गया सब इसी प्रकार में ।।

देख पल में निर्विकल्प समाधि,
दंग रह गये श्री तोतापुरी ।
लगे सोचने अन्तर मन में,
कैसे हुआ ये संभव पुरारी ।।

जय माँ अम्बे, जय माँ काली,
शरणागत माँ शरण तिहारी ।
शंकर शिव गुरुदेव पुरारी,
शरणागत शिव शरण बिहारी ।।

पंचवटी से उत्तर–पूरब,
चार सौ कदम की दूरी पर ।
बिल्ववृक्ष साधना का स्थल,
स्थित है गंगा के तट पर ।।

जहाँ बैठकर के ठाकुर,
तंत्रसाधना करते थे ।
माँ भैरवी की छाया में,
वो शव साधना करते थे ।।

रामकृष्ण ने पाया वहीं,
दर्शन दस–महाविद्याओं का ।
माँ के विभिन्न स्वरूपों का,
एक से बढ़कर एक रूपों का ।।

साक्षी है भागीरथी वहाँ,
ठाकुर के घोर तपस्या की।
उनके कठिन परीक्षा की,
और अद्‌भुत–अद्‌भुत दर्शन की ।।

कितना खोजा ठाकुर को,
भैरवी ने गंगा के तट पर ।
तब जाकर पाया माँ ने,
उनको दक्षिणेश्वर के पट पर ।।

थक कर बैठ गयीं जब माते,
ठाकुर ने उन्हें बुलवाया ।
मेरे लिये ही वो आई हैं,
उन्होंने तभी कहलवाया ।।

परम सिद्ध हैं माँ भैरवी,
उनको साधना करवाया ।
महामयी हैं माँ भैरवी,
ठाकुर को दर्शन दिलवाया ।।

रक्षामंत्र बैठ माँ दुर्गे का,
श्रीरामकृष्ण जब जपते थे ।
अग्निशिखा घेर लेती उनको,
वो जब–जब ऐसा करते थे ।।

भूत–प्रेतों का निमित्त यहाँ,
जैसे ही ठाकुर चढ़ाते थे ।
एक–एक करके सभी निमित्त,
आसमान में उड़ जाते थे ।।

गलित–हस्त क्या होता है,
श्रीरामकृष्ण ने कब जाना ।
फिसल गया गंगा जल कर से,
श्री ठाकुर ने इसे तब माना ।।

जय माँ अम्बे, जय माँ काली,
शरणागत माँ शरण तिहारी ।
शंकर शिव गुरुदेव पुरारी,
शरणागत शिव शरण बिहारी।।

उत्तर दिशा में आलय के,
बना एक नौबतखाना है ।
सारदामणि रही हैं वहाँ,
आज उनका बुतखाना है ।।

नौबतखाने में रहकर माँ,
खाना प्रतिदिन पकाती थीं ।
ठाकुर की सेवा में रत हो,
शिष्यों को खूब खिलाती थीं।।

भक्तों के कल्याणार्थ ही,
माँ ध्यान जप आदि करती थीं ।
कैसे हो उद्धार लोगों का,
सदा इसलिए तप करती थीं ।।

मातु सारदे वर्णन बिना,
दक्षिणेश्वर कथा अधूरी है ।
रामकृष्ण ने की जो लीला,
वो नर लीला नहीं पूरी है ।।

श्रीरामकृष्ण यदि ब्रह्म हैं,
तो सारदा हैं उनकी शक्ति ।
श्रीरामकृष्ण गर भक्त हैं,
तो सारदा हैं उनकी भक्ति ।।

शक्ति और भक्ति का संगम,
माँ सारदे में निहित है ।
उनकी कृपा जब तक न हो,
शक्ति–भक्ति नहीं विहित है ।।

महाशक्ति हैं जानकी माता,
महाभक्ति हैं जानकी माता ।
सारदा रूप में अवतरित हुयीं,
महालक्ष्मी हैं जानकी माता ।।

सारदा ठाकुर का अवतरण,
कलियुग में नवयुग का हेतु है ।
भवसागर पार लगाने हेतु,
माँ काली का ये सेतु है ।।

सारदामणि जगत जननी हैं,
श्रीठाकुर की कृपास्वरूप ।
अभय प्रदान करती हैं वो,
सब भक्तों को ममतास्वरूप ।

षोडशी माँ का पूजन किया,
देव ने सारदा को लेकर ।
हो गया मिलन निराकार में,
हो गयी आत्मा एक मिलकर ।।

शिव–पार्वती का मधुर मिलन,
पूर्णतया ही अलौकिक है ।
श्रीरामकृष्ण – सारदामणि,
का मिलन भी नहीं लौकिक है ।।

रामकृष्ण ने जग कल्याण,
किया जो सारदा से मिलकर ।
जग उसको भूलेगा कैसे,
उन महान लोगों से बिछुड़कर ।।

जय माँ अम्बे, जय माँ काली,
शरणागत माँ शरण तिहारी ।
शंकर शिव गुरुदेव पुरारी,
शरणागत शिव शरण बिहारी ।।

पूर्ण हो जायेंगी सभी,
कामनायें अन्तर–हृदय की ।
स्वयंसिद्ध है ये गाथा,
महाकाली दक्षिणेश्वर की ।।

गाथा है ये महारानी की
माता दक्षिणेश्वर रानी की ।
उर–अन्तर में व्याप रही जो
उस महाशक्ति कल्यानी की ।।

कर प्रवेश तुम मेरे उर में,
रहो सदा तुम अंतःपुर में ।
पाऊँ तुम्हें मैं सदा हृदय में,
माँ रहो सदा तुम उरपुर में ।।

जय माँ अम्बे, जय माँ काली
शरणागत माँ शरण तिहारी ।
शंकर शिव गुरुदेव पुरारी
शरणागत शिव शरण बिहारी ।।

ठाकुर बोले भक्त सदा ही,
मातु भक्ति रस पर जीते हैं ।
ज्यों चातक पंछी केवल,
स्वाती–नक्षत्र बूँद पीते हैं ।।

बोले नरेन गलत है कहना,
स्वाती बूँद चातक पीता है ।
मैंने देखा है इन आँखों से,
वो और जल पर भी जीता है ।।

अवाक हो गये सुनकर ठाकुर,
नरेन्द्र का विरोधाभास ।
पहुँची फरियाद माँ के पास,
क्यों हुआ मुझे गलत आभास ।।

चंद दिन नहीं बीते होंगे,
घटी तभी कुछ घटना ऐसे ।
नरेन्द्र चिल्लाये देखकर,
यही पंछी हो चातक जैसे ।।

ध्यान से देखा ठाकुर ने,
उस आगन्तुक उस आफत को ।
था कोई पंछी और बेचारा,
नरेन चिल्ला रहे चातक को ।।

श्रीठाकुर बोले धत् तेरे की,
तू इसको चातक बतलाता है ।
दिखलाया था जो माँ ने मुझको,
तू उसको गलत समझाता है ।।

लज्जित हुये नरेन्द्रनाथ,
बालसुलभ अपनी गलती पर ।
मुग्ध हो गये देवगण सभी,
महाबालक की उस कथनी पर ।।

धन्य हैं ठाकुर और नरेन,
धन्य है उनसे देश–विदेश ।
गुरु–शिष्य का ये अद्‌भुत खेल,
फैल रहा उनका हर संदेश ।।

ठाकुर सर चढ गया था भूत,
श्रीमातु भक्तिरस प्रेम का ।
सोते–जागते, उठते–बैठते,
उतरता नहीं था रंग प्रेम का ।।

ज्यों चातक प्यू–प्यू रटे,
श्री ठाकुर माँ–माँ जपते हैं ।
स्वाती नक्षत्र बूँद रूपी वो,
मातु भक्ति रस पर जीते हैं ।।

मातु महिमा के गीत सुनकर,
श्री ठाकुर मस्त हो जाते हैं।
मोर समान फैला पंखों को,
नृत्य में पस्त हो जाते हैं ।।

ठाकुर अक्सर स्वयं भी,
गीत मातु महिमा गाते हैं ।
उनके मुख से सुनकर गीत,
भाव–विभोर लोग हो जाते हैं ।।

ठाकुर के मधुर गीतों से,
गुंजायमान है आकाश वहाँ ।
महाभाव उनके उस नृत्य से,
सम्मोहित है आसमान वहाँ ।।

दक्षिणेश्वर में अक्सर ठाकुर,
भक्तगणों से घिरे रहते हैं ।
भाव–विभोर हो माँ–माँ कहकर,
बालक समान नृत्य करते हैं ।।

परमहंस केवल ईश्वर के,
महाभाव रस पर जीते हैं ।
दूध–वारि मिला दो गर साथ,
हंस केवल दूध पीते हैं ।।

दिया दीक्षा इष्टमंत्र का,
श्रीकेनाराम भट्ट ने उनको।
तत्पश्चात कहाँ गये वो,
नहीं मिले कभी फिर उनको ।।

कभी हड़बड़ा बच्चों से,
जलेबी छुपा लेते कर में ।
कभी डूब जाते परमहंस,
समाधिस्थ हो गहन उर में ।।

कौन जानता था यह बालक,
एक दिन इतना नाम करेगा ।
कामारपुकुर में जन्म लेकर,
वो जग का कल्याण करेगा ।।

रामकृष्ण की इस गाथा में,
ज्ञान–विज्ञान का भंडार हैं ।
आत्मानुभूति की इस कथा में,
प्रेमाभक्ति ही आधार हैं ।।

जय माँ अम्बे, जय माँ काली,
शरणागत माँ शरण तिहारी ।
शंकर शिव गुरुदेव पुरारी,
शरणागत शिव शरण बिहारी ।।

माँ

पंचवटी

आनन्दोदय

तृतीय पुष्प

आनन्दोदय (तृतीय पुष्प)

अवाक हो गये सुन नरेन्द्र,
खबर पितृ देहावसान की ।
दौड़ते–भागते घर पहुँचे,
पा खबर पितृ अवसान की ।।

ज्येष्ठ सुत थे वो पिता के,
भाई–बहनों में सबसे बड़े ।
आन पड़ी थी जिम्मेदारी,
क्या करना सोच रहे खड़े ।।

साहस, धैर्य, निर्भयता से,
हृदय था उनका भरा हुआ ।
बल–वीर्य से था गठा हुआ,
जिस्म उनका खूब ढला हुआ ।।

दौड़ शुरु हो गयी वहीं से,
यहाँ–वहाँ आवेदन हेतु ।
पर मिली न चाकरी उनको,
सपरिवार गुजर–बसन हेतु ।।

टूट गये सब जूते–चप्पल,
यहाँ–वहाँ, दौड़ते–भागते ।
भाग्य में नहीं थी चाकरी,
मात्र रहे वो धूल फाँकते ।।

करते भी तो क्या करते,
किस्मत थी जैसे अड़ी हुई ।
उनको सबक सिखाने हेतु,
जैसे तन–मन कर खड़ी हुई ।।

हार गये दौड़ते–भागते,
डाल दिये हथियार हार के ।
हँस रही थी जीत पर अपने,
नियति उनके नकेल डाल के ।।

शान–शौकत से पले–बढ़े,
बड़े बाप के थे बेटे बड़े ।
जन्म से ही देना सीखा,
हृदय से थे वो दाता बड़े ।।

देख नहीं सकते थे वो,
भाई–बन्धुओं को भूखा ।
कभी नहीं सोते खाकर,
छोड़ कभी उनको भूखा ।।

झूठ कहा करते थे माँ से,
खाकर आये हैं बाहर से ।
खा लें कुछ उनके घर वाले,
यही सोचते वो अन्दर से ।।

जागे नरेन्द्र लेते हुए,
नाम एक सुबह भगवान का ।
बिफर गयीं माँ सुनकर नाम,
उनके मुख से दयावान का ।।

बोलीं माता बचपन से ही,
तू किस देव को पुकार रहा ।
जिसने दिन दिखलाया है ये,
तू उसी की दया बखान रहा ।।

कुम्हला गया हृदय–सुमन,
सुनकर माता की धिक्कार ।
दृढ़ निश्चय कर लिया यहकि,
ईश्वर–फिश्वर हैं बेकार ।।

शक्ति की भक्ति से अभी तक,
अवगत नहीं हुए थे कभी ।
बेलना पड़ा जभी पापड़,
शायद इसी वजह से तभी ।।

मान भरा था कूट–कूट के,
विधना ने उनके रग–रग में ।
संवेदना उर में थी भरी,
उनके हृदय के नग–नग में ।।

बेहोशी छा गयी उन पर कब,
उस निराशा भूख थकान से ।
गिर पड़े सड़क पर नर–इन्द्र,
खाकर चक्कर वो धड़ाम से ।।

मुस्कुरा रही थीं मातंगी,
निज लाल के स्वाभिमान पे ।
बुला रही थीं उनको काली,
दक्षिणेश्वर के शक्तिधाम पे ।

बहुत दुखी थे श्रीरामकृष्ण,
उनके कठिन परिणाम से ।
फिर भी रहते थे शान्त सदा,
अवगत थे वो हर अंजाम से ।।

लेते न थे मदद कभी भी,
वो किसी बन्धु–बान्धव से ।
कहते न थे कष्ट कभी भी,
वो अपने किसी भाई–बन्धु से ।।

टूट गया उनका विश्वास,
फिर भी था उनको एक आस ।
दक्षिणेश्वर मे उनके थे,
श्रीरामकृष्णदेव खास ।।

नरेन्द्र दत्ता थे आसक,
निर्गुण निराकार ओंकार के ।
श्रीरामकृष्ण थे उपासक,
उस महाशक्ति ओंकारी के ।।

कहते नरेन्द्र ठाकुर से,
आप तो अन्तर्यामी हैं ।
आप की सुनती हैं माँ काली,
आप बिल्कुल निष्कामी हैं ।।

आप करें विनती माँ से,
थोड़े धन की मेरे लिए ।
मिट जाए विपदायें घर की,
यदि कर दें कुछ उनके लिये ।।

ठाकुर बोले संन्यासी हूँ,
माँ से कभी न कुछ चाहा है ।
जनमा है तू माँ के लिए ही,
खुद क्यों नहीं कुछ माँगा है ।।

सुन सकुचाए देखकर नीचे,
बोले नरेन कुछ धीरे से ।
अपरिचित हूँ माँ से अभी तक,
कैसे माँगू मैं कुछ उनसे ।।

ठाकुर बोले मंगल रात को,
मध्यनिशा में यहाँ आ जाना ।
जो–जो चाहते हो तुम जग में,
वो–वो सोचकर मन में आना ।।

कृपामयी हैं भुवनेश्वरी,
तेरी इच्छा पूर्ण करेंगी ।
जो–जो चाहते हो तुम जग में,
वो तुरन्त सम्पूर्ण करेंगी ।।

दक्षिणेश्वर पहुँचे नरेन्द्र,
भर हृदय पूर्ण विश्वास से ।
कहा है जब ठाकुर ने उनसे,
तब मिलेगा अवश्य इस आस से ।।

इन्तजार था ठाकुर को,
अपने प्रिय नरेन्द्र का ।
काटे नहीं कटता था समय,
इन्तज़ार था उनको नरेन्द्र का।।

उनको था इन्तज़ार उनका,
उनको था विश्वास उनका ।
कैसे कटता समय दोनों का,
दोनों को था आस समय का।।

खत्म हो गया इन्तज़ार,
आया समय इतिहास का ।
जब लिया संकल्प ठाकुर ने,
छिन्नमस्ता के उल्लास का ।।

भावी सेनापति था दत्त,
नवयुग के नवइतिहास का ।
क्रान्ति बीज था नरेन्द्र,
विश्व के सकल विश्वास का।।

योद्धा था धर्मक्षेत्र का,
रचना था इतिहास उसे ।
बिगुल था रणक्षेत्र का वो,
बजना था सौ बार उसे ।।

धीरे–धीरे चल कर ठाकुर,
पहुँचे उस महालय के निकट ।
जहाँ बना था चबूतरा ऊँचा,
वहाँ नट मंदिर के सन्निकट ।।

स्तब्ध था वातावरण वहाँ,
नीरव नील आधी रात में ।
महक रहा था आंगन सारा,
पुष्प खुशबुओं की बरसात में।।

तरंगित था वातावरण सारा,
सुगन्धित था मंद समीर यहाँ ।
दिव्य प्रकाश में था डूबा,
बरसता था जैसे संजीव वहाँ ।।

झूम रहे थे दिव्य भाव में,
श्रीठाकुर कुछ घूम–घूमकर ।
बुद–बुदा रहे थे मंत्र उनके,
होंठ जैसे कुछ चूम–चूमकर ।।

अधमुंदे खुले थे नेत्र उनके,
देख रहे थे कुछ नेत्र उनके ।
बुद–बुदा रहे थे होंठ उनके,
जप रहे थे बीजमन्त्र मन के ।।

चहल रहे थे यूँ आंगन में,
नरेन्द्र आलय के वैसे ।
मँडरा रहा हो कोई भौंरा,
पराग हेतु पंकज पर जैसे ।।

टहल रहे थे नरेन्द्र कुछ,
मिलन अधीरता में वैसे ।
तड़प रही विरह ज्वाला में,
मीन हो कोई बिन जल जैसे ।।

बैठ गये ठाकुर वहाँ,
नट मन्दिर के चौखट पर।
गौर से देखने लगे ठाकुर,
प्रिय शिष्य के चेहरे पर ।।

शान्त गंभीर थे नरेन्द्र,
दिव्य भावों में डूबे हुये ।
सोच रहे थे वो हृदय में,
जैसे भाव संजोये हुये ।।

नर–नारायण से वो दोनों,
घूम रहे थे उस मन्दर में ।
राम–लखन जैसे वो दोनों,
ढूँढ़ रहे थे कुछ अन्दर में ।।

पहुँचे नरेन्द्र मन्दिर में,
ले मन में संशय विश्वास का ।
हँस दिये ठाकुर देखकर खेल,
धूमावती के प्रयास का ।।

कसर थी थोड़ा अवगुंठन की,
पसर थी बस पर्दा हटने की ।
आ गई वो घड़ी शुभ मंगल की,
भैरवी से उनके मिलने की ।।

बोले ठाकुर जा मन्दिर में,
हर इच्छा माँ से बतला दे ।
हर इच्छा वह पूर्ण करेगी,
जो चाहे तू उनसे पा ले ।।

दृढ़ विश्वास लेकर चढ़े,
नरेन्द्र मन्दिर की सीढ़ी पर ।
दृढ़ आस्था लेकर चले,
नरेन्द्र मन्दिर की पीढ़ी पर ।।

फैल रहा था श्रीप्रकाश,
दक्षिणेश्वर के मन्दर में ।
बिहँस रही थीं भवतारिणी,
साक्षात खड़ी थीं अन्दर में ।।

दंग रह गये चौखट से ही,
देख प्रकट जगत जननी को ।
होश उड़ गये चौखट पे ही,
देख सकल जगत तरनी को ।।

लेट गये दंडवत नरेन्द्र,
मन्दिर की उस पीढ़ी पर ।
हिचकियाँ बँध गयीं उनकी,
रोते–रोते उस सीढ़ी पर ।।

चूमने लगे द्वार चौखट के,
बार–बार बहुत करीने से ।
करने लगे स्तुति नरेन्द्र,
मूक हृदय के बधिर कोने से ।।

स्तुति

धन्य–धन्य हो तुम जननी,
करती जीवन सुफल जननी ।
करती हो सबका कल्याण,
तुम हो जननी अतिमहान ।।

काली खप्पर वाली जननी,
शंकर की घरवाली जननी ।
श्रीठाकुर की प्यारी जननी,
सबकी माता काली जननी ।।

नवयुग की तुम त्राता जननी,
भक्तों की तुम माता जननी ।
करती हो जग का कल्याण,
माँ हो तुम आदि शक्ति महान।।

बालक–वृद्ध, नारी–नर ध्यावें,
भाँति–भाँति के पुष्प चढ़ावें ।
नारियल धूप नैवेद्य नचावें,
जला कपूर आरती गावें ।।

बिल्वपत्र व जवापुष्प तुम,
करती हो सहज ग्रहण जननी।
देकर अपने दर्शन हमको,
मुक्त करो तुम हे जननी ।।

स्तुति समाप्त

सप्तर्षि था वो बालक,
महाऋषि था वो बालक,
नारायण संग लीला करने,
आया था वो नर बालक ।।

आदि भक्त था वो बालक,
भीतर प्रेम था भरा हुआ ।
सारे तालाब का जल जैसे,
ऊपर काई से ढंका हुआ ।।

आदि त्यागी था वो बालक,
वैराग्य था भीतर दबा हुआ ।
हवनकुण्ड की ज्वाला जैसे,
ऊपर धुएँ से ढंका हुआ ।।

आदि ज्ञानी था वो बालक,
ज्ञान था भीतर छुपा हुआ ।
गर्भस्थ शिशु रहता जैसे,
ऊपर जेर से ढंका हुआ ।।

बीत गयी थीं सदियां फिर भी,
विरह व्याकुलता हड़प गयी ।
लोट गये माँ के चरणों में,
मिलन की आतुरता तड़प गयी ।।

ज्ञान भक्ति की प्रिय लालसा,
हृदय के भीतर भड़क गयी ।
उर प्रेम विश्वास की चाहत,
बनकर ज्वाला धधक गयी ।।

जग के कल्याण की भावना,
हृदय में उसके भड़क गयी ।
अवतारी था वो नरेन्द्र,
ज्ञान की ज्वाला धधक गयी ।।

माँग लिया जननी से उसने,
ज्ञान भक्ति की प्रिय कामना ।
माँग लिया तरनी से उसने,
प्रेम विश्वास प्रिय भावना ।।

बिहँस रही थीं जगतजननी,
देकर ज्ञान उस बालक को ।
बिहँस रही थीं जगततरनी,
देकर भक्ति उस नायक को ।।

धन्य हुए नरेन्द्र बहुत,
पा काली का दिव्य दर्शन ।
जनम सुफल हो गया उनका,
पा माँ का सम्मुख दर्शन ।।

लौटा बालक बनकर नायक,
नट मन्दिर के उस चौखट पर ।
श्रीरामकृष्ण बैठे थे जहाँ,
नट मन्दिर के उस चौपर पर ।।

उन्मादित था नरेन्द्र दत्त,
उस जगत जननी के दर्शन पर ।
रोमांचित था हर रोम उसका,
जगततरनी के कर्शन पर ।।

पूछा ठाकुर ने उनसे,
भवतारिणी से क्या माँगा ।
जो कहते थे तुम मुझसे,
क्या खुद वही माँ से माँगा ।।

उतर गया उन्माद सारा,
याद आ गया संसार न्यारा ।
चिड़िया चुग गयी खेत जब,
तब आया उनको होश प्यारा ।।

घबरा गये नरेन्द्र बहुत,
अपनी महान उस गलती पर ।
पछता गये नरेन्द्र बहुत,
दिव्य उन्माद की करनी पर ।।

बोले ठाकुर से नरेन्द्र,
जाने मुझे क्या हो गया था ।
माँगने गया था माँ से क्या,
क्या माँग वापस आ गया था ।।

अभिमान था उस बालक को,
अपने मन की दृढ़ता पर ।
अहंकार था उस बालक को,
आत्मनियंत्रण की क्षमता पर ।।

बिखर गया अभिमान सारा,
टूट गया अहंकार प्यारा ।
पछता रहे थे नरेन्द्र अब,
जब लुट गया संसार सारा ।।

ढांढ़स बँधाया ठाकुर ने,
फिर जाकर माफी माँग ले ।
क्षमामयी हैं जगतजननी,
अब जाकर टॉफी माँग ले ।।

पुनः गये नरेन्द्र माँ के,
उस परम पुनीत श्रीधाम में ।
फिर माँग आये वही वैराग्य,
जो आते न थे किसी काम में ।।

पूछा ठाकुर ने नरेन्द्र से,
क्या अबकी टॉफी माँग लिया ।
चाहता था जो तू उनसे,
क्या वही खिलौना माँग लिया ।।

लज्जित हो गये नायक बहुत,
अपनी पुनः की गलती पर ।
पछताने लगे लायक बहुत,
अपनी उस पुनरावृत्ति पर ।।

ठाकुर बोले नरेन्द्र से,
पछताने से फायदा क्या ।
रात अभी भी बाकी है,
राह चाहो तो कायदा क्या ।।

उभरा संशय मन में उनके,
माँ क्या दर्शन फिर देंगी ।
महारानी हैं सारे जग की,
राशन हेतु प्रकट पुनः होगी ।।

समझ रहे थे सबकुछ ठाकुर,
फिर भी बने हुए थे शान्त ।
कलाकार थे उच्चकोटि के,
इसी से नहीं होते थे अशान्त ।।

बोले सहज भाव से ठाकुर,
मैं कहता हूँ फिर जाओ ।
भाई–बहिनों के लिये अपने,
माँ से मधुकरी ले आओ ।।

व्यथित हो गया मन उनका,
त्रिताप की गहन ज्वाला से ।
नहीं चाहते थे कुछ भी जग में,
फिर भी न बचे विकराला से ।।

पुनः गये भारी ह्रदय से,
लेकर मन में दृढ़ संकल्प ।
लेकर ही आयेंगे राशन,
करके मन में कृत संकल्प ।।

प्रकट थीं माँ पहले से ही,
बिहँस रही थीं माँ पहले से ही ।
देख रही थीं माँ पहले से ही,
खेल रही थीं माँ पहले से ही ।।

जगतमोहिनी हैं माँ काली,
विश्वमोहिनी हैं माँ काली ।
शंकर शिव महादेव की,
प्रियमोहिनी हैं माँ काली ।।

गिर पड़े नीलकमल चरणों में,
महाकाली दक्षिणेश्वर के ।
बिलखने लगे नरेन्द्र बहुत,
शरणागत हो भवतारिणी के ।।

नमन योग्य हैं माँ काली,
मनन योग्य हैं खप्परवाली ।
नमन–मनन जप करने हेतु,
परमपूज्य हैं छप्परवाली ।।

लगने लगा तुच्छ संसार,
दिखने लगे जग के निःसार ।
महाजननी की शरण में आ,
निर्भय हो गया हरएक तार ।।

जय माँ अम्बे, जय माँ काली,
शरणागत माँ शरण तिहारी ।
शंकर शिव गुरुदेव पुरारी,
शरणागत शिव शरण बिहारी ।।

स्वार्थ की कालिमा छिप गयी,
निःस्वार्थ की भावना खिल गयी ।
वैराग्य के उदय होते ही,
ज्ञान–भक्ति आपस में मिल गयी।।

स्वार्थ का पुष्प मुरझा गया,
परमार्थ की कली खिल गयी ।
ज्ञान सूर्य जैसे उदय हुआ,
अज्ञान की कालिमा मिट गयी ।।

भक्ति दीप जैसे जल गया,
माँगना पड़ा फिर ज्ञान को ।
अहंकार सारा बिखर गया,
हारना पड़ा अभिमान को ।।

प्रकाश के पडते ही जैसे,
अन्धेरा लुप्त हो जाता है ।
ज्ञान उदय होने पर वैसे,
अज्ञान विनष्ट हो जाता है ।।

ज्ञान का सूर्य उदय हुआ,
अज्ञान अन्धेरा अस्त हुआ ।
नरेन्द्र विवेकानन्द हुआ,
नवयुग का नव उदय हुआ ।।

हारकर लौटा नरेन्द्र पर,
मुख पर था अपूर्व विश्वास ।
समझ गया था वो खेल सारा,
ठाकुर पर था अब उसको आस ।।

आत्मशक्ति ठाकुर की थी,
माँगता था नरेन्द्र वहाँ ।
चाहते थे जो श्रीठाकुर,
कहता था वही नरेन्द्र वहाँ ।।

बोला नरेन्द्र श्रीठाकुर से,
अब आप को ही करना होगा ।
जैसे आप चाहें वैसे ही,
अब परिवार को रहना होगा ।।

हँस कर बोले ठाकुर जाओ,
विश्व विजय का अभियान करो ।
कभी नहीं होगी कमी घर में,
बात का मेरे विश्वास करो ।।

सादा वस्त्र सादा भोजन,
सदा रहेगा तेरे दर में ।
भुखमरी भूखों मरेगी,
आज से प्रिय तेरे घर में ।।

दोधारी तलवार हैं जैसे,
श्रीरामकृष्ण – विवेकानन्द ।
ज्ञान–भक्ति से काट देते हैं,
जीव. भव बन्धन सच्चिदानन्द ।।

ठाकुर ने किया समन्वय,
करके साधना सब धर्मों की ।
सेवक थे नरेन्द्र उनके,
व्याख्या की उनके कर्मों की ।।

लहरा दिया सारे जगत में,
धर्म पताका नरेन्द्र ने ।
प्रचार किया धर्म समन्वय,
धर्म जगत के कर्मेन्द्र ने ।।

जय माँ अम्बे, जय माँ काली,
शरणागत माँ शरण तिहारी ।
शंकर शिव गुरुदेव पुरारी,
शरणागत शिव शरण बिहारी ।।

महाविद्यायें हैं माँ काली,
दसस्वरूपा हैं जय काली ।
माँ नवदुर्गा हैं नवकाली,
अन्नतस्वरूपा हैं माँ काली ।।

दसस्वरूपा हैं ये काली,
तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी ।
छिन्नमस्ता, मातंगी, कमला,
धूमावती, बगला व भैरवी ।।

सृष्टि स्थिति विनाश करने को,
सदैव उद्यत रहती हैं काली ।
शरणागत रक्षा करने हेतु,
सदैव साथ रहती हैं काली ।।

आदि शक्ति हैं ये माँ काली,
महाशक्ति हैं महाकाली ।
अनन्तशक्ति हैं शिव काली,
शिवशक्ति हैं हर काली ।।

बीज मंत्र हैं आदि काली,
महामंत्र हैं महाकाली ।
रक्षामंत्र हैं रक्ष काली,
कवच–कुण्डल हैं जय काली ।।

नवरात्रि हैं नव काली,
महारात्रि हैं महाकाली ।
मोहरात्रि हैं रूप काली,
कालरात्रि हैं शव काली ।।

सृष्टि शक्ति हैं कर काली,
प्रलय शक्ति हैं क्षय काली ।
उदय शक्ति हैं उदय काली,
अस्त हस्ती हैं लय काली ।।

परम शक्ति हैं माँ काली,
ज्ञान भक्ति हैं शिव काली ।
कर्म शक्ति हैं कर काली,
मोक्षदायिनी हैं भव काली ।।

जगत जननी हैं जग काली,
परम जननी हैं जय काली ।
दक्षिणेश्वर के श्रीधाम में,
भवतारिणी हैं माँ काली ।।

जय माँ अम्बे, जय माँ काली,
शरणागत माँ शरण तिहारी ।
शंकर शिव गुरुदेव पुरारी,
शरणागत शिव शरण बिहारी ।।

Shri Narayan Swami ji

गंगा
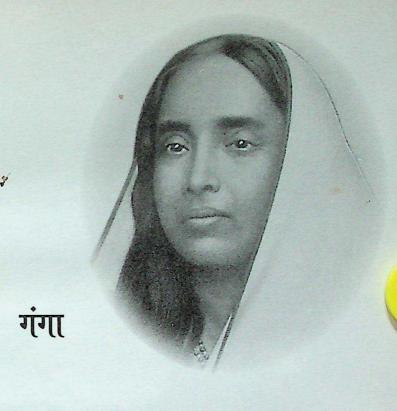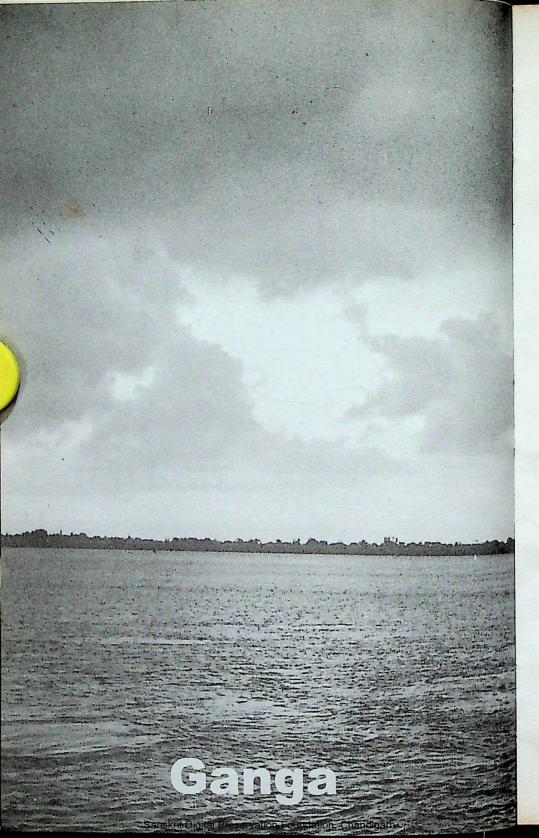
चतुर्थ पुष्प

गंगा (चतुर्थ पुष्प)

उतर हिमालय हिमशिखरों से,
कल–कल, छल–छल बहती हैं गंगा।
धरती को स्वर्ग बनाने को,
इस धरती पर बहती हैं गंगा।।

जहाँ–जहाँ बहती हैं गंगा,
तीरथ वहीं–वहीं बन जाते हैं ।
सुर नर मुनि गंधर्व सभी,
वहीं–वहीं बस जाते हैं ।।

गंगा के पावन दर्शन से,
जड़–जीव मुक्त हो जाते हैं ।
धन्य हैं वो लोग जो नित्य,
इस गंगा में ही नहाते हैं ।।

गंगा की महिमा का वर्णन,
कर पाना नहीं संभव है ।
चाहे तुम जितना भी कर लो,
पर पूरा करना असंभव है ।।

हर हर गंगे, हर हर गंगे,
पतित पावनी है तू गंगे ।
हर हर गंगे, हर हर गंगे,
माँ जगदम्बे है तू अंबे ।।

भागीरथ ने की थी तपस्या,
इस गंगा को लाने की ।
भटक रहे थे पुरखे उनके,
उनको पार लगाने की ।।

ब्रह्माजी प्रसन्न हुए,
तब समस्या नई खड़ी हो गई ।
गंगा वेग को सहने की,
समस्या बड़ी जटिल हो गई ।।

भागीरथ ने फिर की तपस्या,
शंकर जी को मनाने की ।
तब जाकर हल हुई समस्या,
इस गंगा वेग को सहने की ।।

सह लिया वेग गंगा का शिव ने,
अपने सिर के जटाजूट में ।
धारण कर ली गंगा शिव ने,
अपने सिर के जटाबूट में ।।

कहते हैं निकली हैं गंगा,
शिवजी के ही जटाजूट से ।
सुनते हैं बहती हैं गंगा,
शिवजी के ही कृपाकूट से ।।

स्वर्ग से उतरी धरा पर,
है ये अद्‌भुत पावनी गंगा ।
पुरखा तारण हेतु ही तो,
इस जग में बहती हैं गंगा ।।

भागीरथ के द्वारा ही तो,
लाई गई हैं पावनी गंगा ।
इसीलिए भागीरथी नाम से,
जग विख्यात हैं ये गंगा ।।

हर हर गंगे, हर हर गंगे,
हर एक मुख से ये गूँज रहा ।
गंगा के हर पावन तट पर,
बस यही एक नारा गूँज रहा ।।

कितना निर्मल, कितना शीतल,
कितना पावन है गंगाजल ।
भर कर रख लो किसी पात्र में,
चाहे इसको तुम जीवन भर ।।

फिर भी निर्मल, फिर भी शीतल,
बना रहेगा ये गंगाजल ।
बूँद–बूँद में इस गंगा के,
भरा हुआ है अमृत का घट ।।

हर हर गंगे, हर हर गंगे,
पतित पावनी है तू गंगे ।
हर हर गंगे, हर हर गंगे,
माँ जगदम्बे है तू अंबे ।।

पाया मंत्र राम राम का,
कबीर ने गंगा के घट पर।
महासमाधि ली तुलसी ने,
उसी काशी के गंगा तट पर ।।

जलसमाधि ली तीरथ ने,
काशी की गंगाधारा में ।
बहा दिया कुंती ने भी,
कर्ण को गंगाधारा में ।।

स्वयं काशी–विश्वनाथ भी,
बसे काशी में गंगा तट पर।
उत्तर--वाहिनी बहती गंगा,
जहाँ उनके चरणों को धोकर।।

दक्षिणेश्वर का काली मंदिर,
भी तो स्थित गंगा तट पर ।
विंध्यवासिनी भी रहती हैं,
पतित–पावनी गंगा पट पर।।

गंगा के पावन तट पर ही,
श्रीठाकुर खेला करते थे ।
गंगा की माटी से ही वो,
शिवप्रतिमा गढ़ा करते थे ।।

भीष्म जननी हैं ये गंगा,
हम सबकी गंगा माता ।
सदियों–सदियों से बहती हैं,
इस भू पर ये गंगा माता ।।

कोटि–कोटि ऋषि–मुनि जन,
रहते सदा गंगा के तट पर ।
ध्यान योग, साधना करके,
मुक्त होते गंगा के पट पर ।।

अस्त दिशा में गंगा तट के,
बैलूर मठ भवन स्थापित है ।
हावड़ा के हुगली तट पर,
ये संत आश्रम स्थापित है ।।

महामृत्यु को वरण किया,
विवेकानन्द ने गंगा तट पर ।
महालय उनका आज भी है,
उसी पावन गंगा से सट कर ।।

बाबा पवहारी भी रहे हैं,
गाजीपुर के गंगा तट पर ।
ध्यान–धारण महासमाधि,
उन्होंने भी ली गंगा तट पर ।।

धुल जाते हैं पाप तन के,
इस पतित पावनी गंगा में ।
मिट जाते हैं क्लेश मन के,
इस अन्तर निर्मल गंगा में ।।

जीवनदात्री मुक्ति प्रदात्री,
हैं ये निर्मल पावनी गंगा ।
बड़े भाग्य से भारतभूमि,
पर बहती हैं पावनी गंगा ।।

हर हर गंगे, हर हर गंगे,
पतित पावनी है तू गंगे ।
हर हर गंगे, हर हर गंगे,
माँ जगदम्बे है तू अंबे ।।

गंगा, यमुना, सरस्वती का जो,
अति पावन संगम स्थल है।
तीरथराज प्रयाग के नाम से,
जग विख्यात वो हर पल है ।।

सब तीर्थों में श्रेष्ठ ये तीरथ,
गंगा महात्म ही दर्शाता है ।
मुक्ति दायिनी गंगा का ये,
भागीरथी रूप कहलाता है ।।

गंगा स्नान का हर पर्वों पर,
कुछ न कुछ फल होता है ।
पर महाकुंभ में नहाने का,
अद्‌भुत ही फल होता है ।।

त्रेतायुग में भारद्वाज मुनि का,
आश्रम था गंगा के तट पर ।
स्वयं आये थे श्रीराम वहाँ,
उसी प्रयाग के गंगा के तट पर ।।

हर हर गंगे, हर हर गंगे,
पतित पावनी है तू गंगे ।
हर हर गंगे, हर हर गंगे,
माँ जगदम्बे हैं तू अंबे ।।

दिया दान जब बलि ने,
तीन डग भर भूमि का ।
नाप लिया त्रिलोकीनाथ ने,
तीनों लोकों को पल में ।।

देख हरि की ये अद्‌भुत लीला,
ब्रह्मा जी हो गये अवाक ।
भर लिया कमण्डल चरणामृत से,
धो श्री चरणों को कई बार ।।

वही चरणामृत हैं गंगा,
ब्रह्मवारि कहलाता है ।
हरि और हर की सेवा में,
ये नित्य चढ़ाया जाता है ।।

गंगा की महिमा का वर्णन,
श्रीरामकृष्ण भी गाते थे ।
गंगा के इस पावन जल को,
वो ब्रह्मवारि बतलाते थे ।।

कहा हरि ने ब्रह्मवारि है,
जल पतित पावनी गंगा का ।
शिवलिंगों पर चढ़ता है जल,
इसलिये इस पावनी गंगा का ।।

हर हर गंगे, हर हर गंगे,
कह–कहकर नहीं अघाते हैं ।
भक्तजन प्रिय शिव चरणों में,
सिर्फ गंगाजल ही चढाते हैं ।।

हर हर गंगे, हर हर गंगे,
पतित पावनी है तू गंगे ।
हर हर गंगे, हर हर गंगे,
माँ जगदम्बे है तू अंबे ।।

ध्यानमग्न थी सारदामणि,
श्रीरामकृष्ण के ध्यान में ।
जप रही थी कर में माला,
उस बकुल घाट के सुनसान में ।।

इतने में देखा सारदा ने,
रामकृष्ण को उतरते हुए ।
गंगा में प्रवेश कर उनको,
गंगाजल में विलय होते हुए ।।

आए फिर विवेकानन्द वहाँ,
नाम श्रीरामकृष्ण का जपते ।
भर–भरकर कर गंगा जल से,
नर–कंकालों पर छिड़कते ।।

गंगा जल की उन बूँदों से,
नर–कंकाल मुक्त हो जाते हैं।
महिमा नाम श्रीरामकृष्ण की,
जीव भव पार हो जाते हैं ।।

श्रीठाकुर हैं आत्मगंगा,
गंगा ठाकुर में बसती हैं ।
श्रीगंगा ठाकुर एक ही हैं,
दिव्य दृष्टि ये कहती हैं ।।

परमहंस हैं ये ठाकुर,
रामकृष्ण हैं ये ठाकुर ।
मन्दिर के गंगा तट पर,
रहा करते थे श्रीठाकुर ।।

पारब्रह्म हैं ये ठाकुर,
परमेश्वर हैं श्रीठाकुर ।
नारायण खुद अवतरित हुए,
श्रीनारायण हैं ये ठाकुर ।।

जगत आधार हैं ये ठाकुर,
आदि शक्ति हैं ये ठाकुर ।
स्वयं गंगा धारण किए हुए,
खुद गंगाधर हैं श्रीठाकुर ।।

हर हर गंगे, हर हर गंगे,
पतित पावनी है तू गंगे ।
हर हर गंगे, हर हर गंगे,
माँ जगदम्बे है तू अंबे ।।

सिर्फ एक बूँद गंगाजल ही,
काफी है स्वर्ग पहुँचाने को ।
जाते हुये जग से राही को,
एक नई ही राह दिखाने को ।।

गंगोत्री हैं उद्‌गम स्थल,
तो गंगासागर विसर्जन हैं ।
आत्मा का परमात्मा ही,
तो अन्तिम महासमर्पण हैं ।।

महासमाधि लेने की इस,
गंगा में मुझको अभिलाषा ।
पूर्ण करेंगी माँ जगदम्बे,
ये मेरी अन्तिम अभिलाषा ।।

नहीं कोई नदी ताल अथवा,
झील हैं ये पावन गंगा ।
भारतवासियों के लिए तो,
बस माँ की गोद हैं ये गंगा।।

हर हर गंगे, हर हर गंगे,
पतित पावनी है तू गंगे ।
हर हर गंगे, हर हर गंगे,
मुक्तिदायनी है तू अंबे ।।

हनुमान

पंचवटी
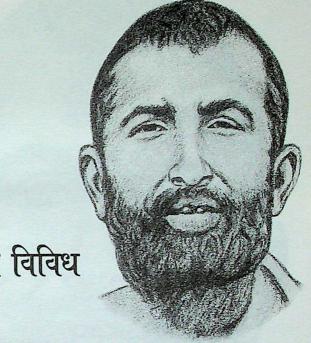
श्रीरामकृष्ण विविध

पंचम पुष्प

श्रीठाकुर निवास
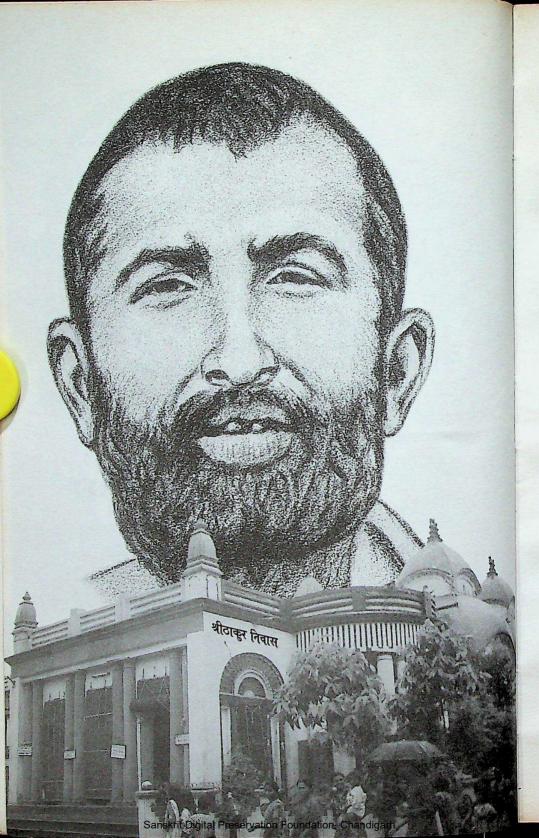
श्रीरामकृष्ण विविध (पंचम पुष्प)

परिचय

क्षुदिराम के घर जन्में थे,
चन्द्रादेवी के सुत बनकर ।
पारब्रह्म अवतरित हुए थे,
श्रीक्षुदिराम के पुत्र बनकर ।।

खुद को रौशन किया उन्होंने,
काली का नाम ले–लेकर ।
सबको वार किया ठाकुर ने,
काली का नाम दे देकर ।।

रामकुमार के अनुज थे,
श्रीरामकृष्ण परमहंस ।
उन्हीं के साथ आये वहाँ,
दक्षिणेश्वर के परमसंत ।।

ईश्वर के हैं रंग अनन्त,
चाहे जो रंग ले लीजिए ।
अंधे के हाथी समान,
चाहे जो रंग पकड़ लीजिए ।।

करतार वही भरतार वही,
तीनों लोकों के सरदार वही ।
जो राम कहो तो रहीम वही,
गर समझो खुदी तो खुद्दार वही ।।

देख सुंदर शिव प्रतिमा,
दंग रह गये मथुर बाबू
लगे पूछने हृदय से वो,
कहाँ से लाये इसे तुम बाबू ।।

जब बतलाया नाम हृदय ने,
प्रतिमा गढ़ने वाले का ।
हाथ जोड़ लिये मथुर ने,
सुन नाम श्रीरामकृष्ण का ।।

क्या मेरी माँ काली हैं,
कुछ ऐसा पूछा करते थे ।
श्रीरामकृष्ण अपने आप से,
ये अक्सर पूछा करते थे ।।

उज्ज्वल आकाश दूर से,
ज्यों नीला नजर आता है ।
उसी प्रकार गौर वर्ण माँ,
दूर से काली नजर आती हैं ।।

कुंडलिनी जागरण

दक्षिणेश्वर के आलय में,
हलधारी जी पुजारी थे ।
जगमोहन–जगमोहिनी के,
वो सेवा के अधिकारी थे ।।

वाकसिद्ध थे हलधारी जी,
सभी डरते थे उनसे लोग ।
कानाफूसी करते थे पर,
कहते न थे कुछ उनसे लोग ।।

रामकृष्ण ने सुनी जब निन्दा,
अपने अग्रज हलधारीजी की ।
सुनकर अच्छा नहीं लगा उन्हें,
सो जा कह दीं बातें लोगों की ।।

हलधारी को लग गया बुरा,
सुन बातें स्पष्ट कनिष्ठ की।
दे डाला अभिशाप क्रोध में,
उनके मुख से खून गिरने की ।।

अग्रज थे श्रीरामकृष्ण के,
वाक्सिद्ध हलधारीजी ।
खून गिरेगा तेरे मुख से,
बोले क्रोध में पुजारी जी ।।

घटी घटना कुछ ही दिन पश्चात्,
श्रीरामकृष्ण के साथ ऐसे ।
सेम के पत्ती के रंग जैसा,
काला खून गिरने लगा मुख से ।।

घटित हुआ था तब कुछ ऐसे,
ठाकुर के तालू में जैसे ।
उठी खुजली जोर की ऐसे,
बह चली खून की धारा जैसे ।।

घबरा गये ठाकुर देखकर,
धारा गाढ़े काले खून की ।
सुन समाचार भाग कर आए,
हलधारी भी सुन बात खून की ।।

बोले ठाकुर हलधारी से,
दादा तुम देखो तो सही ।
क्या हाल बनाया है तुमने,
देकर अभिशाप मुझको तभी ।।

रामकृष्ण की देख अधीरता
रोने लगे श्रीहलधारीजी ।
क्रोध में दिया था अभिशाप,
अब पछताने लगे पुजारीजी ।।

आये हुए थे उस दिन एक,
मन्दिर में प्राचीन विज्ञ साधु ।
करने लगे परीक्षा खून की,
देख खून का रंग साधु ।।

बोले परीक्षा के उपरान्त,
अच्छा हुआ जो बह गया खून ।
बना लिया पथ मुख से उसने,
वर्ना मस्तक पर चढ़ जाता खून ।।

हठयोग की चरम सीमा पर,
कुंडलिनी जागृत होती हैं ।
खुल जाता है द्वार सुष्मना,
अन्त में जड़समाधि होती हैं ।।

एक बार जड़समाधि होने पर,
तू वापस लौट कर न आ पाता ।
सुषुम्ना मार्ग से शरीर का,
रक्त तेरे सिर पर चढ़ जाता ।।

कार्य कोई विशेष शेष है,
तेरे इस पावन शरीर से ।
इसी से रक्षा की है तेरी,
माँ जगदम्बे ने तरकीब से ।।

सुनकर शान्त हो गया मंन,
ठाकुर का अपने ढंग से ।
वरदान में परिणित हो गया,
शाप भी एक अनोखे ढंग से ।।

जय माँ अम्बे, जय माँ काली,
शरणागत माँ शरण तिहारी ।
शंकर शिव गुरुदेव पुरारी,
शरणागत शिव शरण बिहारी ।।

अवतारी श्रीरामकृष्ण

नहीं सो पाए रात और दिन,
श्रीरामकृष्ण कई माह तक ।।
कहते हैं नहीं झपकीं कभी,
पलकें उनकी छः माह तक ।।

समझने लगे पागल उनको,
ज्ञानी–अज्ञानी दोनों मिलकर ।
महाभाव की महादशा को,
नहीं समझ पाये सब मिलकर ।।

आयी जब गुरुमयी भैरवी,
रामकृष्ण ने उनसे पूछा ।
कहते हैं लोग पागल मुझको,
क्या आप भी समझती हैं ऐसा ।।

गदगद हो गयीं माँ भैरवी,
देख रामकृष्ण की दशा ।
कहने लगीं शास्त्रोक्त है,
ये तेरी महाभाव दशा ।।

यही दशा श्रीराधा की थी,
जो तेरी है इस समय दशा ।
यही दशा चैतन्य की थी,
जो तुझमें है महाभाव दशा ।।

अति दुर्लभ है सारे जग में,
ये अद्‌भुत महाभाव दशा ।
अवतारी में ही संभव है,
ये अत्यन्त गूढ़ महादशा ।।

सम्भव नहीं है किसी जीव में,
समा सके ऐसी महादशा
राधा–चैतन्य को छोड़कर,
नहीं देखी गई ऐसी दशा ।।

छू–छू कर देखने लगी माँ,
रामकृष्ण के हर अंग को ।
परखने लगी अन्तरदृष्टि से,
अवतारी पुरुष के गुणों को ।।

पड़ते नहीं थे पाँव जमीं पर,
श्रीरामकृष्ण परमहंस के ।
अवतारी लक्षण थे ये अद्‌भुत,
सम्भव नहीं थे किसी जीव के।।

बुलवाया ज्ञानियों को माँ ने,
शास्त्रोक्त मत जानने हेतु ।
सबने मिलकर एक मत से उनको,
स्वीकार किया अवतार हेतु ।।

जो राम और कृष्ण हुए हैं,
रामकृष्ण भी हैं तो सोई ।
जो वराह और नरसिंह हुए हैं,
ये परमहंस भी हैं तो सोई ।।

आदि शक्ति हैं आदि ब्रह्म हैं,
दक्षिणेश्वर के अद्‌भुत संत ।
आदि भक्त हैं आदि गुरु हैं,
श्रीरामकृष्ण परमहंस ।।

जय माँ अम्बे, जय माँ काली,
शरणागत माँ शरण तिहारी।
शंकर शिव गुरुदेव पुरारी,
शरणागत शिव शरण बिहारी ।।

श्रीरामकृष्ण का त्याग

कामिनी–काँचन त्याग हेतु,
प्रेरित करते थे भक्तों को ।
सदैव सावधान करते थे,
श्रीरामकृष्ण सब शिष्यों को ।।

कामिनी–काँचन का त्याग,
पुरुष को महान बनाता है ।
धर्ममार्ग में प्रगति हेतु,
यही सोपान कहलाता है ।।

बिना त्याग के कोई भी हो,
वह साधु नहीं हो सकता है ।
कामिनी–काँचन त्याग बिना,
धर्मगुरु नहीं बन सकता है ।।

बालब्रह्मचारी थे ठाकुर,
छूते न थे काँचन हाथ से ।
कामिनी–काँचन त्यागी थे,
सर्वस्व त्यागी थे आपसे ।।

एक दिवस की है ये बात,
दक्षिणेश्वर में गुरु के पास ।
रुक गये थे साधना हेतु,
एक शिष्य रामकृष्ण के खास ।।

मध्यनिशा में दंग रह गये,
श्रीरामकृष्ण को न पाकर ।
खोजने लगे अन्दर–बाहर,
चारों ओर ठाकुर को जाकर ।।

सोचने लगे आखिर कहाँ,
इतनी रात को गये होंगे ।
कौंधी शंका मन में क्या,
मिलन हेतु ठाकुर गये होंगे ।।

जाकर खड़े हो गये चुपचाप,
शिष्य नौबतखाने के पास ।
करने लगे इन्तज़ार उनका,
कब आयेंगे वापस वो आज ।।

क्या और लोगों की तरह,
श्रीगुरुदेव का भी हाल है ।
ढोंग करते हैं त्याग का,
क्या यही उनका त्याग है ।।

पंचवटी से लौटे जब,
रामकृष्ण कमरे की ओर ।
मार्ग में देखा उनको,
निहारते मातुकक्ष की ओर ।।

पूछा ठाकुर ने उनसे,
आखिर क्यों खड़े हुए हो ।
ढूँढ रहे हो किसको तुम,
किस सोच में पड़े हुए हो ।।

लज्जित हो गये वो शिष्य बहुत,
अपने मन की उस गलती पर ।
उत्तर देते तो क्या देते,
चुपचाप खड़े रहे वहीं पर ।।

अन्तर्यामी थे रामकृष्ण,
जान गये शिष्य के अन्तर का ।
दिया अभय मुस्कुरा कर उसको,
नियम है गुरु को भी परखने का ।।

त्याग ही मापदंड है,
साधु आदि को परखने का ।
त्याग ही महामार्ग है,
परमानन्द प्राप्त करने का ।।

जय माँ अम्बे, जय माँ काली,
शरणागत माँ शरण तिहारी ।
शंकर शिव गुरुदेव पुरारी,
शरणागत शिव शरण बिहारी ।।

वसंत

वन प्रकृति से भरपूर है,
वातावरण दक्षिणेश्वर का ।
भागीरथी तट पर स्थित है,
सिद्धपीठ ये माँ काली का ।।

पंचवटी में आज भी यहाँ,
कोयल मधुर गीत सुनाती है ।
दक्षिणेश्वर के प्रांगण में,
उस वसंत ऋतु का बुलाती है ।।

वसंत ऋतु के आगमन पर,
देव हर्षित हो जाते हैं ।
पंचवटी में श्रीरामकृष्ण,
ध्यान समाधि लगाते हैं ।।

जब नए–नए परिधानों में,
वृक्ष बन सँवर जाते हैं ।
जब वन–उपवन में नभचर,
मधुर–मधुर गीत गाते हैं ।।

जब सूर्य उदय की बेला में,
कोयल मधुर गीत सुनाती हैं ।
चहचहाने लगते हैं पंछी,
दिशाएं गुनगुनाने लगती हैं ।।

निकल आती हैं कलियाँ नई,
आम की बौर आ जाती हैं ।
गुनगुनाने लगते हैं भृंग,
मदहोशी सी छा जाती है ।

बहने लगता है सुगन्धित,
शीतल मन्द पावन समीर ।
कूकने लगती हैं कोयल,
खिल जाती हैं कलियाँ अधीर ।।

वसंत ऋतु की इस बेला में,
प्रकृति मस्त हो जाती हैं ।
नृत्य करते वन में मयूर,
गेहूँ की फसल पक जाती है ।।

दौड़ जाती हैं गिलहरियाँ,
खेत और खलिहानों में ।
गीत गाती हैं कुँवारियाँ,
मगन होकर मैदानों में ।।

तरंगित हो कर वातावरण,
शान्त रसमय हो जाता है ।
वसंत ऋतु के आगमन पर,
मन मयूर मगन हो जाता है ।।

महादेव की कृपा स्वरूप,
ये वसंत ऋतु का मौसम है ।
शिव–पार्वती के विवाह से,
उत्पन्न हुआ ये मौसम है ।।

साधु–हृदय रंग जाते हैं,
वसंती रंग से वसंत में ।
प्रेम–भक्ति में रम जाते हैं,
भक्त हृदय उस शिव–शक्ति में ।।

वसंत ऋतु में मौसम जैसे,
बिलकुल अनुकूल हो जाता है ।
सर्दी–गर्मी मिलकर आपस में,
मन को सुकून पहुँचाता है ।।

जब मन शान्त हो जाता है,
स्वतः स्वाभाविक रूप से ।
लौट जाते हैं नभचर सभी,
स्वयं जब सभी ठिकानों से ।।

लौट वापस घर जाते हैं,
पंछी त्रिकोण नजारों में ।
आकाश में नजर आते हैं,
झुण्ड के झुण्ड कतारों में ।।

जब छा जाती है नीरवता,
सूर्य अस्त की बेला में ।
शान्त हो जाते हैं नभचर,
सन्धिकाल की इस लीला में ।।

जब संध्या की गोद में,
दिन थक कर छुप जाता है ।
जब नभ की लाली के पीछे,
दिनकर अस्त हो जाता है ।।

जब स्वच्छ क्षितिज के हृदय में,
चाँद स्पष्ट नजर आता है ।
तब हृदयरूपी दर्पण में,
माँ का रूप निखर जाता है ।।

जब भोग वासना से मन,
ग्लानि से भर जाता है ।
अन्तर में प्यास बनकर,
भक्ति उदित हो आता है ।।

ऐसे में सारा जग जैसे,
हृदय को गुदगुदाता है ।
सियाराममय इस जग में बस,
राम ही राम नजर आता है ।।

जीव और कामिनी काँचन

सदा सावधान करते थे,
श्रीरामकृष्ण सब शिष्यों को ।
भक्तमयी महिला हो तो भी,
उससे उनके दूर रहने को ।।

जीव कोटि की यही दशा है,
कामिनी–काँचन में रहता है ।
श्रीसद्गुरु मिल गये अगर तो,
आधी उम्र में सुधि लेता है ।।

मिली न शान्ति गुरुदेव कहीं,
खोजते–खोजते थक गया हूँ ।
मिली न खुशी अब तक कहीं,
ढूँढ़ते–ढूँढ़ते थक गया हूँ ।।

भोग वासना में फँसकर,
शान्ति तलाशता रहा हूँ ।
धन की लालसा में फँसकर,
खुशी निहारता रहा हूँ ।।

उर काम की ज्वाला में,
ज्यों घी डालता रहा हूँ ।
भोग वासना की चाहत में,
खुद को मिटाता रहा हूँ ।।

भ्रमजाल में फँसकर गुरुवर,
मृगमरीचिका सा भटका हूँ।
शान्ति और खुशी की खोज में,
न जाने कहाँ–कहाँ अटका हूँ।।

इन्द्रियाँ शिथिल होने लगीं,
वासना और सबल हो गयी।
आया न धन अब तक हाथ में,
लालसा और प्रबल हो गयी।।

भाग दौड़ में इस जीवन की,
ना जाने कब शाम हो गयी।
चकाचौंध देखते–देखते ,
आधी जिन्दगी पार हो गयी।।

थक गया हूँ लड़ते–लड़ते,
जीवन के अनवरत समर में।
विश्राम चाहता हूँ गुरुवर,
अब जीवन के शून्य पहर में।।

ब्रह्मचर्य में जो सुख है,
भोग में उसका अंश नहीं।
त्याग में जो संतोष है,
पाने में उसका लेश नहीं।।

धीरे–धीरे जान गया हूँ,
भेद शान्ति और खुशी का।
धीरे–धीरे जान लिया है,
केन्द्र शान्ति और खुशी का।।

आहिस्ता–आहिस्ता सुन रहा हूँ,
आवाज़ शान्ति और खुशी की।
उठ रही है हृदय मध्य से,
आवाज ऊँ तत् सत शान्ति की।।

षट्चक्र–दर्शन

कुंडलिनी शक्ति की बातें,
श्रीरामकृष्ण बतलाते थे।
अध्यात्म में उन्नति हेतु,
षट्चक्र दर्शन समझाते थे।।

इड़ा–पिंगला चल रही हैं,
बन्द पड़ी हैं सुषुम्ना नाड़ी।
सुप्त पड़ी है कुंडलिनी शक्ति,
यहाँ सो रही हैं माँ काली।।

गुरुदेव की कृपा स्वरूप,
खुल जाये जो द्वार सुषुम्ना।
चल पड़ेंगी कुंडलिनी शक्ति,
ज्ञाननाड़ी है ये सुषुम्ना।।

सहस्रार में शिव रहते हैं,
मूलाधार में भद्रकाली।
शिव–शक्ति का खेल है सारा,
सदा रहे प्रसन्न भवकाली।।

स्वबस बिहारिन हैं जय काली,
स्वछन्द विचरती हैं कर काली।
सत गुरुदेव की कृपास्वरूप,
षट्चक्र विचरण करने वाली।।

सर्प कुंडलिनी स्वरूप में,
मूलाधार में स्थित काली।
सद्गुरु कृपा के फलस्वरूप,
शिव से मिलने आती काली।।

मूलाधार और नाभि के मध्य,
चक्र स्वधिष्ठान कहलाता है।
अध्यात्म मार्ग प्रगति का ये,
प्रथम सोपान बतलाता है।।

मणिपुरचक्र चालित होने पर,
मन काम से ऊपर आता है।
ब्रह्मनाद उठता नाभि से,
ये समाधि स्रोत कहलाता है।।

मणि के ऊपर हृदय के पास,
अनाहतचक्र स्थित होता है।
ये चक्र जागृत होने पर,
ज्योति का दर्शन होता है।।

हृदयचक्र से थोड़ा ऊपर,
ग्रीवा कण्ठनली के करीब।
ईश्वर उन्माद होने हेतु,
विशुद्धचक्र होता है नसीब।।

दोनों भौंहों के मध्य ठीक,
वहाँ सुषुम्ना की नाड़ी में।
षष्ठम आज्ञाचक्र अवस्थित,
रहता अन्दर उस नाड़ी में।।

साकार दर्शन पाने हेतु,
ये चक्र जागृत होता है।
ईश्वर दर्शन रसपान हेतु,
आज्ञाचक्र चालित होता है।।

सहस्रार है सबसे ऊपर,
ये काया का कैलाश है।
स्वयं शिव रहते हैं यहाँ,
सत–चित्–आनन्द विकास है।।

सर्वधर्म का सार है जैसे,
जागरण कुल कुंडलिनी का।
मुक्ति का आधार है वैसे,
कर्म मिलन शिव–शक्ति का।।

शिव–शक्ति यहाँ एक हो जाते,
सृष्टिबीज लय हो जाता है।
प्रकाश, चेतना, आनन्द मिल,
सत, चित्, आनन्द हो पाता है।।

सद्गुरु कृपा के फलस्वरूप ही,
कोई एक आत्मज्ञान पाता है।
बीजरहित समाधि में लय हो,
वह भवसागर पार हो जाता है।।

स्वतः होता है प्राणायाम,
समाधि लगने से पहले।
हर अंग फड़कने लगता है,
महावायु चलने से पहले।।

आत्मा है निर्गुण निराकार,
कभी नहीं कुछ भी करता है।
गुण ही बरतते हैं गुण में,
आत्मा कहाँ कुछ करता है।।

आत्म–अकर्ता ज्ञान होने से,
अहंकार खुद चला जाता है।
आत्मसाक्षात्कार होने से,
जीव भव पार हो जाता है।।

जन्म–जन्म का बन्धन सारा,
कट जाता है उस क्षण में।
आत्मा में परमात्मा का,
उदय हो जाता जिस पल में।।

आत्म–लौ मुरझा जाती है,
परमात्म सूर्य के आगे।
मैं ही शिव हूँ गूँजने लगता,
तब अन्तरात्मा में आ के।।

बस एक ही गूँज रह जाती है,
सत, चित्, आनन्द के आगे।
स्वयं काल भी खो जाता है,
उस परमानन्द में आ के।।

विकल्परहित समाधि का लाभ,
श्रीरामकृष्ण ने पाया था।
फिर पंचवटी के साये में,
छ : माह समाधि लगाया था ।।

सभी ज्ञान मुख से वर्णित हैं,
आत्मज्ञान न कोई कह पाया।
इसी से जूठे ज्ञान सभी हैं,
ये ज्ञान न जूठा हो पाया ।।

स्वामी विवेकानन्द ने भी,
इस आत्मज्ञान को पाया था।
अवाङ्मनसगोचरम् कहकर,
असमर्थता को जताया था।।

राधा विरह

षष्ठ पुष्प
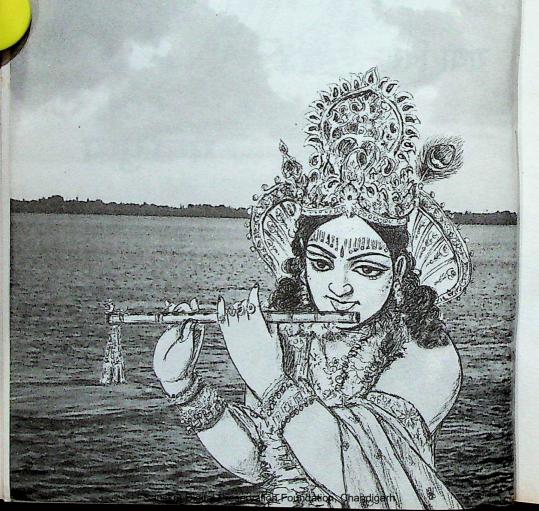
श्रीकृष्ण

राधा–विरह (षष्ठ पुष्प)

ले सन्देश मथुरा नरेश का,
अक्रूर पहुँचे मित्रनन्द के द्वार।
बुलवाया है मामा कंस ने,
श्रीकृष्ण–बलराम को एक साथ।।

बिलखने लगीं यशोदा मैया,
घबरा गये सुनकर नन्दराज।
जगत विदित है कंस–क्रूरता,
सुकुमार नील जलज नन्द के लाल।।

समाचार फैल गया ब्रज में,
जा रहे श्याम आज मथुरा।
बदहवास दौड़ पड़ीं राधा,
ना जाओ श्याम तुम मथुरा।।

अतिशय प्रिय हैं राधाजी को,
कृष्ण मुरारी नन्द के लाल।
नील सरोज सम रंग है उनका,
वो हैं यशोमती के सुख लाल।।

लेट गयीं उस पथ पर जाकर,
जाती थी जो मथुरा की ओर।
नहीं जाने देंगी श्याम को,
राधा आज मथुरा की ओर।।

दुखी हो गये ग्वाल–बाल सब,
रोने लगीं गोपियाँ ब्रज की।
सुबकने लगे वृद्ध सयाने,
बिलखने लगीं नारियाँ ब्रज की।।

बैठ गये ग्वाल–बाल सब,
गोकुल–मथुरा तिराहे पर।
लोट गयीं गोपियाँ वहाँ सब,
राधा के एक इशारे पर।।

ब्रज में सोहे राधा गोरी,
राधा को मोहे घनश्याम।
आदि पुरुष हैं श्यामबिहारी,
सबको मोहें राधेश्याम।।

कृष्ण के साथ अक्रूरजी जब,
पहुँचे उस खास तिराहे पर।
ग्वाल–बाल सब चढ़ गये रथ पर,
हाहाकार मच गया वहाँ पर।।

करने लगीं गोपियाँ अनुनय,
रोने लगे ग्वाल–बाल सब।
न ले जाओ कृष्ण को मथुरा,
करने लगे अनुनय वो सब।।

देख गोपियों की ये दशा,
चक्कर खा गये अक्रूरजी।
कैसे समझायें वो सबको,
अपनी अन्तर हृदय व्यथा।।

न जाने राधा ने कैसे,
देखा श्याम चकोर को।
भीग गये नयन दोनों के,
राम ही समझे दोनों को।।

अन्तिम घड़ी मिलन की थी,
शीघ्र विरह में बदल गयी।
श्याम चले गये मथुरा,
राधा मौन खड़ी रह गयीं।।

बरस रहे हैं नैन तभी से,
राधा रानी के दिन–रैन।
तड़प रही हैं राधा विरह में,
नहीं मिला फिर उनको चैन।।

जब से श्याम् गये हैं मथुरा,
भेजी नहीं है कोई खबरिया।
बरस रहे हैं नैन राधा के,
ज्यों बरसे सावन में बदरिया।।

हाट आनन्द की लगी हुई है,
श्रीरामकृष्ण के कमरे में।
गा रहे हैं गीत कीर्तनियाँ,
तड़प रही हैं राधा विरह में।।

कब आएंगे लौट के कृष्ण,
राह तक रहे राधा के नैन।
जागत–सोवत, उठत–बैठत,
यही रट रहे उनके बैन।।

देखकर आकाश ये नीला,
राधा को क्या हो जाता है।
श्याम–श्याम रटती रहती हैं,
क्या उनको भाव चढ़ जाता है।।

क्यों याद आ रहे हैं उनको,
श्याम–मिलन के पुराने दिन।
जमुना तट पर बैठ के उनके,
उनको मुरली सुनाने के धुन।।

कभी हँसने लगती हैं राधा,
कभी रोने लगती हैं राधा।
श्याम रंग है ही कुछ ऐसा,
बावरी हो गयी हैं राधा।

कहते हैं लोग कृष्ण प्रेम में,
राधा बावरी हो गयी हैं।
जब से सुनी है धुन बाँसुरी की,
राधा दीवानी हो गयी हैं।।

क्यों नजर चुराती थीं राधा,
कृष्ण के सामने आने पर।
क्यों शरमा जाती थीं राधा,
कृष्ण से नजर मिलाने पर।।

एक कृष्ण के चले जाने से,
गोकुल वीराना हो गया है।
जीवन का कोई अर्थ नहीं है,
व्यर्थ का जीवन हो गया है।।

शून्य में निहारती रहती हैं,
अब राधा अपने श्याम को।
हृदय में तलाशती रहती हैं,
अब वो अपने छविराम को ।।

श्याम–श्याम, जपते–जपते
राधा दीवानी हो गयी हैं।।
श्याम हो गये हैं राधा के,
राधा श्याम की हो गई हैं।।

मधुर कूक लगाती है कोयल,
क्यों आज भी जमुना के तीरे।
जहाँ खेला करते थे श्याम,
राधा के संग शाम–सबेरे।।

यही बातें अब हृदय में,
राधा के खटका करती हैं।
जमुना–तीरे अब राधा रानी,
कभी नहीं जाया करती हैं।।

देख मयूर को वन–उपवन में,
श्याम की याद आ जाती है।
मयूर पंख लगाते थे श्याम,
यही बात उन्हें सताती है।।

तरस रहीं राधा की अँखियाँ,
अपने गोविन्द के दर्शन को।
भीग गयी हैं पलकें उनकी,
न पाकर कान्हा दर्शन को।।

गौएं चराया करते थे,
कान्हा गोकुल के जंगल में।
वहीं बुलाया करते थे,
राधा को श्याम अकेले में।।

आज भी गौएं उसी वन में,
उसी तरह चरा करती हैं।
यही बात राधा के मन में,
नश्तर जैसी चुभा करती हैं।।

पेड़ पर चढ़ जाते थे श्याम,
राधा को संग में ले करके।
घंटो बातें किया करते थे,
हाथों को हाथ में ले करके।।

आज भी वो पेड़ वहीं हैं,
हरे–भरे उन वन–उपवन में।
याद दिलाते हैं श्याम की,
बैरी सम राधा के मन में।।

जब बाँसुरी बजाते थे श्याम,
अपने पैरों पर पैर रखकर।
राधा की गोद में सिर रखकर,
लेट जाते थे नेत्र बन्दकर कर।।

साक्षी है इन सब बातों का,
वन–उपवन और नीला–गगन।
साक्षी है हृदय राधा का,
साक्षी है ब्रज का हर चमन।।

यही बात राधा के मन में,
बहुत पीड़ा पहुँचाती है।
जब से श्याम गए हैं मथुरा,
उनको नींद नहीं आती है।।

काँप रही हैं राधा रानी,
काँप रहे हैं उनके ओठ।
देख रही हैं भीतर–बाहर,
जगमोहन को चारों ओर।।

जगमोहिनी हैं राधा रानी,
जगमोहन हैं माखनचोर।
जगमोहन–जगमोहिनी से ही,
जगमग–जगमग है चारों ओर।।

पनघट से पानी लाती थीं,
राधा रानी भरकर घट रोज।
फोड़ दिया था घट राधा का,
शरारती श्याम ने इक रोज।।

इसी बात से राधा के मन,
बना हुआ है गहरा क्षोभ।
फिर कब फोड़ेंगे घट उनका,
लौट के वापस नन्दकिशोर।।

खूब दही जमाया करती थी,
वो माखन निकालने को रोज।
चुरा लिया करते थे माखन,
राधा का कृष्ण माखनचोर।।

कौन खायेगा अब माखन,
अब किसके घर लड़ने जाऊँगी।
श्याम तो चले गये मथुरा,
अब किसको माखन खिलाऊँगी।।

इसीलिये अब राधा रानी,
दही कभी नहीं जमाती हैं।
माखनचोर की याद में वो,
हर समय आँसू बहाती हैं।।

जरा–जरा सी बात पर राधा,
माँ यशोदा के घर जाती थीं।
कान्हा को पिटवा कर उनसे,
राधा खूब मज़ा चखाती थीं।।

आज इसी बात से राधा के,
मन में उठतीं गहरी पीर है।
बिन कान्हा के जीवन उनका,
मानो बिना नीर के मीन है।।

रूठ जाती थीं अक्सर राधा,
कृष्ण की ढीठ शरारत से।
मज़ा आता था उसको खूब,
श्याम को उसे मनाने से।।

अब जब श्याम गये हैं मथुरा,
राधा को कौन सतायेगा।
अब किससे रूठेंगी राधा,
राधा को कौन मनायेगा।।

ये बातें भी राधा के मन,
बार–बार कष्ट पहुँचाती हैं।
अब न रूठेंगी श्याम से वो,
यही संकल्प दोहराती हैं।।

फूलों–सी महका करती थीं,
चिड़ियों–सी चहका करती थीं।
राधा कृष्ण के आने पर,
मयूर सी थिरका करती थीं।।

खूब सजा करती थीं राधा,
श्रीकृष्ण को दिखाने को।
सोलह श्रृंगार करती थीं वो,
मनमोहन को रिझाने को।।

बिंदिया लगाती थीं माथे पर,
नयनों में लगाती थीं कजरा।
चूड़ियाँ खनकातीं हाथों में,
बालों में सजाती थीं गजरा।।

हरी चूड़ियाँ मन भाती थीं,
श्याम को नीली साड़ी पर।
पीला रंग उनको भाता था,
गोरी ब्रज बाला के ऊपर।।

जब से किशन गये हैं मथुरा,
राधा ने श्रृंगार नहीं किया।
न कभी पहनी नीली साड़ी,
न ही बालों में कंघा किया।।

दूरी से ही दिख जातीं है,
ब्रजबाला की विरहन दशा।
केशव के ध्यान में डूबी,
राधा की अन्तर्मुखी दशा।।

सुनकर गीत राधा विरह का,
ठाकुर अन्तर्मुखी हो गये।
वाह्य क्रिया लुप्त हो गयी,
समाधि में वो स्थित हो गये।।

देख रहे हैं आज ठाकुर को,
भक्तगण अलौकिक स्वरूप में।
क्या चैतन्य अवतरित हुए हैं।,
श्रीरामकृष्ण के रूप में।।

आत्मज्ञानी थे ऊधौ बहुत,
समदर्शी थे हर सुख–दुख में।
इसीलिए भेजा कृष्ण ने,
देकर उनको हिदायत ब्रज में।।

बहुत दुखी हैं वहाँ गोपियाँ,
बहुत दुखी हैं ग्वाल–बाल।
राधा का तुम हाल न पूछो,
राधा का है हाल बेहाल।।

ऊधौ तुम हो प्रिय मित्र हमारे,
जानते हो तुम हृदय का हाल।
अब तुमसे अच्छा कौन मिलेगा,
समझाने वाला ज्ञान की बात।।

घबरा रहा है हृदय हमारा,
राधा का है स्वास्थ्य खराब।
बहुत भावुक हैं राधारानी,
नहीं जानतीं ज्ञान की बात।।

तुम जाकर उसको समझा दो,
आत्मा है अभेद, बता दो।
मेरे वश की बात नहीं है,
तुम ही जाकर कुछ समझा दो।।

नारायण हैं उसके ह्रदय में,
जो घट–घट में व्याप रहे।
फिर क्यों व्याकुल हैं राधा,
जब नारायण उसके साथ रहे।।

ऊधौ बोले कृष्ण से मित्र,
तुम अपने मन को शान्त करो।
अभी जाता हूँ ब्रज को मैं,
तुम घर जाकर विश्राम करो।।

समझ जायेंगे, ग्वाल–बाल सब,
समझ जायेंगी गोपियाँ भी।
ज्ञान–प्रकाश डालूँगा जब मैं,
मिट जायेगा अज्ञान तभी।।

आँच ज्ञान की लगने से,
भक्ति गोरस गल जायेगी।
ज्ञान–सूर्य उदय होने से,
अज्ञान–कालिमा छट जायेगी।।

ऊधौ के मन अहंकार था,
आत्मज्ञान के होने का।
निर्गुण, निराकार है ब्रह्म
फिर भक्ति से क्या होने का।।

चल दिये ऊधौ ब्रज की ओर,
करके मन में दृढ़ संकल्प।
ज्ञान का दीप जलाकर आज,
भक्ति का मिटा देंगे विकल्प।।

भूल जायेंगी कृष्ण को राधा,
भूल जायेंगी गोपियाँ भी।
मिट जायेगा उन्माद उनका,
जब देख लेंगी ज्ञान का द्वार भी।।

जैसे पहुँचे ऊधौ गोकुल के पास,
फैल गया समाचार आस–पास।
आये हैं कृष्ण के सखा–सहायक,
ऊधौ ज्ञानी महानायक आज।।

घिर गये मार्ग में ही ऊधौ,
ग्वाल–बाल और गोपियों से।
पूछने लगे हाल माधव का,
मिलकर ग्वाल–बाल ऊधौ से।।

किस–किस को याद करते हैं वो,
किस–किस को भूल गये हैं वो।
क्यों नहीं आये वापस अब तक,
कैसे हैं दूर हम सबसे वो।।

क्या खाते हैं क्या पीते हैं,
कहाँ रहते हैं कहाँ सोते हैं।
सुबह से शाम तक मथुरा में,
माधव क्या–क्या किया करते हैं।।

कुछ ही दिन बीते यहाँ से,
कृष्ण गये हैं मथुरा में।
पर लगता है हमको जैसे,
युग बीत गये हैं इन्तज़ार में।।

एक–एक पल उनके विरह का,
हम पर युग–युग जैसा भारी है।
राधा जी का हाल न पूछो,
विरह उन पर सबसे भारी है।।

बीमार हो गयी हैं राधा,
कृष्ण की विरह–वेदना में।
किसी से बात नहीं करती हैं,
चुपचाप पड़ी हुई हैं घर में ।।

लगता है चन्द दिन में ही,
राधा शरीर छोड़ देंगी।
कृष्ण न आये वापस गर तो,
वो जग से नाता तोड़ लेंगी।।

जब रहते थे गोविन्द यहाँ,
राधे–राधे किया करते थे।
राधा के आगे पीछे वो,
दिन और रात फिरा करते थे।।

क्या भूल गये हैं कृष्ण वहाँ,
अपनी प्यारी अनुराधा को।
हम सबकी बातें क्या कहिए,
जब भूल गये हैं वो राधा को।।

इतने निष्ठुर घनश्याम न थे,
जब रहते थे अपने गोकुल में।
मथुरा जाकर निष्ठुर हो गये,
क्यों नहीं लौटे वापस कुल में।।

हाल बुरा है रो–रो कर,
नन्द और यशोदा मैया का।
दिन रात बहाते हैं टेसू ,
स्वास्थ्य ठीक नहीं है उनका।।

खुद क्यों नहीं आये हैं कृष्ण,
क्यों आपको है भेज दिया।
किसी विपत्ति में फँस गये हैं,
या आपने ही न आनें दिया।।

हम सब अपने प्राण देकर भी,
श्रीकृष्ण की रक्षा कर लेंगे।
गर विपत्ति में हैं माधव तो,
हम अभी साथ में चल देंगे।।

क्या उनसे हम मिल सकते हैं,
क्या आपके साथ चल सकते हैं।
बिन कृष्ण के निर्जीव हैं हम,
आप प्राण प्रतिष्ठा कर सकते हैं।।

देख भक्ति की उन्माद दशा,
खुल गये ऊधौ के हृदय–द्वार।
निर्गुण आत्मा के मिल गये,
अवतार में उनको एक आधार।।

बहने लगी झड़ी आँखों से,
सावन–भादों की बरसात।
आत्मज्ञान वो भूल गये,
करने लगे भक्ति की बात।।

बोले, कृष्ण को समझाना है,
उनको गोकुल वापस लाना है।
जिस काम से आया था यहाँ,
उसी काम से वापस जाना है।।

राधा का हाल अभी ही मुझे,
कृष्ण को जाकर बताना है।
डूब जायेंगे प्राण राधा के,
उनको आकर उसे बचाना है।।

आया था मैं तत्व ज्ञान से,
राधा रानी को समझाने।
समझ गया हूँ तत्व मैं सारा,
कृष्ण को राधा ही पहचाने।।

ज्ञान के अहंकार में डूबा,
इतरा रहा था इधर–उधर।
अब ज्ञान मिला है मुझको सच्चा,
अब न भटकूँगा इधर–उधर।।

अनुग्रह करके श्रीकृष्ण ने,
भेजा मुझको कुछ पाने को।
डूबा था अहंकार में मैं,
इसी से निजात दिलाने को।।

आज से शिष्य बन गया हूँ मैं,
गोकुल के सब ग्वाल–बाल का।
ज्ञान–विज्ञान से भी बढ़कर मैं,
मर्म जान गया हूँ भक्ति का।।

कौन हैं राधा, कौन कृष्ण,
कौन हैं गुरु, कौन शिष्य।
शिव–शक्ति का खेल है सारा,
राधा कहो या पुकारो कृष्ण।।

जगत जननी हैं राधा रानी,
जगत आधार हैं उनके श्याम।
नारायणी हैं राधा रानी,
नारायण हैं उनके घनश्याम।।

मित्र होकर भी कृष्ण का,
क्यों जान न पाया मैं उनको।
जानते हैं सब ग्वाल–बाल,
क्यों मैं ही न जान पाया उनको।।

क्षमा चाहता हूँ आप सबसे,
अहंकार की धृष्टता को।
चौंधिया गया था ज्ञान से मैं,
इसी से समझ न पाया भक्ति को।।

राधा की शक्ति का अंदाज,
कृष्ण भी नहीं लगा सकते हैं।
हम जीवों की बिसात ही क्या,
शिव भी नहीं जान सकते हैं।।

नारायणी हैं सारे जग की,
नारायण की हैं सहचरी।
गोविन्द की हैं राधा रानी,
वो महादेव की आदि सती।।

चरण धूलि लेकर राधा के,
लौट गये ऊधौ मथुरा की ओर।
भक्ति का ऐश्वर्य जो देखा,
भूल गये ऊधौ ज्ञान का शोर।।

जय जय राधे , जय जय राधे,
जय राधे ,जय राधे श्याम।
जय जय राधे, जय जय राधे,
जय मनमोहन–राधेश्याम।।

लौट कर जब पहुँचे ऊधौ,
सुनकर कृष्ण आये धाये।
क्या है हाल राधा का,
ये समाचार लेने आये।।

लिपट गये ऊधौ से कृष्ण,
पूछने लगे हाल राधा का।
रुक न पाये आँसू उनके,
सुनकर समाचार राधा का।।

राधा हैं कृष्ण हृदय में,
बिन राधा कृष्ण हैं कहाँ।
कृष्ण हैं राधा हृदय में,
बिन कृष्ण राधा हैं कहाँ।।

व्यथित हो गया मन उनका,
हाल जान अपनी राधा का।
डूब गये कृष्ण समाधि में,
मिलन हो गया उनसे राधा का।।

सुनकर ऊधौ–कृष्ण संवाद,
वाह–वाह कर रहे हैं ठाकुर।
क्या ज्ञान पर भक्ति भारी है,
यही समझा रहे हैं ठाकुर।।

ज्ञान है पुरुष, भक्ति है नारी,
दोनों में हैं अंतर भारी।
पुरुष पहुँच सकता बैठक तक,
नारी पहुँच जाती है भीतर।।

खोज रही हैं राधा रानी,
भरे भुवन में किसको दिन–रैन।
हाथ पैर ठंडे हो गये हैं,
उलट गये हैं उनके नैन।।

विरह की वेदना है असीम,
कह पाना उसको है कठिन।
वही समझ सकता है इसको,
जिसने काटे विरहा के दिन।।

गिन रही हैं साँस आखिरी,
राधा श्याम के विरह में।
एक बार आ जाओ श्याम,
अन्तिम इच्छा यही हृदय में।।

पथरा गयी हैं आँखें उनकी,
डब–डबा रहे हैं उनके नैन।
इन्तज़ार है श्याम का उनको,
क्या देख पाएँगे उनको नैन।।

श्याम–श्याम रटते–रटते,
निकल गये राधा के प्राण।
विरह वेदना सहते–सहते,
छोड़ दिये राधा ने प्राण।।

आदि शक्ति हैं राधा रानी,
आदि पुरुष हैं उनके श्याम।
जय माँ राधे,जय माँ राधे,
जपते जाओ राधेश्याम।।

श्याम रंग मोहे राधा को,
राधा को श्याम रंग मोहे।
श्याम को मोहे राधा गोरी,
गोरी राधा श्याम को मोहे।।

रंग नीला–पीला मिलकर,
ज्यों रंग हरा हो जाता है।
राधा–श्याम के मिलन से,
ब्रज हरा–भरा हो जाता है।।

बैठ श्याम यमुना के तीरे,
क्यों बुला रहे हैं राधा को।
बजा रहे हैं बांसुरी की धुन,
क्यों सता रहे हैं राधा को।।

श्याम रंग चढ़ गया है,
यूँ गोरी राधा के ऊपर।
काला रंग चढ़ जाता है,
ज्यों कोरे कागद के ऊपर।।

बदनाम कर दिया है जग में
श्याम निगोड़े ने राधा को।
काम बड़ा कर दिया है जग में,
जगप्रसिद्ध करके राधा को।।

जय जय राधे, जय जय राधे,
जय राधे, जय राधेश्याम।
जय जय राधे, जय जय राधे,
जय मधुसूदन, राधेश्याम।।
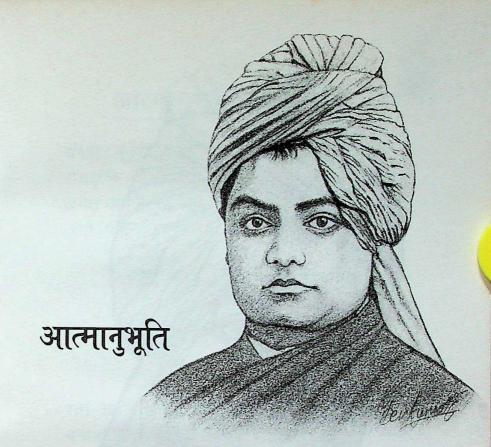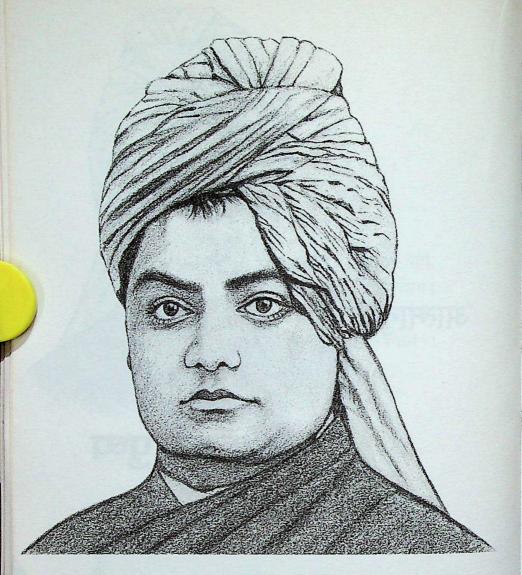
आत्मानुभूति

सप्तम पुष्प

कठिन नहीं है मोक्ष पाना,
गर कर सकें कुछ हरि–जन के लिए ।
कृपा ये हरि–हर की होगी,
जो कुछ कर सकें हर–जन के लिए ।।

आत्मानुभूति (सप्तम पुष्प)

संसार कुटिया आनन्द की,
रामकृष्ण ऐसा कहते थे।
जगत जननी को मान आधार,
खाते–पीते मौज करते थे।।

उमड़ते–घुमड़ते बादलों को,
बनाया है माँ ने किसके लिए।
गरजते–बरसते बादलों को,
बरसाया है माँ ने किसके लिए।।

सन–सन चलती बहती हवा को,
बनाया है माँ ने किसके लिए ।
जाड़े की सुनहरी धूप को,
सँवारा है माँ ने किसके लिए।।

पृथ्वी सूर्य तारे आदि नक्षत्र,
घूमते धुरी पर किसके लिए।
कर रहे परिक्रमा ये नक्षत्र सभी,
आखिर संसार में किसके लिए।।

आकाश–गंगा को आखिर,
बनाया है माँ ने किसके लिए।
धरती–पाताल और गगन को,
सजाया है माँ ने किसके लिए।।

जग समझ सके उनकी करुणा को,
शायद रानी माँ ने इसीलिए।
बनाया है विश्व–ब्रह्माण्ड को,
शायद माँ ने मेरे ही लिए।।

धरती पर उगे इन पेड़ों को,
मैं नित्य निहारा करता हूँ।
हरे–भरे इन वन उपवन में,
मैं माँ को पुकारा करता हूँ।।

देख–देख उनकी कलाकृति,
मैं मुस्कुराया करता हूँ।
देख महामाया की माया,
मैं गुनगुनाया करता हूँ।।

निहार शोभा वन–उपवन की,
कितना गदगद हो जाता हूँ।
देख हरियाली वन–उपवन की,
कितना प्रसन्न हो जाता हूँ।।

हरे–भरे इन वन–उपवन को,
बनाया है माँ ने किसके लिए।
धरती पर उगे इन पेड़ों को,
उगाया है माँ ने किसके लिए।।

समझ सकूँ उनकी माया को,
शायद रानी माँ ने इसीलिए।
बनाया है इन वन–उपवन को,
शायद माँ ने मेरे ही लिए।।

गर्व से मस्तक उठाये हुए,
धरा से गगन को मिलाए हुए।
खड़े हुए हैं पर्वत अपनी,
बाहों में जड़–बूट छिपाए हुए।।

गिरि–कंदराओं में अपने,
ऋषि–मुनियों को बसाये हुए।
सरिता का जल सूक्ष्म रूप से,
अपने हृदय में समाये हुए।।

जंगलों और घाटियों को,
नाभि में अपने बसाये हुए।
फूलों की घाटी , सोंधी माटी,
मधुछत्तों को उठाये हुए।।

ना जाने कितने तीर्थों को,
आगोश में अपने बसाये हुए।
सदियों –सदियों से भी पहले से,
अगनित गुणों को छुपाये हुए।।

पिता का प्यार, माँ की ममता,
हृदय में अपने बसाये हुए।
खड़े हुए हैं तन कर ये पर्वत,
गर्व से मस्तक उठाये हुए।।

जंगल–घाटी, पर्वत–पाटी,
बनाया है माँ ने किसके लिए।
फूलों की घाटी, सोंधी माटी,
बनाया है माँ ने किसके लिए।।

कर सकूँ तपस्या मैं माँ की,
शायद रानी माँ ने इसीलिए।
बनाया है गिरि–कंदराओं को,
शायद माँ ने मेरे ही लिए।।

नीले–पीले, रंग–बिरंगे,
खिलते हुए इन पुष्पों को।
हवा में इतरा–इतरा कर,
मस्ती में झूमते पौधों को।।

कोमल–कोमल, सुन्दर–सुन्दर,
हवा में बलखाते पुष्पों को।
एक–दूसरे के लब चूमते,
इन रंग–बिरंगे फूलों को।।

सुन्दर कोमल इन पुष्पों को,
बनाया है माँ ने किसके लिए।
हवा में इठलाते पुष्पों को,
खिलाया है माँ ने किसके लिए।।

चढ़ा सकूँ उनके चरणों पर,
शायद रानी माँ ने इसीलिए।
बनाया है कोमल पुष्पों को,
शायद माँ ने मेरे ही लिए।।

परहित का पाठ पढ़ाने को,
जन--जन की प्यास बुझाने को।
खेतों में फसल उगाने को,
जन, जीव, जन्तु के नहाने को।।

जनजीवन मधुर बनाने को,
सबको स्वर्ग पहुँचाने को।
बहती है सरिता धरती पर,
धरती को स्वर्ग बनाने को।।

कल--कल झरनों की मधुर ध्वनि,
जन--जन को गीत सिखाती है।
छल--छल नदियों की नादध्वनि,
मन को अन्तर्मुखी बनाती है।।

कल–कल बहते इन झरनों को,
संगीत सिखाया है किसके लिए।
छल–छल बहती इस नदिया को,
बनाया है माँ ने किसके लिए।।

चढ़ा सकूँ उनके चरणों में,
शायद रानी माँ ने इसीलिए।
बनाया है जल सुरसरिता का,
शायद माँ ने मेरे ही लिए।।

जंगली आवारा पालतू,
नरभक्षी खुंखार पशुओं को।
कीड़े–मकोड़े, साँप–बिच्छू,
इन अद्भुत–अद्भुत जीवों को।।

नरभक्षी खुंखार पशुओं को,
बनाया है माँ ने किसके लिए।
अद्भुत–अद्भुत इन जीवों को,
बनाया है माँ ने किसके लिए।।

समझ सकूँ उनकी लीला को,
शायद रानी माँ ने इसीलिए।
बनाया है इन पशुओं को,
शायद माँ ने मेरे ही लिए।।

कलरव करते नील गगन में,
नाना भाँति के नाना पंछी।
रंग–बिरंगे दिखते हैं जो,
नभ में उठते–उड़ते पंछी।।

सुन–सुनकर जिनकी मधुर ध्वनि,
मन–मयूर मगन हो जाता है।
कोयल की मधुर कूक से जग,
मानों विस्मित हो जाता है।।

आत्मप्रतिध्वनि सी लगती है,
चीं–चीं गौरेया की बोली।
कितनी मीठी सी लगती है,
इन चिड़ियों की मीठी बोली।।

दूर देश से आतीं चिड़ियाँ,
दाना चुग कर जातीं चिड़ियाँ।
चीं–चीं करके मुझे रिझातीं,
बातों से बहकातीं चिड़ियाँ।।

कभी–कभी अपने संग में,
बच्चों को भी लातीं चिड़ियाँ।
अपनी चोंच में दाना चुगकर,
उनको खूब चुगातीं चिड़ियाँ।।

चीं–चीं करती इन चिड़ियों को,
चीं–चीं सिखलाया है किसके लिए।
चूँ–चूँ करते इन पंछियों को,
बनाया है माँ ने किसके लिए।।

समझ सकूँ संगीत–माधुरी,
शायद रानी माँ का इसीलिए।
बनाया है इन पंछियों को,
शायद माँ ने मेरे ही लिए।।

इतराती लाखों प्रकार की,
जल में लाखों लाख मछलियाँ।
बलखाती लाखों प्रकार की,
जल में रंग–बिरंगी मछलियाँ।।

रंग–बिरंगी इन मछलियों को,
जल में बसाया है किसके लिए।
जल में इतराती मछलियों को,
बनाया है माँ ने किसके लिए।।

समझ सकूँ अगनित रंगों को,
शायद रानी माँ ने इसीलिए।
बनाया है इन मछलियों को,
शायद माँ ने मेरे ही लिए।।

कितना अद्भुत है संसार,
कितना अद्भुत है ब्रह्माण्ड।
बनाया है इस ब्रह्माण्ड को,
आखिर माँ ने किसके लिए।।

भोग सकूँ ऐश्वर्य उनका,
शायद रानी माँ ने इसीलिए।
बनाया है इस ब्रह्माण्ड को,
शायद माँ ने मेरे ही लिए।।

मेरे लिए माँ की गोद है,
ये अद्भुत ब्रह्माण्ड सारा।
मेरे लिए माँ का आँचल है,
नीला ये नभ मंडल प्यारा।।

इसी से खेलता हूँ लेकर,
जीवन का आनन्द न्यारा।
चला जाऊँगा छोड़कर एक दिन,
माँ की पुकार पर जग सारा।।

नहीं लौट कर इस धरती पर,
फिर आऊँगा मैं दोबारा।
जनम–मरण का खेल न्यारा,
समझ चुका हूँ रहस्य सारा।।

इसी से हँसकर छोड़ जाऊँगा,
जनम–मरण का खेल न्यारा।
नहीं लौटकर फिर आऊँगा,
मैं इस धरती पर दोबारा।।

मेरे लिए खत्म हो रहा,
जीवन–मरण का चक्र सारा।
मेरे लिए मानों खुल रहा,
द्वार अनन्त मुक्ति का न्यारा।।

रात की काली–कालिमा,
उतर रही है आकाश से।
भोर का है शुभ्र उजाला,
फैल रहा है चिदाकाश से।।

आत्मरूपी सूर्य का उदय,
अब अपने हृदय में हो चुका।
परमात्मा से आत्मा का,
अन्तर में मिलन हो चुका।।

मैं ही शिव हूँ ,मैं ही शिव हूँ ,
जान चुका अपने अन्तर में।
मोक्ष का आधार है ये ज्ञान,
मान चुका अपने मनांतर में।।

सहस्त्र कमलदल
स्वामी विवेकानन्द
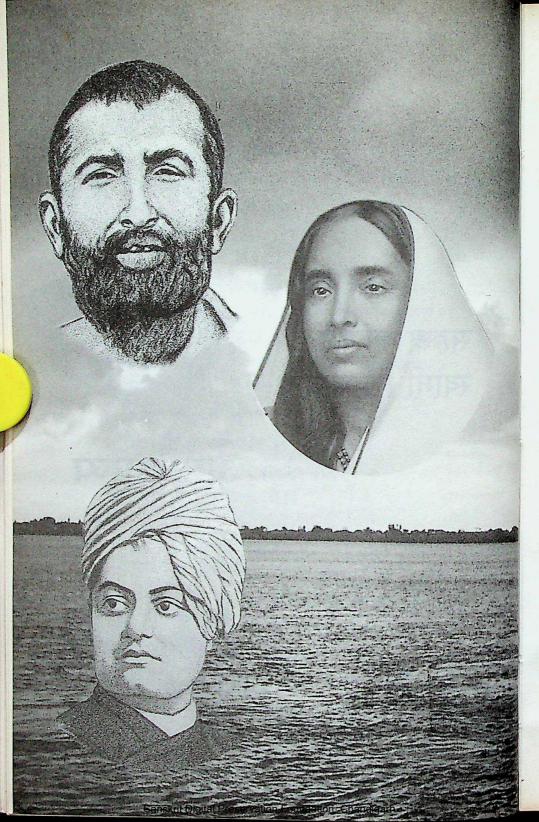
अष्टम पुष्प

सहस्त्रकमलदल स्वामी विवेकानन्द

(अष्टम पुष्प)

श्री विश्वनाथ भार्या ने,
दिया जन्म एक बालक को।
महादेव की कृपा स्वरूप,
इस युग के महानायक को।।

12 जनवरी 1863 ई० दिन,
ऐतिहासिक सोमवार का।
जन्मदिन है ये इस युग के,
नायक श्रीनरेन्द्र नाथ का।।

माँ हैं भुवनेश्वरी देवी,
पिता हैं श्री विश्वनाथ दत्ता।
युगनायक हैं सपूत उनके,
श्री नरेन्द्र नाथ दत्ता।।

3,गौर मोहन मुखर्जी स्ट्रीट,
कोलकाता के एक मकान में।
जन्मे थे महानायक युग के,
नरेन्द्र नाथ उस मकान में।।

अवतरण

पुत्र विश्वनाथ के होते ही,
पितामह श्री दुर्गाचरण ने।
त्याग गृह लिया था संन्यास,
छोड़ कर सब ईश्वर शरण में।।

बहुत कुछ मिलता–जुलता था,
चेहरा उनसे नरेन्द्र का।
तेज था चेहरे पर उनके,
जैसा तेज था नरेन्द्र का।।

विश्वनाथ थे एटार्नी एट लॉ,
कोलकाता के हाईकोर्ट के।
अंग्रेजी–पर्शियन साहित्य के,
ज्ञाता थे वो उच्च श्रेणी के।।

बड़ा उदार था हृदय उनका,
सदैव साधु–भिक्षुकों के प्रति।
क्या दें कब किसको नरेन्द्र,
सजग रहते थे उनसे सभी।।

बड़ा आकर्षक लगता था,
उनको कोचवान गाड़ी का।
चमकीले वस्त्रों से सुसज्जित,
साफा फुर्रेदार पगड़ी का ।।

भाव भंगिमा से नरेन्द्र के,
तेज झलकता था बिल्कुल वैसे।
चमक रहा हो स्वच्छ क्षितिज में,
कोई प्रचंड मार्तण्ड जैसे।।

ब्रह्म मुहूर्त की बेला में,
जन्म हुआ था नरेन्द्र का।
उदित मार्तण्ड के समान,
उदय हुआ था नर–इन्द्र का।।

अन्धेरे के गर्भ से जैसे,
उजाला प्रकट हो जाता है।
उदय काल में उदय से पहले,
उजाला स्पष्ट हो जाता है।।

चहचहाने लगते हैं पंछी,
अपने–अपने स्थानों पर।
कूकने लगती हैं कोयल,
बैठे–बैठे ही डालों पर।।

काँव–काँव करते हैं कौवे,
अपने–अपने स्थानों से।
पर उड़ते नहीं आकाश में,
इस वक्त पंछी ठिकानों से।।

सुबह–सुबह इनकी चहचाहट,
संगीत लहरी सी लगती है।
भोर की बेला में ये ध्वनि,
आत्म–प्रतिध्वनि सी लगती है।।

गौरैया, चील, कौवे आदि,
जब उड़ने लगते हैं नभ में।
फुदकने लगते हैं पंछी जब,
घर–आंगन के चौबारे में।।

गुटुर–गूँ गुटुर–गूँ करते हैं,
कबूतर उतर कर आंगन में।
पाने हेतु दाना–पानी,
गुहार लगाते हैं घर–घर में।।

ब्रह्म मुहूर्त की बेला में,
ब्रह्म का मुहूर्त होता है।
ध्यान लगाने से इसमें,
ब्रह्म दर्शन ही होता है।।

उदय दिशा में स्वर्ण दिनकर,
जब उदित होकर इठलाता है।
तब नई चुस्ती–फुर्ती के साथ,
जग को चैतन्य पहुँचाता है।।

ब्रह्म मुहूर्त में ही नरेन्द्र,
नित्य ध्यान किया करते थे।
तत्पश्चात् ही वो कोई और,
जग का कार्य किया करते थे।।

आत्मज्ञान

भागते हुए काशीपुर पहुँचे,
नरेन्द्र रामकृष्ण के पास।
बहुत व्याकुल था हृदय उनका,
चाहते थे कुछ आज वो खास।।

अकुला रहा था हृदय उनका,
आत्मसाक्षात्कार हेतु।
ठाकुर सदृश्य गुरु नहीं था,
फिर भी थे प्यासे किस हेतु।।

शय्याग्रस्त थे रामकृष्ण,
फिर भी जान गये सब बात।
पूछा नरेन्द्र से उन्होंने,
चाहता क्या है रे तू आज।।

बोले नरेन्द्र ठाकुर से,
आपसे है मुझको बस एक आस।
दिलवा दें निर्विकल्प समाधि,
डूब जाऊँ उसमें दिन और रात।।

बोले ठाकुर नरेन्द्र दत्त से,
धिक्कार है तेरी सोच पर आज।
वटवृक्ष होकर क्यों सोच रहा,
तू केवल अपनी मुक्ति की बात।।

बोले नरेन्द्र सम्भव नहीं,
बिन ज्ञान मन शान्त हो जाए।
बिन शान्ति सम्भव नहीं मुझसे,
काज कोई माँ का हो पाए।।

ठाकुर बोले कहता क्या है,
माँ का कार्य न हो पाये।
हाड़ करेंगे कारज तेरे,
तू चाहे कुछ न कर पाये।।

निरुत्तर हो गये नरेन्द्र,
पुनः की याचना हो कातर।
बस एक बार करवा दे मुझको,
परम आत्मा का साक्षात्कार।।

बाद में अप्रत्याशित रूप से,
हुआ उनके साथ कुछ ऐसे।
एक दिन डूब गये नरेन्द्र,
निर्विकल्प समाधि में जैसे।।

भीतर विराजमान हैं शिव,
हम उनको जग में ढूँढ़ रहे।
बार-बार चोला बदला,
पर आत्मा में वो सदा रहे।।

देखकर स्व अपना नरेन्द्र,
आश्चर्यमय हर्ष में डूब गए।
आत्मसाक्षात्कार हुआ जब,
अपना स्वरूप देख झूम गए।।

आत्मा–परमात्मा मिल गए,
भेद बुद्धि स्वतः नष्ट हो गई।
कर्ताभाव चला गया उनका,
अहंकाररहित बुद्धि हो गई।।

अकर्ता ज्ञान मिल गया उनको,
स्वतः जीवन मुक्ति मिल गयी।
बोझ सारा हट गया उनका,
रात घोर अंधेरी छँट गयी।।

प्रज्ज्वलित अग्नि में जैसे,
नम तना भस्म हो जाता है।
ज्ञान प्रज्ज्वलित होने पर,
पूर्व कर्म विनष्ट हो जाता है।।

आत्मज्ञान मिलने से उनको,
भेद बुद्धि भेद रहित हो गई।
ईर्ष्या वैमनस्य मिट गये,
प्रतिस्पर्धारहित बुद्धि हो गई।।

ज्ञान की धारा बह निकली,
अज्ञान अँधेरा लुप्त हुआ।
गुरु का दायित्व पूर्ण हुआ,
नरेन्द्र आत्मानन्द हुआ।।

जय माँ अम्बे, जय माँ काली,
शरणागत माँ शरण तिहारी।
शंकर शिव गुरुदेव पुरारी,
शरणागत शिव शरण बिहारी।।

कन्याकुमारी में समाधी

भंग हो गयी समाधि उनकी,
तीन दिन यूँ ही समाप्त हुए।
देख दुर्दशा अपने जन की,
श्रीविवेकानन्द बेहाल हुए।।

जानी–पहचानी सूरतें,
दरिद्रता में हैं पल रहीं।
भूख से अकुला–अकुला कर,
दाने–दाने को तरस रहीं।।

माँगने को दूध बच्चे,
अपनी माता से डर रहे।
नहीं माँगते दूध मगर वो,
अर्न्तमन से कहर रहे।।

खून चूसते गरीबों का,
कुछ एक धनी इतरा रहे।
कर नकल अंग्रेजों की वो,
आप ही में इठला रहे।।

त्याग कर संस्कृति अपनी,
वो इसको ढोंग बता रहे।
बन ईसाई नाम के आगे,
वो अपने पोप लगा रहे।।

चौंक पड़ा वो महावीर,
ये कैसा आघात हुआ।
गंगा, जमुना, सरस्वती के,
देश में कैसा अकाल हुआ।।

डूब गये गहन समाधि में,
श्री स्वामी विवेकानन्द।
लगे खोजने अन्तर में वो,
कैसे हो समस्या का अन्त।।

नर ही नारायण होता है,
इस वैदिक मंत्र का जाप किया।
फिर क्यों अपनी मुक्ति से ही,
सिर्फ अपना ही उद्धार किया।।

अन्तर मन से पूछ उठा वो,
क्या मेरा कार्य खत्म हुआ।
रामकृष्ण के आदर्शों का।
गरीबों को क्या लाभ हुआ।।

गरीबों से लेकर अन्न,
अपने तन की क्षुधा मिटा।
साधन करते संन्यासी,
इन्हीं को क्यूँ धता बता।।

रहने को घर नहीं जिनके,
उनको ये स्वर्ग दिखाते हैं।
पहनने को वस्त्र नहीं जिनके,
उनको ये त्याग सिखाते हैं।।

भूखे भजन न हो गोपाला,
क्यों नहीं हम समझ पाते हैं।
इन भूखे नंगों को हम क्यूँ,
ऐसे प्रलोभन दिखाते हैं।।

करके रामकृष्ण को ध्यान,
ले लिया संकल्प उन्होंने।
दे दिया दिशा दिशाओं को,
संन्यासी को ये सिखा दिया।।

मानव से तुम दूर नहीं,
मानव को तुम प्यार करो।
जंगल में खोजते हो जिसको,
उसका यहाँ दीदार करो।।

भूखे-नंगे से दिखते हैं,
पर ये नर नहीं नारायण हैं।
इनकी दरिद्रता पे न जाओ,
यही तो दरिद्रनारायण हैं।।

इसी सोच को मन में रखकर,
विवेकानन्द ने काम किया।
देश–विदेश जहाँ से हुआ,
बस इनके हित का काज किया।।

ईश्वर नहीं हैं दूर कभी भी,
अपने किसी भी मानव से।
चाहते हो जिस ब्रह्म को तुम,
वो अलग नहीं हैं मानव से।।

मानव प्रेम ही बस मार्ग है,
उस ब्रह्म तक पहुँचने का।
घट–घट मे जो व्याप रहा,
उस परम सत्य तक पहुँचने का।।

जय माँ अम्बे,जय माँ काली,
शरणागत माँ शरण तिहारी।
शंकर शिव गुरुदेव पुरारी,
शरणागत शिव शरण बिहारी।।

विश्वधर्म महासभा, शिकागो

आए फरिश्ता कोई जैसे,
आए नरेन मंच पर वैसे।
देखने लगे सभी उन्हीं को,
मंत्रमुग्ध हो जाने कैसे।।

आकर खड़े हुए नरेन्द्र,
विश्व धर्म सभा के मंच पर।
भरा हुआ था हॉल खचाखच,
नजर टिकी थी सभी की उन पर।।

लाल साफे ,नीले कुर्ते में,
नरेन्द्र थे वैसे सजे हुए।
बैठा हो कोई सजा दूल्हा,
जैसे घोड़ी पर चढ़े हुए।।

भूल गये सब नरेन्द्र वैसे,
होश खो गया हो उनका जैसे।
समझ नहीं पाये वो कैसे,
हो गया उनके साथ ऐसे।।

करने लगे स्तुति नरेन्द्र,
वीणावादिनी सरस्वती की।
ज्ञानदायिनी मनमोहिनी,
प्रदात्री उस परम गति की।।

प्रसन्न हो गयीं सरस्वती,
उनकी प्रार्थना अनुनय से।
रख दिया कर शीश पर उनके,
वीणावादिनी ने विनय से।।

ओज भरा था मधुर वाणी में,
उनके खूब सच्चिदानन्द ने।
तेज भरा था ब्रह्मचर्य का,
उनके मुख पर परमानन्द ने।।

सुनकर ब्रदर्स एण्ड सिस्टर्स,
गदगद हो गये सब नर–नारी।
उनके इस पवित्र सम्बोधन से,
खुश हो गये अमरिकावासी।।

ब्रह्मचारी थे नरेन्द्र दत्त,
तेज था उनमें भरा हुआ।
दर्प शून्य उनके मुख पर,
दर्प था जैसे छुपा हुआ।।

बजने लगीं तालियाँ जोर से,
उनके सम्मान में सब ओर से।
उठ–उठ खडे हो गये लोग वहाँ,
उनके स्वागत में हर ओर से।।

सम्मोहित हो गए लोग वहाँ,
श्रीविवेकानन्द के रूप से।
नतमस्तक हो गए लोग वहाँ,
उनके उस अलौकिक स्वरूप से ।।

ओज भरा था उनकी वाणी में,
सुनकर जिसे मुग्ध हो गए सभी।
पावनता थी ब्रह्मचर्य की,
देख जिसे मगन हो गये कवि।।

अभी–अभी आकाश से जैसे,
उतरा हो कोई फरिश्ता वैसे।
आये मंच पर स्वामी ऐसे,
प्रकट हो कोई देवता जैसे।।

तत्पश्चात् हुआ वहाँ जो,
वाकिफ है उससे सारा संसार।
हिला दिया जड़ से दुनिया को,
चकित रह गया विश्व समाज।।

जय माँ अम्बे ,जय माँ काली,
शरणागत माँ शरण तिहारी।
शंकर शिव गुरुदेव पुरारी,
शरणागत शिव शरण बिहारी।।

स्तुति

विश्व धर्म सभा के मंच पर,
उभरे तुम बनकर अग्निशिखा।
चन्द दिन में ही फैल गये तुम,
दावानल अग्नि सम चहुँ दिशा।।

गिरों–पड़ों को तुम सँभारो,
गुरुवर तुम हमका उबारो ।
देश–विदेश मा सबका तारो,
बन हनुमन्त तुम लंका जारो।।

महारात्रि का सन्देश

कोलकाता में भी सब लोग,
दीपावली पर्व मनाते हैं ।
सजधज कर नये परिधानों में,
फुलझड़ी–पटाखे छुड़ाते हैं।।

प्यार का दीप जलाकर तुम,
खुशियों की फुलझड़ी छुड़ाओ।
लेकर साथ में सबको तुम,
इस वर्ष दिवाली मनाओ।।

कुछ दीप जलाओ इस ढंग से,
आ जाये जिन्दगी में बहार।
कुछ फूल खिलाओ इस ढंग से,
महक जाये सारा संसार।।

दीप से दीप जल उठें आप,
संवर जाये सारा संसार।
खिल जायें कलियाँ बाग की,
महक जाये सबका घर–बार।।

जय माँ अम्बे, जय माँ काली,
शरणागत माँ शरण तिहारी।
शंकर शिव गुरुदेव पुरारी,
शरणागत शिव शरण बिहारी।।

ॐ

ओंकार शब्द की महिमा को,
ऋषियों–मुनियों ने गाया है।
ओंकार शब्द को विवेकानन्द ने,
गायत्री का सार बताया है।।

स्वयं ब्रह्म है शब्द ओम,
ओम शब्द है ब्रह्म का।
हर एक शब्द में है ओम,
हर एक शब्द है ब्रह्म का।।

ओंकार ध्वनि के प्रणवनाद से,
सृष्टि बीज मुखरित हो जाता है।
गगन, पवन, अनल, वारि, भू का,
सृष्टि में अस्तित्व हो पाता है।।

शब्द गुण है गगन का,
शब्द स्पर्श रहता पवन में।
रूप भी जुड़ जाता अनल में,
रस गन्ध क्रमशः वारि भू में।।

पंच तत्वों से है ये निर्मित,
तन सभी नर और नारी का।
पंच गुणों पर है आधारित,
खेल महादेव मदारी का।।

सृष्टिबीज कारण में लय हो,
ऊँ शब्द में विलय हो जाता है।
महाप्रलय की महाबेला में,
प्रणवनाद शान्त हो जाता है।।

जय माँ अम्बे, जय माँ काली,
शरणागत माँ शरण तिहारी।
शंकर शिव गुरुदेव पुरारी,
शरणागत शिव शरण बिहारी।।

एक दिवास्वप्न, 1892 ई0

स्वदेश प्रेम की भावना,
नरेन्द्र के रग–रग में थी।
कैसे हो उद्धार देश का,
ये चिन्ता उनके मन में थी।।

जागृत अवस्था में स्वप्न,
भविष्य का देख रहे थे नैन।
जाग गयी हैं भारतमाता,
बीत चुकी है काली रैन।।

कट गई हैं जंजीरें उनकी,
खुल गई हैं सब पाँव बेड़ियाँ।
स्वतंत्र हैं अब भारतमाता,
स्वतंत्र हैं उनके बेटे–बेटियाँ।।

मिट गई है निर्धनता देश की,
खुश हैं भारत के नर–नारी।
धन–दौलत की कमी नहीं है,
ईश प्रेम भावना है भारी।।

रामराज्य फिर आ गया है,
लौट वापस भारत भूमि पर।
महिमा मण्डित होकर माता,
पुनः बैठी हैं सिंहासन पर।।

लहरा रहा है प्रेम हृदय में,
उन देश भक्तों की खातिर।
तन–मन प्राण निछावर किये,
जिन्होंने इस देश की खातिर।।

साधु–संतों से कम नहीं हैं,
मातृभूमि के सेवक–रक्षक।
भगतसिंह–चन्द्रशेखर आदि,
ऊधमसिंह जैसे वीर रक्षक।।

बंगाल में हुए हैं पैदा,
सुभाष जैसे देश के रक्षक।
इस भूमि पर हुये हैं पैदा,
गाँधी जैसे महान अहिंसक।।

सबको प्रणाम है गाथा का,
जो–जो हैं देश के वीर रक्षक।
सबको सम्मान है गाथा का,
जो भी होंगे देश के रक्षक।।

ऋण है अब तुम्हारे प्राणों पर,
महावीरों के बलिदानों का।
जिन्होंने दिलायी है आज़ादी,
उन वीरों के अहसानों का।।

सन्देश

सद्गुरु श्रीविवेकानन्द ने,
सन्देश दिया सारे जग को।
अभी निर्भय बनो तुम पथिक,
अनन्तकोटि फल पाने को।।

निर्भय बनो अभी तुम पथिक,
अपनी मंज़िल को पाने को।
पहुँच नहीं सकते तुम मंज़िल,
भय रहते किसी ठिकाने को।।

निर्भयता जननी विश्वास की,
विश्वास से आती निर्भयता।
ईश्वर मिलते हैं विश्वास से,
विश्वास आधार है निर्भयता।।

इसी से कहता हूँ हे पथिक,
अभी त्याग करो तुम भय का।
भय रहते प्रयास तुम्हारा,
व्यर्थ आत्मज्ञान पाने का।।

भयहीन ही बस पा सकता है,
लक्ष्य और सही ठिकाने को।
निर्भयता ही एक आधार है,
जनम-मरण से मुक्ति पाने को।।
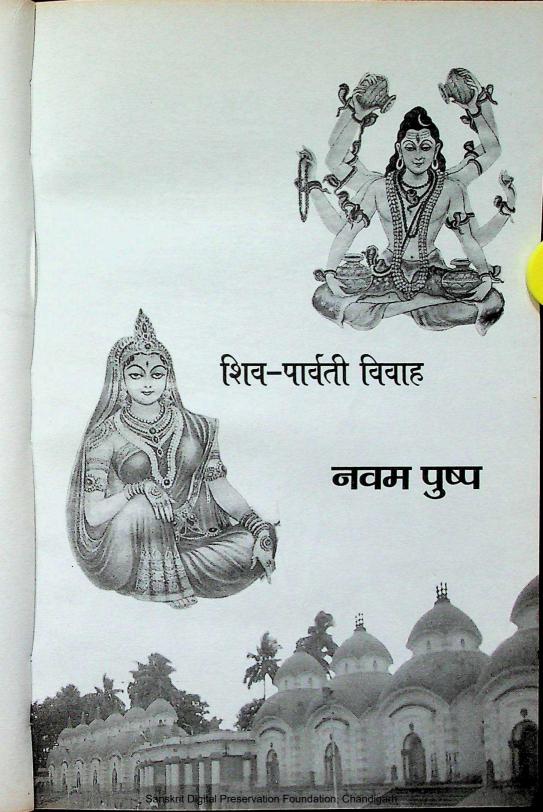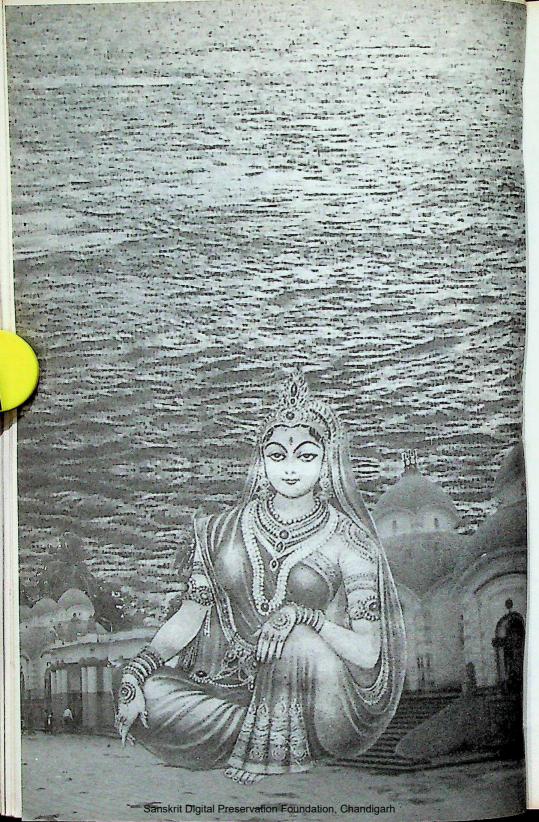
शिव-पार्वती विवाह

नवम पुष्प

शिव–पार्वती विवाह (नवम पुष्प)

काशीपुर के उद्यान भवन में,
शिवरात्रि में श्री नरेन्द्र ने।
हवन, पूजन, भजन, गीत आदि,
गाया था विल्ववृक्ष के नीचे।।

उर प्रेम गंगा है ये गाथा,
प्रेम भक्ति है ज्वार–भाटा।
शिव शक्ति का खेल है सारा,
जो डूबा वही शिव है पाता।।

प्रजापति दक्ष की कन्या,
सती अर्द्धांगिनी हैं शिव की।
आदि शक्ति हैं जगत–जननी,
परम आराध्य हैं जग की।।

कैलाश पर्वत के शिखर पर,
शिव के साथ बैठी थीं कभी।
देखा शिव को करते हुये,
प्रणाम दो बालकों को तभी।।

पूछा सती ने शिवजी से,
कौन हैं ये दोनों बालक।
तपस्वी भेष में ये क्यों,
घूम रहे हैं वन में नायक।।

शिव जी बोले प्रिय सती से,
राम–लक्ष्मण हैं ये दो भाई।
ढूँढ़ रहे हैं प्रिय सीता को,
हर ले गया है उनको कोई।।

सत चित् आनन्द हैं श्रीराम,
निर्गुण निराकार हैं श्रीराम।
सर्वज्ञानी हैं अन्तर्यामी,
जगत आधार हैं श्रीराम।।

लीला करने हेतु धरा पर,
खुद अवतरित हुए हैं श्रीराम।
पत्नी वियोग में रो–रोकर,
ढूँढ़ रहे हैं सीता को राम।।

अनन्त गुणों से परिपूर्ण है,
नाम भगवान श्रीराम का।
ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी,
जपते रहते नाम राम का।।

मेरे आराध्य हैं श्रीराम,
जपा करता हूँ मैं राम–राम।
इसीलिए सुबह से शाम तक,
कहता रहता हूँ राम–राम।।

अन्तर्यामी जब हैं श्रीराम,
ढूँढ़ रहे क्यों पत्नी को।
विरोधी बातें आपस में,
समझ में न आयीं सती को।।

लेने परीक्षा श्रीराम की,
उतर आयीं अवनि पर वो।
भेष बनाकर सीता का सती,
बैठ गयीं धरती पर वो।।

मुस्कुरा कर श्रीरामचन्द्र,
नतमस्तक हो खड़े हो गये।
देख सती को सिय रूप में भी,
माँ कह कर वो खड़े हो गये।।

भर गया ग्लानि से हृदय,
आदि शक्ति माँ सती का।
माँ हो कर क्यों रूप बनाया,
राम की पत्नी जानकी का।।

लौट आयीं माँ होकर उदास,
कैलाश पर शंकर के पास।
सफल हो गये परीक्षा में वो,
हार गयीं सती राम से आज।।

शिव ने पूछा प्रिय सती से,
कारण क्या है उदासी का।
ना पाकर उत्तर सती का,
शिव जान गये किया पत्नी का।।

स्वीकार नहीं कर पाये फिर,
शंकर सती को भार्या रूप में।
क्यों रूप धरा सती ने सिय का,
शिव डूब गये गहन समाधि में।।

सह नहीं पायीं सती शिव का,
गहन मौन समाधि में रहना।
लिया संकल्प अन्तर मन में,
अब पति वियोग नहीं है सहना।।

रचा रहे थे यज्ञ अवनि पर,
प्रजापति दक्ष पिता सती के।
आमंत्रित थे देवगण सभी,
क्यों निमंत्रित न थे पति सती के।।

घर की याद मन में उभर आई,
आँखों में तस्वीर निखर आई।
कैसे होंगे माता–पिता,
निमंत्रण क्यों न उन्हें भिजवाई।।

मायके जाने की इच्छा,
सती की अति प्रबल हो गयी।
यज्ञ में शामिल होने की,
लालसा अति शीघ्र हो गयी।।

तब सती बोली प्रिय शिव से,
नाथ चलो माँ से मिल आयें।
इसी बहाने हम तुम दोनों,
पिता यज्ञ में शामिल हो जायें।

शिव बोले मुस्कुराकर सती से,
बिन बुलाए जाने की इच्छा है।
फिर कभी चलना प्रिय मायके,
अभी वहाँ जाना नहीं अच्छा है।।

क्यों रोक नहीं पायीं सती,
मायके जाने की अपनी इच्छा।
नित्य जा रहे थे देव सभी,
उस यज्ञ में न जाने की शिक्षा।।

हाल–चाल पूछा पिता ने,
सती से उसके पति देव का।
तिरस्कार भरा था पिता के,
शब्दों में सती के पति का।।

सह न पायीं अपमान पति का,
सभी देवताओं के सम्मुख।
कह न पायीं कुछ सती पिता से,
अपमानित होकर उनसे विमुख।।

कूद गयीं वो हवन–कुंड में,
त्याग दिया जिस्म सती का।
भस्म हो गयीं अनल रश्मि में,
बन कारण जन्म पार्वती का।।

हाहाकार मच गया वहाँ,
सती के कुंड में कूदते ही।
फैल गया समाचार पल में,
सती के ज्वाला में जलते ही।

टूट गयी समाधि शिव की,
क्रोध नेत्र में उभर आया।
तीसरा नेत्र खुल गया उनका,
त्रिलोक में जैसे प्रलय आया।।

खड़े हो गये शिव कैलाश पर,
उठा लिया त्रिशूल और डमरू।
ओंकार ध्वनि गूँजने लगी,
स्वतः बजने लगे शंख–झुमरू।।

बलभद्र आदि प्रकट हो गये,
शिव के माथे के क्रोध से।।
तहस–नहस कर दिया यज्ञ,
हाहाकार मच गया जोर से।।

रख लिया उठा कर शव सती का,
शिव ने अपने कान्हों पर।
डमा–डम,डमा–डम नाचने लगे,
ताँडव नृत्य शुरु हो गया वहीं पर।।

हिलने लगी महि शिवथाप से,
डोलने लगा नभ शिवनाद से।
स्वर्ग,नरक, त्रिलोक आदि सब,
जलने लगा शिव के ताप से।।

सुर–असुर सब काँपने लगे,
भय से बगली झाँकने लगे।
लेकर इन्द्र सबको साथ में,
शिव से माफी माँगने लगे।।

चूर–चूर हो गये पर्वत आदि,
सूख गये सब सागर–समुद्र।
शिव क्रोध की ज्वाला से,
पिघलने लगे वज्र और धनुष।।

शिव-हुँकार से सृष्टि बीज,
कारण में लय होने लगा।
प्रलय की हुँकार से मानो,
महाप्रलय सा होने लगा।।

लेकर साथ में ब्रह्मा को,
सुर–असुर धाए सागर की ओर।
जहाँ रो रहे थे स्वयं विष्णु,
उस महाक्षीर सागर की छोर।।

लगे पुकारने सब मिलकर,
विष्णु को सृष्टि रक्षा हेतु।
कैसे बचा जाए शिव–क्रोध से,
करने लगे विचार इस हेतु।।

ब्रह्मा जी ने उपाय सुझाया,
श्रीविष्णु जी को रास आया।
कैसे भी हो शिव के कान्हों से,
शव को हटाने का ख्याल आया।।

शिव को प्रणाम करके विष्णु ने,
सती को ध्यान करके विष्णु ने।
छोड़ दिया वो चक्र सुदर्शन,
काट दिया सती शव को जिसने।।

गिरने लगे कट–कट कर अंग,
एक–एक करके आदि सती के।
बन गये शक्ति पीठ बावन,
इस अवनि पर उस महाशक्ति के ।।

रंग ले आयी है तपस्या,
पार्वती के रात दिन की।
सफल हो गयी है साधना,
शिव से उनके मिलन की।।

निश्चित हो गयी हैं दिन तिथि,
देखकर मुहूर्त विवाह की।
मान गये हैं माता–पिता,
शिव से पार्वती विवाह की।।

महारात्रि में गीत नरेन्द्र,
गा रहे हैं पार्वती विवाह का।
घेर कर उनको मित्रगण सभी,
ले रहे मज़ा शिव–विवाह का।।

अरुण,वरुण,गरुड़ आदि सभी,
शामिल हैं शिव बारात में।
उठाने को लुत्फ़ दावत का,
सभी शामिल हैं एक साथ में।।

सज रही है बारात शिऊ की,
सजे खड़े हैं वाहन नन्दी जी।
फूट रहे हैं बम कैलाश पर,
बज रहे ढोल–नगाड़े भी।।

इत्र लगाते एक–दूसरे को,
घूम रहे हैं देवगण सभी।
अस्त्र–शस्त्र तन पर सजाते,
सुर–असुर झूम रहे हैं सभी।।

ऐंठ रहे हैं मूँछें सभी,
अपने–अपने सरीखों से।
दरशा रहे हैं बल–पौरुष,
सब अलग–अलग तरीकों से।।

गा नाच रहे हैं किन्नर भी,
पाने को निछावर आदि।
लुटा रहे दोनों हाथों से,
खुलकर कुबेर धन प्रसादि।।

बँट रही हैं भाँग–मदिरा,
छन रही हैं वहाँ इमरती भी।
कट रहे हैं काजू–पिस्ते,
खा रहे हैं लोग मेवे भी।।

स्वर्ग से विमानों पर बैठ–बैठ,
आ रहे हैं देवगण सब साथ में।
बारात के मनोरंजन का आज,
इन्तज़ाम है इन्द्र के हाथ में।।

चित्रसेन स्वयं गा रहे हैं,
मिलकर सब गन्धर्वों के साथ।
मेनका, रम्भा, उर्वशी भी,
नाच रही हैं साथ में आज।।

मिल रहे हैं एक–दूसरे से,
लोग बारात में बन–सँवरकर।
हँसी–ठिठोली भी हो रही है,
आज स्त्रियों से सज–सँवरकर।।

कोई अपनी हाँक रहा है,
तो कोई शिव की गा रहा है।
कोई उनकी सुना रहा है,
कोई बेसिर की उड़ा रहा है।।

वीतरागी जो सदा त्यागी
आज खड़े हैं सब के साथ में।
सर्वस्व त्यागी औघड़दानी,
उमा–शंकर की बारात में।।

साधु–तपस्वी भी शामिल हैं,
शंकर की बारात में आज।
निराकार ओंकार में डूबे,
विज्ञानी भी शामिल हैं साथ।।

नचा रहे ऊँगली पे चक्र,
श्रीविष्णु जी सुदर्शन आज।
सज–धज कर खड़े हुए हैं वो,
कैलास पर ब्रह्मा के साथ।।

जंगली पालतू पशु–पक्षी,
कर रहे हैं इज़हार खुशी के।
पशुपतिनाथ की बारात में
उछल रहे हैं सभी हँसी के।।

जलचर,थलचर,नभचर आदि,
शामिल हैं सब एक साथ में।
उमड़ पड़ा है पूरा सैलाब,
त्रिलोकीनाथ की बारात में।।

मुण्ड की माला, मृग–छाला,
पहनाया है करीने से।
सजाया है असुरों ने आज,
शंकर को अलग तरीके से।।

बजने लगी दुन्दुभि जोरों से,
ढोल नगाड़े सब बजने लगे।
बैठ गये शिव चढ़ नन्दी पर,
धड़ाम्–धड़ाम् बम दगने लगे।।

बार–बार, हर हर महादेव,
गूँजने लगा कैलास पर।
उछलने लग गये लोग सभी,
गर्जना होने लगी तर्ज पर।।

स्वागत बारात की तैयारी,
पूरी थी पर्वत राज के घर।
फूल माले ग़जरे सजे थे,
सम्पूर्ण पर्वत साम्राज्य भर।।

बज रही थी शहनाई एक तरफ,
गूँज रहे गीत मंगल हर तरफ।
आदि प्रकृति सुंदरी बाला के,
विवाह में सजावट थी सब तरफ।।

मंडप सजा था फूलों से,
अति दुर्लभ मणिरत्न हीरों से।
मंडप थल पर थी नक्काशी,
रंगे चावल और नगीनों से।।

भोज़न सामग्री पण्डालों में,
सजाया गया था कतारों में।
फल, फूल, मिष्ठान, मेवा आदि,
सोने के बर्तन थालों में।।

सबको माला पहनाने हेतु,
द्वार पर खड़े हैं महाराजे।
उचित आसन पर बैठाने को,
लगे हुए हैं मंत्री सयाने।।

हर्षित हो रही हैं पार्वती,
अपने अन्तर–हृदय मन में।
बैठी हैं करके सिंगार,
सोलह अपने तन–बदन में।।

नन्दी पर होकर सवार,
शिवजी चले हैं ससुराल।
ब्रह्मा–विष्णु हैं एक साथ,
शिव शंकर की है ये बारात।।

खूब सज–संवरकर आई हैं,
लक्ष्मी, ब्रह्माणी के साथ।
शामिल हैं सरस्वतीजी भी,
शंकर की बारात में आज।।

ढोल, नगाड़े, शंख, दुन्दुभि,
बजती हैं शहनाई के साथ।
मटक रहे हैं देवगण सभी,
नाच रहे ब्रह्मा जी आज।।

भूत, प्रेत, नटगण और पिशाच,
नाच रहे हैं शिव–बारात में,
दिखता नहीं है कोई आज।
अपने पूरे होश–हवास में।।

लगता है चढ़ाये हुये है,
हर कोई मदिरा बारात में।
जिसको देखो नाच रहा है,
ले थाली–कटोरा हाथ में।।

देख शिव शंकर की बारात,
होश उड़ गये माँ मैना के।
देख पार्वती का दूल्हा,
हाथ–पाँव फूल गये उनके।।

अजब मस्ती छायी हुई है,
घर बारात आयी हुई है।
दौड़ रहे स्वयं पर्वतराज,
माँ मैना घबरायी हुई हैं।।

दूल्हा है अजब निराला,
गले पड़ी सर्प की माला।
भस्म–मसान है मल डाला,
सिर से पाँव तक है काला।।

देख बाराती और दूल्हा,
छूट गयी थाली मंगल की।
भयभीत हो गयीं माँ मैना,
दिख गयीं लाली अमंगल की।।

परेशान हो गयीं माँ मैना,
हैरान हो गयीं क्या कहना।
देखा नहीं था कभी ऐसा,
अब देख रही थीं वो जैसा।।

अति सुन्दर कोमल थी बेटी,
राज परिवार में पली थी वो।
कैसे कटेगा जीवन उसका,
कैसे रहेगी ससुराल में वो।।

मूर्छित हो गयीं खोकर होश,
गिर पड़ीं माँ होकर बेहोश।
नहीं ब्याहेंगे औघड़ से,
बेटी,चाहे करे कोई क्रोध।।

अजब बन गया था समां जैसे,
गजब हो गया था यहाँ कैसे।
जयमाल पड़ने से पहले ही,
बवाल मच गया था वहाँ जैसे।।

तब आए महर्षि नारद वहाँ,
मैया मैना को समझाने।
सती हैं पार्वती शंकर की,
यही पूर्व गाथा बतलाने।।

आदि शक्ति जगदम्बा हैं,
पार्वती नहीं वो अम्बा हैं।
जन्म लिया है शिव वरने हेतु,
इसमें नहीं कोई अचम्भा है।।

विष्णु–लक्ष्मी जोड़ी जैसे,
शिव–पार्वती भी हैं वैसे।
रहे सलामत जोड़ी कैसे,
लगे नजर न थोड़ी जैसे।।

मान गयीं तब मैना रानी,
जान गयीं जब कथा पुरानी।
धन्य हो गयीं मैना रानी,
कोख से वो जनकर भवानी।।

बदल गया तब माहौल सारा,
बदल गया शिव का रूप न्यारा।
कामदेव को भी करने लगा,
मात शिव का रूप प्यारा।।

किसी ने गाना गाया ऐसे,
बारातियों को हँसाया ऐसे।
भूत–प्रेत भी सब हँसने लगे,
देवता जैसे सब दिखने लगे।।

महकने लगा संसार सारा,
खिल गई कलियाँ मध्य रात में।
बहने लगा सुगन्धित समीर,
निखर गई चाँदनी बारात में।।

कूकने लगी कोयल डाल पर,
पा मौसम अमियाँ बौरा गई।
चहकने लगी चिड़ियाँ डाल पर,
शिव शंकर की बारात आ गई।।

बँध गये प्रेम के बन्धन में,
शिव पार्वती के संग में।
पड़ गये फेरे शिवजी के,
आदि शक्ति सती के संग में।।

सखियाँ मंडप पर गाने लगीं,
शिव को गीत में चिढ़ाने लगीं।
बारातियों को सुनाने लगीं,
बाप–दादों को गरियाने लगीं।।

सप्तर्षि भी हर्षित हैं आज,
महाऋषि मुनियों के साथ।
दे रहे आशीर्वाद वो सब,
नव युगल को फेरे के बाद।।

सौभाग्य मान रहे नर–नारी,
शामिल हो शिव बारात में।
जनम सुफल हो गया है उनका,
पा दर्शन वर–वधू का साथ में।।

अमर है शिव और पार्वती,
अमर है उनकी सुन्दर जोड़ी।
रहे सलामत सदा साथ में,
शिव और पार्वती की जोड़ी।।

बिदा हो गयीं मायके से,
पार्वती शिव के संग में।
रंग गया है कैलास पुनः,
शिव पार्वती के रंग में।।

पहली होली

आयी है पहली होली,
उमा की शादी के बाद ।
जायेंगी मायके अपने,
उमा अपने पति के साथ ।।

हर हर महादेव गूँज रहा,
काशी और कैलास में आज।
खेलन गये हैं होली शिवजी,
अपने ससुराल में उमा के साथ।।

आये हैं शंकर पहली बार,
खेलन होली ससुराल में साथ।
रंग दिया है हरे रंगों से,
सालियों ने महादेव को आज।।

भाग रहे हैं शिव बचने को,
लोगों से ससुराल में आज।
लाल–हरे रंगों में उनको,
रंगा है सालियों ने साथ।।

बज रहे हैं ढोल–करताल,
गा रहे सब लोग फगुनवाँ।
उड़ रहे हैं अबीर गुलाल,
शिव खेल रहे हैं रंगनवाँ।।

टेसू के रंगों से आज,
रंग गया सारा आंगनवा ।
प्रेम रंग से खेल रहे हैं,
लोग होली शिव के संगवा ।।

सरहजें भी दौड़ा रही हैं,
पकड़ने उनको मिलकर साथ ।
फँस गये हैं शिवजी अकेले,
होरी मा ससुराल में आज ।।

खेल रहे हैं शिव लोगों से,
आज होली जोर शोरों में ।
अरर–सरर हो रही होली,
पर्वतराज के घर जोरों में ।।

भर रही हैं मांग में सिन्दूर,
सिर में जटाधारी के आज ।
घिरे खड़े हैं सालियों में शिव,
फँस गये हैं ससुराल में आज ।।

देखन होरी राज के घर,
उमड़ पड़ा है पूरा समाज ।
कैसे होरी खेलत हैं शिव,
रंगों से ससुराल में आज ।।

झाँक रहे हैं देवासुर भी,
लुक–छुप कर बादलों से आज ।
खेल रहे हैं शिव रंगों से,
आज खुलकर लोगों के साथ ।।

धुल गये हैं पाप तन के,
खेल कर होरी प्रेम से ।
मिट गये हैं क्लेश मन के,
शिवजी के कृपा रंग से ।।

बरस रहा है रंग टेसू का,
पर्वतराज के घर आकाश से ।
खेल रहे हैं शिव होरी यहाँ,
देख रहे हैं हरि आसमान से ।।

खिला रही हैं मिष्ठान गुजिया,
सास मैना दामाद को आज ।
भाँग चढ़ाये बैठे हैं शिव,
खा रहे गुजिया उमा के साथ ।।

रुकता नहीं है रंग न्यारा,
बज गया है देखो बारह ।
ऐसा मौका कहाँ मिलेगा,
खेल सको शिव से दोबारा ।।

नवदुर्गा

दशम पुष्प
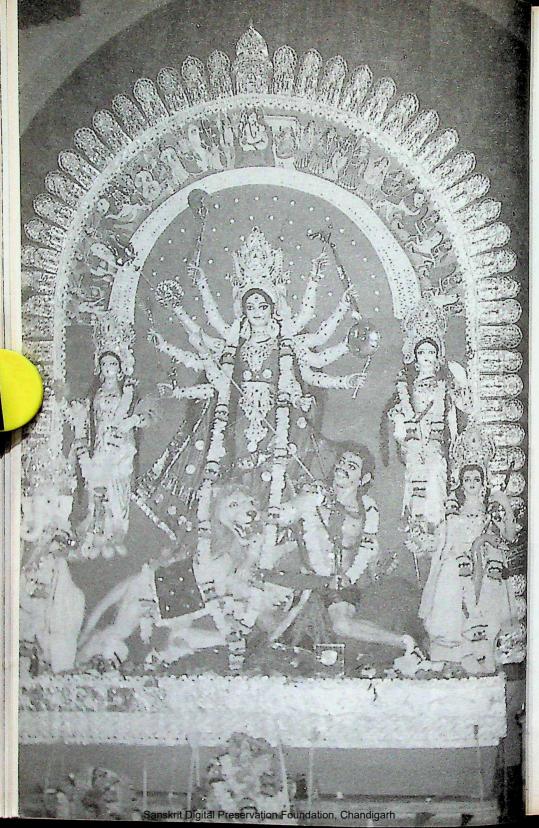
नव दुर्गा (दशम पुष्प)

शरत्काल में पूजा की,
नरेन्द्र ने ठानी थी ।
बैलूर मठ सन् 1901 में,
दुर्गा पूजा की मानी थी ।।

जय माँ दुर्गे, तेरे गुणों का,
क्या–क्या मैं गुणगान करूँ ।
तीनों गुण तेरे दम से हैं,
किस–किस गुण का मैं गान करूँ।।

गुणातीत है तू जगदम्बे,
तुझको नित्य प्रणाम करूँ ।
नवदुर्गा है तू माँ अम्बे,
तुझे मैं सतत् प्रणाम करूँ ।।

तू ही मेरी माता अम्बे,
तुझे मैं कितना प्यार करूँ ।
गिर कर तेरे इन चरणों में,
कितना अधिक विलाप करूँ ।।

तू ही तू है माता अम्बे,
तू विधि और विधाता अम्बे ।
सारे जग की माता अम्बे,
इस जग की अधिष्ठाता अम्बे ।।

नाहम्–नाहम् तू ही तू माँ,
श्रीरामकृष्ण कहा करते थे ।
सोहम्–सोहम् कहने से तो,
वो भी खूब डरा करते थे ।।

शक्तिस्वरूपा है तू दुर्गे,
बारम्बार तुझे प्रणाम करूँ ।
लेकर नाम तुम्हारा दुर्गे,
तुझ पर कितना अभिमान करूँ ।।

नवरातों में तू माँ दुर्गे,
सबके घर–घर जाती है ।
नवरूपों में सज–धज अम्बे,
भक्तों का मन हर्षाती हैं ।।

जय जय अम्बे, जय जगदम्बे,
जय माँ अम्बे, जय जगदम्बे ।
जय जय अम्बे, जय जगदम्बे,
जय माँ अम्बे, जय जगदम्बे ।

शैलपुत्री हैं प्रथम दुर्गा,
जिनसे पूजा आरम्भ करूँ ।
नवरात्रि के प्रथम दिवस पर,
मैया मैं तेरा ध्यान धरूँ ।।

बायें हाथ लिये कमलपुष्प,
दाहिने हाथ में शूल लिये ।
वृषभ वाहिनी माता दुर्गे,
कितना सुन्दर रूप लिए ।।

मूलाधार स्वामिनी हैं ये,
असाध्य को भी साध्य करें ।
सूर्यकोप नष्ट कर अम्बे,
मूल से साधना प्रारम्भ करें ।।

जय जय अम्बे, जय जगदम्बे,
जय माँ अम्बे, जय जगदम्बे ।
जय जय अम्बे, जय जगदम्बे,
जय माँ अम्बे, जय जगदम्बे ।

द्वितीय दुर्गे हैं ब्रह्मचारिणी,
जिनकी कृपा अति दुर्लभ है ।
ब्रह्मचारियों को अतिप्रिय,
माँ दुर्गे का ये स्वरूप है ।।

बायें हाथ लिये कमण्डल,
दाहिने हाथ में जपमाला ।
ब्रह्मदायिनी माँ अम्बे का,
ये रूवरूप है बड़ा निराला ।।

स्वाधिष्ठान चक्र की देवी,
नित्य तपस्या में रत रहती हैं।
चन्द्र अशुभता को नष्ट कर,
जगदम्बे शुभ फल देती हैं ।।

जय जय अम्बे, जय जगदम्बे,
जय माँ अम्बे, जय जगदम्बे ।
जय जय अम्बे, जय जगदम्बे,
जय माँ अम्बे, जय जगदम्बे ।

चन्द्रघन्टा हैं दुर्गा तृतीय,
जिनका हर कोई ध्यान धरे ।
नवरात्रि के तृतीय दिवस में,
जिनका हर कोई सम्मान करे ।।

सिंहवाहिनी हैं माँ दुर्गा,
दस भुजाओं से राज करें ।
स्वर्ण समान है देह इनकी,
ये असुरों का संहार करें ।।

घण्टा आकार का अर्धचन्द्र,
माथे पर रहता सदा सुशोभित ।
इसीलिए चन्द्रघण्टा नाम से,
माँ का ये रूप है पारितोषित ।।

घंटा समान इनकी ध्वनि से,
शत्रु भयभीत हो जाते हैं।
सुनकर इनकी गंभीर ध्वनि,
भयवश बलहीन हो जाते हैं।।

मणिपुर स्वामिनी हैं ये माँ,
मन को शान्ति प्रदान करें।
मंगल प्रकोप नष्ट कर अम्बे,
परम दर्शनों का भान करें।।

लखनऊ में चन्द्रिका देवी,
अद्‌भुत छटा दिखाती हैं।
शहर से दूर बैठकर अम्बे,
भक्तों को पास बुलाती हैं।।

जय जय अम्बे, जय जगदम्बे,
जय माँ अम्बे, जय जगदम्बे।
जय जय अम्बे, जय जगदम्बे,
जय माँ अम्बे, जय जगदम्बे।।

कूष्मांडा हैं चतुर्थ दुर्गा,
कूष्मांड की बलि लेती हैं।
नवरात्रि के चतुर्थ दिवस में
ये ही माँ पूजा लेती हैं।।

इनकी मन्द मुस्कान से,
हुआ उदित ब्रह्माण्ड है।
रहता सदा इनके उदर में,
ये तापयुक्त ब्रह्माण्ड है।।

जितना भी तेज दिखता है,
तीनों लोकों के जीवों में।
छाया है इनके तेज का,
जो भी मिलता है लोगों में।।

सिंहवाहिनी हैं ये दुर्गा,
इनकी प्रभा सूर्य सम रहती हैं।
दसों–दिशाएँ प्रकाशित इनसे,
ये सूर्यमण्डल में रहती हैं।।

आठों सिद्धियाँ, नौवों निधियाँ,
प्रदात्री हैं कूष्मांडा माता।
लोक–परलोक दोनों का सुख,
प्रदान करती हैं ये माता।।

अष्टभुजी देवी हैं ये माँ,
चक्रधारी गदायुक्त माता।
अनाहत चक्र इनंसे संचालित,
हृदय में अवस्थित हैं माता।।

इनकी पूजा–अर्चना से,
केवल शुभ ही शुभ होता।
बुध अशुभता नष्ट हो जाती,
वाँछित फल साधक को मिलता।।

जय जय अम्बे, जय जगदम्बे,
जय माँ अम्बे, जय जगदम्बे।
जय जय अम्बे, जय जगदम्बे,
जय माँ अम्बे, जय जगदम्बे।।

स्कन्दमाता हैं पंचम दुर्गा,
जो कमलासन भी कहलाती हैं।
लिये गोद में शिशु स्कन्द को,
ये ममता खूब लुटाती हैं।।

दाईं भुजा में शिशु स्कन्द को,
लिये रहती हैं गोद में माता।
बायीं भुजा से अभय मुद्रा,
साजे रहती हैं ये माता ।।

सिंहवाहिनी हैं ये दुर्गा,
शिशुओं का ये कल्याण करें।
इनकी शरण में आये जो माँ,
उसके पुत्र को निरोग करें।।

चतुर्भुजी हैं ये माँ दुर्गा,
भक्तों को अभय प्रदान करें।
दो हाथों में कमलपुंष्प ले,
माँ जन–जन का कल्याण करें।।

नवरात्रि के पंचम दिवस पर,
साधकों का मन विशुद्ध करें।
विशुद्ध चक्र की हैं ये देवी,
चित्तवृत्तियों का लोप करें।।

इनकी पूजा–अर्चना से,
गुरु अनुकूल हो जाते हैं।
वाह्य क्रिया को समाप्त कर,
मन समाधि में ले जाते हैं।।

जय जय अम्बे, जय जगदम्बे,
जय माँ अम्बे, जय जगदम्बे।
जय जय अम्बे, जय जगदम्बे,
जय माँ अम्बे, जय जगदम्बे।।

कात्यायन की घोर तपस्या,
तब जाकर फलीभूत हुई।
जब महाशक्ति पुत्री बनकर,
महर्षि के घर आविर्भूत हुई।।

इसीलिए तो ये माँ अम्बे,
कात्यायनी कहलाती हैं।
नवरात्रि के षष्ठम दिवस में,
जो घर–घर पूजी जाती हैं।।

मनोवांछित वर पाने को,
कन्याएं इनका ध्यान धरें।
वरदायिनी हैं माँ दुर्गा,
मनवांछित फल प्रदान करें।।

सिंहवाहिनी हैं ये दुर्गा,
असुरों का संहार करें।
महिषासुरमर्दिनी हैं दुर्गा,
चारों भुजा से कल्याण करें।।

आज्ञा चक्र की हैं ये देवी,
पल में दर्शन प्रदान करें।
शुक्र अशुभता नष्ट कर अम्बे,
पल में शुभ फल प्रदान करें।।

जय जय अम्बे, जय जगदम्बे,
जय माँ अम्बे, जय जगदम्बे।
जय जय अम्बे, जय जगदम्बे,
जय माँ अम्बे, जय जगदम्बे।।

कालरात्रि हैं सप्तम दुर्गा,
महाकाल का भी नाश करें।
अति पूजनीय हैं ये दुर्गा,
भक्तों का परम कल्याण करें।।

सहस्रार की हैं ये देवी,
भक्तों का परम कल्याण करें।
ब्रह्मज्ञान देकर भक्तों को,
इस भवसागर के पार करें।।

अति काली है देह इनकी,
अमावस्या रात्रि के समान।
गले में चमकती है माला,
विद्युत तरंगों के समान।।

त्रिनेत्री हैं माँ कालरात्रि,
गोल–गोल हैं नेत्र इनके।
निःसृत होती रहती हैं,
जैसे उनसे विद्युत किरणें।।

बिखरे रहते हैं बाल सदा,
भयंकर दिखती हैं तिसपर।
वाहन है गर्दभ इनका,
बैठी रहती हैं उस पर।।

भूत, प्रेत, पिशाचगण आदि,
इनसे बहुत घबराते हैं।
इनके स्मरण मात्र से ही,
नजदीक नहीं वो आते हैं।।

भक्तों को घबराने की नहीं,
इनसे कोई आवश्यकता है।
भक्त–वत्सल हैं ये माँ अम्बे,
भक्तों का परम कल्याण करें।।

इनका उपासक कभी भी,
भयभीत नहीं हो सकता है।
इनकी पूजा करने वाला,
सदैव निर्भय ही होता है।।

कालरात्रि हैं ये माँ दुर्गा,
शुभंकरी भी कहलाती हैं।
नवरात्रि के सप्तम दिवस में,
जो घर–घर पूजी जाती हैं।।

सदा–सदा ही शुभ फल देतीं,
ये अपनी शुभंकरी माता।
शनि प्रकोप नष्ट कर देतीं,
ये अपनी प्रियंकरी माता।।

तंत्र–मंत्र की हैं ये देवी,
तांत्रिकों का कल्याण करें।
उनकी बाधायें दूर करके,
उनका परम उपकार करें।।

तांत्रिकों को अतिशय प्रिय है,
स्वरूप ये माँ कालरात्रि का।
काली रातों में होता है,
पूजन इन माँ शुभरात्रि का।।

जय जय अम्बे, जय जगदम्बे.
जय माँ अम्बे, जय जगदम्बे।
जय जय अम्बे, जय जगदम्बे,
जय माँ अम्बे, जय जगदम्बे।।

तपस्या के फलस्वरूप ही,
महान गौर वर्ण पाया है।
माँ दुर्गा ने इसीलिए तो,
महागौरी नाम पाया है।।

अतिशान्त हैं ये माँ दुर्गा,
भक्तों का परम कल्याण करें।
उनके संचित पापों का माँ,
क्षण भर में ही विनाश करें।।

श्वेत वस्त्रों से सुसज्जित,
महागौरी रहती हैं सदा।
श्वेत वृष पर होकर सवार,
माँ गौरी चलती हैं सदा।।

आठ वर्ष की हैं ये दुर्गा,
चार भुजाओं वाली गौरी माँ।
आठवीं शक्ति हैं दुर्गा की,
ये आदिशक्ति महागौरी माँ।।

दायें हाथ से साजे अभय,
बायें हाथ से वर देती हैं।
दायें हाथ में रहता त्रिशूल,
बायें से माँ डमरू लेती हैं।।

महागौरी की अर्चना से,
शिव प्रसन्न हो जाते हैं।
संभव–असंभव जो कुछ भी हो,
अवश्य पूरा कर जाते हैं।।

नवरात्रि के अष्टम दिवस पर,
महागौरी पूजा अर्चन से।
तन–मन सुखी हो जाता है,
राहू पीड़ा नष्ट होने से।।

जय जय अम्बे, जय जगदम्बे,
जय माँ अम्बे, जय जगदम्बे।
जय जय अम्बे, जय जगदम्बे,
जय माँ अम्बे, जय जगदम्बे।।

सिद्धिदात्री हैं नवम दुर्गा,
साधकों को परम सिद्ध करें।
देकर उनको आठ सिद्धियाँ,
उनके मनोरथ पूर्ण करें।।

शिव ने भी की थी साधना,
जगदम्बे सिद्धिदात्री की।
तब जाकर पाया था शिव ने,
सिद्धियाँ आठों प्रकार की।।

सिंहवाहिनी हैं ये दुर्गा,
चतुर्भुजी अपनी देवी माँ,
कमलासन भी कहलाती हैं,
ये दुर्गा सिद्धिदात्री माँ।।

जय जय अम्बे, जय जगदम्बे,
जय माँ अम्बे, जय जगदम्बे।
जय जय अम्बे, जय जगदम्बे,
जय माँ अम्बे, जय जगदम्बे।।

जौनपुर में शीतला मैया,
सबका मन मोह लेती हैं ।
चौकिया में बैठ कर अम्बे,
भक्तों का कष्ट हर लेती हैं ।।

काशी में माँ अन्नपूर्णा,
शंकर को भिक्षा देती हैं।
विश्वनाथ–भार्या हैं अम्बे,
सबको अन्न–जल देती हैं ।।

दोनों हाथों से बाँट रहीं,
चारों फल माँ विन्ध्यवासिनी।
युगों–युगों से आई हैं देती,
याचक को फल विन्ध्यवासिनी ।।

शरणागत हूँ मैं माँ अम्बे,
मुझको अभी स्वीकार करो ।
लेकर अपनी शरण में मुझको,
तुम अभी मेरा उद्धार करो ।।

जय माँ अम्बे, जय माँ काली,
शरणागत माँ शरण तिहारी ।
शंकर शिव गुरुदेव पुरारी,
शरणागत शिव शरण बिहारी ।।

माँ
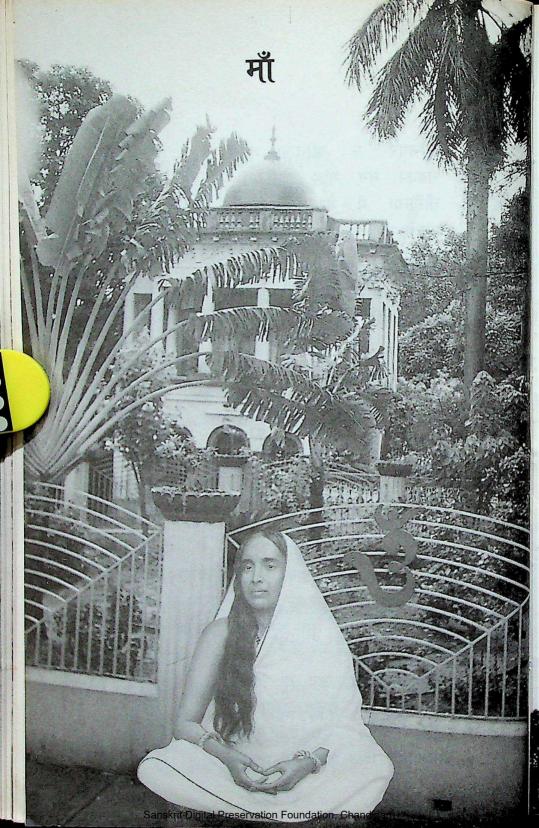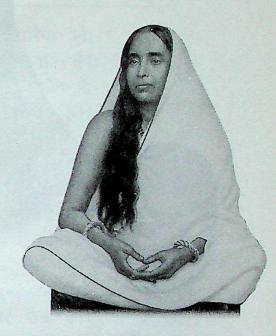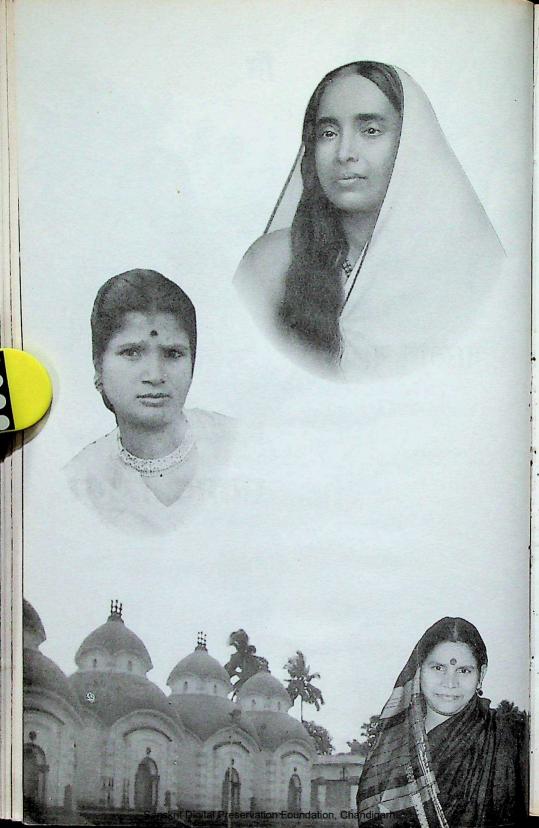
भारतीय नारी

एकादश पुष्प

भारतीय नारी (एकादश पुष्प)

भारतीय नारी की गरिमा को,
विवेकानन्द ने बताया है।
लज्जा, लाज, शील, संकोच में,
सर्वश्रेष्ठ उन्हें गिनाया है।।

ढाला है तुमने चरित्र अपना,
सीता–सावित्री के आदर्शों पर।
पाला है तुमने नैतिकता को,
कष्ट सहकर भी आधारों पर।।

कभी न माना सुख का हेतु,
तुमने अपने नश्वर तन को।
कभी न दी लालसा सुख की,
तुमने अपने नश्वर मन को।।

भोग तृष्णा से तुम अनजान,
एक अलग किस्म की नारी हो।
सीता–सावित्री की प्रतिमूर्ति,
तुम एक भारतीय नारी हो।।

संभव नहीं अस्तित्व पुरुष का,
बिना तुम्हारी कोख में आये।
जगत जननी हो तुम माते,
कैसे कोई उऋण हो पाये।।

अनन्त गुणों की खान हो तुम,
कहाँ तक वर्णन हो पाये।
सृष्टि का मूलाधार हो तुम,
क्यों न तुम्हें सराहा जाये।।

अनन्त गुणों से युक्त होकर,
एक अलग किस्म की नारी हो।
गुणमयी गुणों की प्रतिमूर्ति,
तुम एक भारतीय नारी हो।।

बलिदान स्वरूप आई हो जग में,
इसे सदा ही तुमने माना है।
पिता, पति, पुत्र, सास, ससुर के आगे,
और कभी नहीं कुछ जाना है।।

कहीं प्यार की वेदी में,
झांक रही तुम बनकर प्रीत।
कहीं बहिन, तुम भाभी कहीं,
कहीं रहती तुम बनकर मीत।।

प्रेम, तपस्या, त्याग में ढली,
एक अलग किस्म की नारी हो।
प्रेम तपस्या की प्रतिमूर्ति,
तुम एक भारतीय नारी हो।।

वर सके तुमको कोई गीदड़
हो सकता कभी ये संभव नहीं।
हर सके तुमको कोई कायर,
हो सकता कभी ये असंभव नहीं।।

तुमको वर सकने वाला कोई,
वीर बहादुर सिंह ही होगा।
सुभद्रा को हर सकने वाला,
केवल वीर अर्जुन ही होगा।।

हर नारी से भिन्न प्रिय तुम,
एक अलग किस्म की नारी हो।
वीरता, दृढ़ता की प्रतिमूर्ति,
तुम एक भारतीय नारी हो।।

असीम शान्ति छायी हुई है,
मुखमंडल पर प्रिय तुम्हारे।
छिटक रही है सुख–समृद्धि,
चरित्र बल से ही प्रिय तुम्हारे।।

प्राण देकर भी करतीं रक्षा,
तुम अपने उज्ज्वल चरित्र की।
इतिहास गवाह है जौहर का,
जब की थी रक्षा सतीत्व की।।

अपने चरित्र के फलस्वरूप ही,
एक अलग किस्म की नारी हो।
उज्ज्वल चरित्र की प्रतिमूर्ति,
तुम एक भारतीय नारी हो।।

पा सकता है शावक सिंह ही,
जन्म कोख से प्रिय तुम्हारे।
बच सकता है विरला ही कोई,
चण्ड–कोप से प्रिय तुम्हारे।।

शिवाजी की हो तुम माता,
राणा प्रताप की तुम जननी।
ना जाने कितने वीरों को,
जनती आयी हो तुम जननी।।

वीर जननी के फलस्वरूप ही,
एक अलग किस्म की नौरी हो।
भारतमाता की प्रतिमूर्ति,
तुम एक भारतीय नारी हो।।

फैल रही है विश्व–एकत्व की,
भावना हृदय से तुम्हारे।
तरंगित हो रही है कामना,
विश्व–हित की उर से तुम्हारे।।

सारदा हो तुम रामकृष्ण की,
सदा करती रहती हो कल्याण।
श्रीराधा हो तुम श्रीश्याम की,
क्यों न हो हमको तुम पर अभिमान।।

कल्याण भावना के कारण ही,
एक अलग किस्म की नारी हो।
परहित कल्याण की प्रतिमूर्ति,
तुम एक भारतीय नारी हो।।

परिस्थिति चाहे जैसी भी हो,
तुम कभी नहीं घबराती हो।
साहस धैर्य विश्वास से ही,
तुम अपना हर कर्म निभाती हो।।

कठिन परिस्थितियों से लड़ने में,
तुम अद्‌भुत कौशल दिखलाती हो।
साहस, धैर्य, निपुणता से ही,
तुम अपना परिवार चलाती हो।।

लेकर जन्मी हो तुम धैर्य,
इस धरती पर उस धरा का।
विश्वास भरा हुआ है तुममें,
धरती, पाताल और गगन का।।

साहस छुपा हुआ है तुममें,
मानो मस्त पागल पवन का।
रूप छुपा हुआ है तुममें,
मानो प्रज्ज्वलित अनल का।।

साहस, धैर्य, विश्वास से ही,
एक अलग किस्म की नारी हो।
साहसिकता की प्रतिमूर्ति,
तुम एक भारतीय नारी हो।।

एक नयी नवेली दुल्हन सी,
सदा ही प्रिय तुम शरमाती हो।
नानी–दादी भले बन जाओ,
पर नयनों से सदा लजाती हो।।

छूने से पहले ही प्रिय तुम,
छुईमुई सी हो जाती हो।
लज्जा संकोच में डूबकर,
तुम पलकें नहीं उठाती हो।।

तुम कामकला में भी प्रवीण,
एक अलग किस्म की नारी हो।
लज्जा स्वरूप की प्रतिमूर्ति,
तुम एक भारतीय नारी हो।।

यूँ तो तुम प्रतिदिन ही प्रिय,
स्वादिष्ट व्यंजन पकाती हो।
बीमार थकी होने पर भी तुम,
कुछ न कुछ अवश्य खिलाती हो।।

खुद चाहे भूखी रह जाओ,
पर सबको खूब खिलाती हो।
सबके भोग लगाने पर ही,
तुम खुद भोग लगाती हो।।

बचा खुचा जो भी रह जाये,
बस उसी से काम चलाती हो।
स्वाद–अस्वाद से विरत रह कर,
तुम अद्भुत जीवन बिताती हो।।

ममता दया के फलस्वरूप ही,
एक अलग किस्म की नारी हो।
अन्नपूर्णा की प्रतिमूर्ति,
तुम एक भारतीय नारी हो।।

शिशुओं के लालन–पालन में,
महारत तुमको हासिल है।
कोख से जन्मे शिशुओं की,
हर अदा तुमको मालूम है।।

कैसे उन्हें जगाना है,
और कैसे उन्हें सुलाना है।
कैसे उन्हें मनाना है,
और कैसे दूध पिलाना है।।

कब उँगली पकड़कर उसकी,
उसको चलना सिखलाना है।
कब मैदान में ले जाकर के,
उसको खूब दौड़ाना है।।

सीमित साधन में रह कर भी,
उच्च–शिक्षा कैसे दिलवाना है।
मातृत्व की परिभाषा प्रिय,
हमे तुमको नहीं सिखाना है।।

मातृत्व के गुणों से युक्त,
एक अलग किस्म की नारी हो।
जगन्नमाता की प्रतिमूर्ति,
तुम एक भारतीय नारी हो।।

इष्ट तुम्हारा जो भी हो,
उसे भजन व पाठ सुनाती हो।
नित्य नहा धोकर के तुम,
पूजा में दीप जलाती हो।।

श्रद्धा सुमन करती हो भेंट,
तुम नित नये–नये सरीखों से।
दीप जलाती हो विश्वास का,
तुम नित नये–नये तरीकों से।।

दुष्ट, व्यभिचारी पति में भी,
ढूंढ़ लेती हो तुम गुणों को।
कष्ट सह कर भी तुम कैसे,
सहती हो उनके अवगुणों को।।

कैसे देख लेती हो उसमें,
तुम परम सत्य परमेश्वर को।
कण–कण में जो व्याप रहा,
उस परम पिता अखिलेश्वर को।।

हे श्रद्धामयी, भक्ति में डूबी,
एक अलग किस्म की नारी हो।
सती अनुसूईया की प्रतिमूर्ति,
तुम एक भारतीय नारी हो।।

माता हो तुम अभिमन्यु की,
तोड़ दिये जिसने व्यूह के द्वार।
भीष्म जननी हो तुम प्रिय,
उठवा दिये कृष्ण से हथियार।।

कैकेयी हो तुम दशरथ की,
बचा लिये युद्ध में उनके प्राण।
पांचाली हो तुम पाण्डवों की,
मचवा दिये युद्ध में घमासान।।

सती हो तुम प्रिय शंकर की,
कूद गयीं तुम हवनकुंड में।
सीता हो तुम श्रीराम की,
समा गयीं तुम इस धरती में।।

झांसी की रानी वीरांगना,
तुम हो जीजाबाई वीरमाते।
उर्मिला हो तुम लक्ष्मण की,
त्याग–तपस्या में धीर माते।।

शकुन्तला हो तुम दुष्यन्त की,
तुम हो भारत की वीर जननी।
भारतमाता है नाम तुम्हारा,
तुम भारत की धीर जननी।।

वीर–धीर होने के कारण ही,
एक अलग किस्म की नारी हो।
भारतमाता की प्रतिमूर्ति,
तुम एक भारतीय नारी हो।।
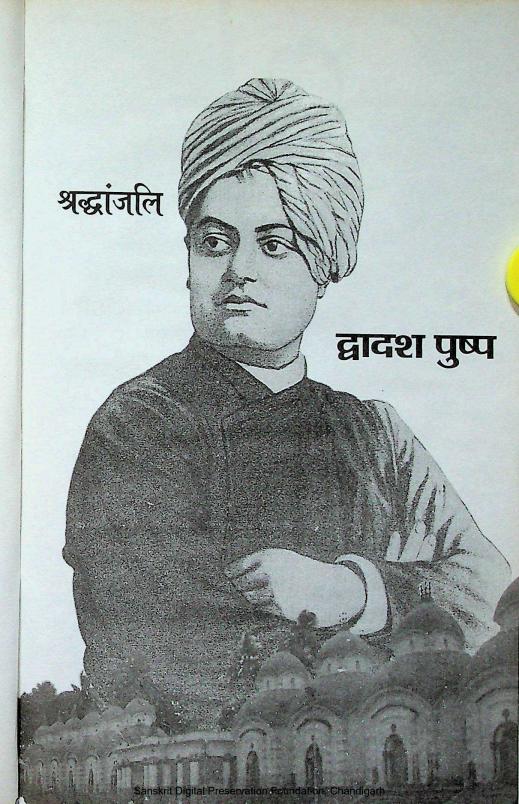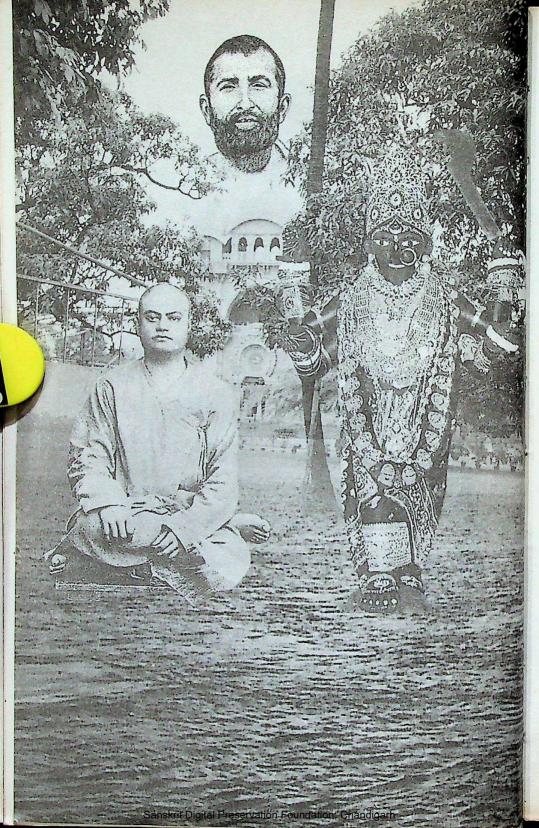
श्रद्धांजलि
द्वादश पुष्प

श्रद्धांजलि (द्वादश पुष्प)

अस्त हो गया अस्ताचल में,
दिनकर दिन भर के पश्चात्।
छा रहा था नभ में अंधेरा,
लड़ रहा था उजाले के साथ।।

छा गया था उदय दिशा में,
अंधेरा आकाश पटल पर।
फिर भी लड़ रहा था उजाला,
अस्त दिशा में अपने बल पर।।

कर रहा था संघर्ष उजाला,
साँझ को अंधेरे के साथ,
अस्तित्व बनाये रखने हेतु,
जूझ रहा था नियति के साथ।।

कौन जानता था ऐसे में,
गुरुदेव रूठ जायेंगे आज।
सन्धिकाल की इस बेला में,
छोड़ जायेंगे सबका साथ।।

रे मन चल तू निज निकेतने,
गा रहे वो आज फिर वही।
सुनकर रो दिये थे जिसको,
प्रथम मिलन में ठाकुर कभी।।

अपने कमरे की खिड़की से,
निहार रहे दक्षिणेश्वर को।
सोच रहे हैं शायद आज,
नरेन्द्र अपने बचपन को।।

बचपन में नरेन्द्र अपने,
वहाँ आया–जाया करते थे।
बैठ ठाकुर के चरणों में,
नित ध्यान लगाया करते थे।।

श्री रामकृष्ण नरेन्द्र से,
कितना प्यार किया करते थे।
श्रीराम भू पर जितना शायद,
भरत को दुलार किया करते थे।।

खुलवा दीं सब द्वार–खिड़कियाँ,
उन्होंने अपने कमरे की।
करने लगे बैठ कर ध्यान,
नरेन्द्र फर्श पर कमरे की।।

बैलूर मठ के अपने कक्ष में,
ध्यानमग्न हैं विवेकानन्द,
देख रहे हैं रामकृष्ण को
ढूंढ़ रहे हैं सच्चिदानन्द।।

कौन जाने किसने उनसे,
ध्यान में क्या कह दिया।
मुसकुराने लगे नरेन्द्र,
जाने क्या कह सुन लिया।।

सहस्त्र कमल दल हो जैसे,
निराकार का पूरा घर है।
श्री रामकृष्ण कहा करते थे,
नरेन्द्र आदि ऋषि "नर" है।।

चार जुलाई, सन् उन्नीस सौ दो,
प्रसिद्ध है दिन ये इतिहास का।
जब विवेकानन्द ने लिया था,
महासमाधि, दिन था शुक्रवार का।।

अमरनाथ में पाया था,
इच्छित मृत्यु का वरदान।
मर न सकते थे नरेन्द्र,
मृत्युंजय थे वो महान।।

रामकृष्ण कहा करते थे,
जान जायेगा जब नरेन्द्र।
कौन है वो आया कहाँ से,
तब रुक न पायेगा नरेन्द्र।।

समाप्त हो गया खेल विधि का,
रचा था जिसे खुद विधना ने।
छोड़ दिया जिस्म स्वामी का,
वरण किया था जिसे खुद उसने।।

उड़ गया आकाश में नीले,
बन्द था पंछी जो पिंजड़े में।
फूट गयी तनरूपी झाँझरी,
मिल गया जल जलाशय में।।

सीमा में था बद्ध जीव जो,
बन्धन तोड़ अनन्त हो गया।
जीवात्म रूप था जो अब तक,
परमात्म रूप में लय हो गया।।

अन्तरिक्ष में उड़ गया हंस,
अनन्त यात्रा के पग पर।
छोड़ हम सबको अकेला,
चला गया ईश के पथ पर।।

व्याप रहा था जो घट में,
अब सर्वव्यापी हो गया।
अब तक था केवल घट में,
अब घट-घट वासी हो गया।।

नहीं सोया जीवनपर्यन्त,
अब जीवन खत्म कर सो गया ।
पूर्ण कर काज जानकी का,
वो विक्रम बजरंगी हो गया ।।

आदिशक्ति त्रिपुरसुन्दरी ने,
निज लाल को गोद में उठा लिया।
भुवनेश्वरी छिन्नमस्ता ने,
जग से अपना आँचल हटा लिया।।

थक कर अनवरत कर्म से कोई,
सो गया नींद में जैसे कोई ।
नेता था धर्म जगत का जो,
जग से विदा हो गया वही ।।

विश्व विजेता था नरेन्द्र,
विश्व को छोड़कर चला गया ।
सबका चहेता था नरेन्द्र,
सबको छोड़कर चला गया ।।

ओ महात्मना इस युग के,
तुम्हें शान्ति में विश्राम मिले ।
गले लगाया सबको तुमने,
तुमको अद्‌भुत सम्मान मिले ।।

पूर्ण हो जायेंगी सभी,
कामनायें अन्तर हृदय की।
स्वयं सिद्ध है यह गाथा,
महाकाली दक्षिणेश्वर की॥